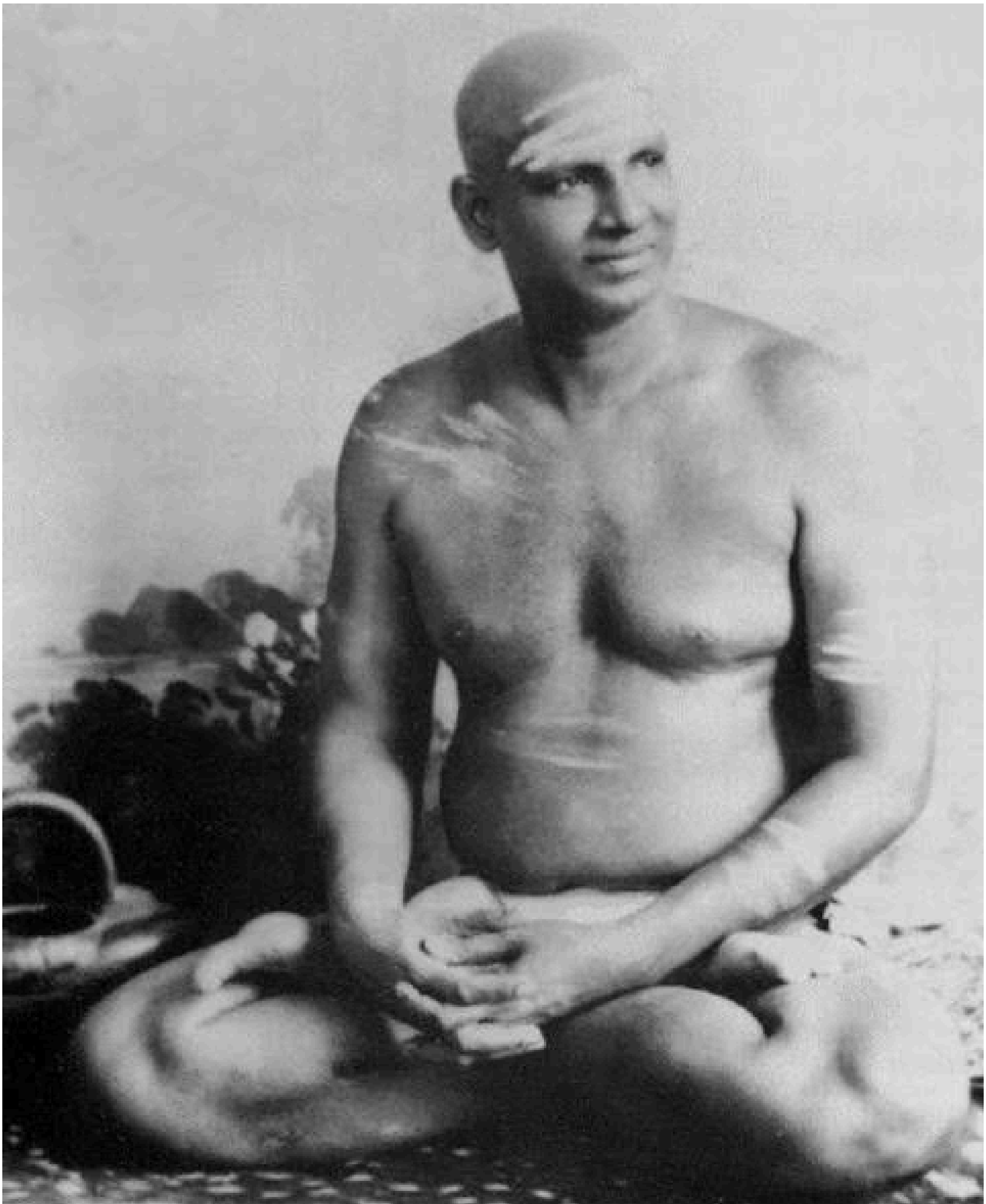


भारत रत्न से सम्मानित

## डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन



# भारत की अन्तरात्मा

# भारत की अन्तरात्मा

## डॉ. सर्पवल्ली राधाकृष्णन् ◌्

अनुर्ादक

वश्र्म्भरनाथ त्रिपाठी

ग्रामोदय प्रकाशन, ददल्ली -110032

| | |
|---|---|
| ISBN | :978-93-80773-29-2 |
| सर्ाधवधकार | : सुरक्षित |
| प्रकाशक | : ग्रामोदय प्रकाशन<br>511/2, पाडांर् रोड, वर्श्ास नगर ददल्ली -110032 |
| प्रथम सस्ांकरण | : 2022 |
| मूल्य | : 350.00 |
| आर्ण | : मनोज पडांडत |
| मुद्रक | : आर० के० ऑफसेट, ददल्ली<br>-110032 |

# प्राक्कक्कथन

डॉ. श्री राधाकृष्णन् की अग्रोंजी-पुस्तक Freedom And Culture का दहन्दी रूपान्तर 'स्तिांता और सस्ांकृतत' नाम सेककया था। दहन्दी-पाठकों ने उसे ◌ेबहुत पसन्द ककया है ऐसा प्रतीत होता है, क्कयोंकक इस थोडे ◌ेकाल में ही उसका प्रथम सस्ांकरण प्रायः समाप्त हो गया है। अतः दहन्दी-भार्ी पाठकों के सम्मुख उनकी अमर लेखनी सेतनसृतृ एक और ग्रन्थ-रल का रूपान्तर करने को प्रोत्सादहत हुआ हूां।

प्रस्तुत पुस्तक Heart of Hindusthan नामक अग्रोंजी पुस्तक का दहन्दी अनुर्ाद है। इसमें भारतीय सस्ांकृत के मूल आधारों का, उसकी अन्तरात्मा का सक्षांप्ति ककन्तु स्पष्ट वर्ेचेन है। वर्द्ान् ◌्लेखक ने भभन्न-भभन्न अर्सरों पर हमारी सस्ांकृतत के माभमकव स्थलों का जो स्पष्टीकरण वर्भभन्न लेखों में ककया है, यह उनका ही सग्रांह है। इन्हें पढ़कर हमें भारत की सभ्यता के प्रमुख भसद्धान्तों का ही केर्ल ज्ञान नही ◌ांहोता प्रत्युत् ◌्एक सरस, लोकोत्तर आनन्ददातयनी सादहत्त्यक रचना के पाठ का सुख भी भमलता है। आशा एर्ां वर्श्र्ास है कक वर्ज्ञ एर् ◌ां सहृदय पाठक इसका भी स्र्ागत 'स्तिांता और सस्ांकृतत' के समान ही करेंगे।'

**- -विश्म्भिरनाथ त्रिपाठी**

## विषय-सूची

# दहन्दू–धम वकी अन्तरात्मा

इस तनबन्ध में म ैंदहन्दू–धम वके मुख्य-मुख्य अगों का र्णनवमा कर देना चाहता हूं त्जससे संिप में दहन्दुओ ंके वर्भभन्न दाशतवनक सम्प्रदाओंका, उनकी धाभमकव अनुभूतत का, उनके आचरणशास्िएर् ंवश्र्ास-परम्परा का, ययायय ददग्दशनव हो जाय, उसकी र्ालत करना अथर्ा उसके समथनव में कुछ कहना हमें अभीष्ट नही।ं

## दार्नशनक आधार

तकव-प्रेम दहन्दू–धम वकी वर्शेर्ता है। भारतीय वर्द्र्ान अपनी स्त्प्नल आशाओं एर् ंव्याहाररक आत्म-वर्सजनव में, सरलतम दुराग्रह एर् ंउच्चतम काल्पतनक उडान में, चार-पाचं हजार र्् वके अनर्रत दाशतवनक एर् ंधाभमकव प्रयत्न में, सत्य-भत्क्कत तथा यथाथ वप्रेम की भार्ना से प्रेररत होकर चरम समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करते ेरहे हैंइसे ेब्राह्मण-सभ्यता कहते ेहैं, क्कयोंकक इसका सचंालन उन ब्राह्मणों के हाथ में था जो ककसी बात का तनणयव करतेसमय मनः िोमों सेवर्चभलत नहीं होते ेथेएर् ंत्जनके भसद्धान्तों की आधार-भशला सच्ची अनुभूतत होती थी।

जगत की त्जस वर्शेर्ता ने दहन्दू–दाशतवनकों को सत्य के अनुसन्धान की ओर आकृष्ट ककया, र् है इसकी अतनत्यता। उन्होंने देखा कक दृश्य-जगत् ्वर्रामहीन पररर्तनव का भशकार है। उन्होंने प्रश्न ककया-क्कया यह अतनत्यता, वर्नश्र्रता ही चरम-सत्य है अथर्ा इस वर्नाश की भी कोई सीमा कही ंहै? उन्हें उत्तर भमला-जगत में एक ऐसी र्स्तु भी है जो तनत्य है, र् है अवर्नाशी, अन्य-अपेिा-रदहत परब्रह्म । हम सबके जीर्न में ऐसेिण आते ेहैं जब इस अनन्तता की अनुभूतत हम करते ेहैं, जब हमें इस महान् ्रहस्य का आभास भमलता है और जब हम उस परमात्मा के सात्न्नध्य का बोध करते ेहैं जो अपनी महत्ता से हमें आच्छन्न ककए है। जीर्न की उन शोकपूण वघडडयों में भी जब हमें प्रतीत होता है कक हम एकान्त, दीन, परम अनाथ हैं, हमारे हृदय में त्स्थत परमात्मका हमें बराबर यह अनुभर् कराता है कक ये सासांररक दुुःख-दैन्य तो उस बडेनाटक की शुद्र घटनाए–ंमाि हैं त्जसका अन्त शत्क्कत, सौन्दय वएर् ंप्रेस में हे नाटक र्् वधचल्ला-धचल्लाकर कहते ेहैं- "यदद इस वर्श्र् में आनन्द न होता तो यहांकोई जीर्न प्राण-धारण ही कैसे ेकरता?" तात्वर्क दृत्ष्ट से देखनेपर यह व्यक्कत जगत उसी एक अवर्भक्कत ब्रह्म की नाना रूपों में अभभव्यत्क्कत है, उस ब्रह्म की अभभव्यत्क्कत जो समस्त सृत्ष्ट का तनत्य आधार एर् ंपृष्ठभूभम है। धाभमकव दृत्ष्ट सेदेखनेपर यह परमेश्र्र की आत्म-चेतना बन जाता है जो समस्त सृत्ष्ट के उद्भर् तथा लय से युक्कत है। उसके सम्पूण वदीघ वजीर्न में एकेश्र्र ही दहन्दू–धम वका प्रमुख आदश वरहा है। ऋग्र्ेद उस एक ही परमात्मा की बात करता है-एकम् ्सत्–त्जसका र्णनव पडंडत लोग नाना रूपों में ककया करते ेहैं। उपतनर्दों का कहना है कक अभभव्यत्क्कत के स्तर के अनुसार एक ही ब्रह्म को भभन्न-भभन्न नामों से अभभदहत ककया जाता है। त्रिमूतत वकी कल्पना का उदय महाकाव्यकाल में हुआ और पुराण काल तक र् भली भातंत

 प्रततत्ष्ठत हो गई। मानर्-चेतना के ज्ञान, मनःाभि एर्ांचेष्टा व्यजांक तीन गुणों का ही सूचक सत्–्

धचत्–्आनन्द

परमात्मा का नाम रखा गया है। सत्र् अथर्ा ज्ञानजात अव्यग्रता, रजस् ्अथर्ा ई शत्क्कत जो उत्साह से उत्पन्न होती है, तमस् ्अथर्ा ई शैधथल्य जो ज्ञान अथर्ा सयांम के अभार् का फल है-यही रे् तीन गुण हैं जो समस्त सृतृष्ट में पाये जाते ेहैं और सर्-वर्स्तु-व्यापक इन तीनों गुणों से ईश्र्र भी मुक्कत नहींसमझा जाता। सृतृष्ट, त्स्थतत एर् ांलय की तीनों कियाएां रजस्,् सत्र् एर् ांतमस् ्के ही कारण होती हैं। वर्श्र् के रिक वर्ष्णु परमात्मा का ही सत्र्-प्रधान रूप हैं। सृतृष्टकता वब्रह्म उसी ईश्र्र के रजःप्रधान, एर् ांसृतृष्ट-सहाांरक भशर् उसी ईश्र्र के तमःप्रधान रूप के द्योतक हैं। एक ही ईश्र्र के तीन गुणों को वर्कभसत करके तीन भभन्न-भभन्न व्यत्क्कत बना ददयेगए हैं। और इनमें से प्रत्येक अपनी ही वर्भशष्ट शत्क्कत से काय वकरता है, अतएर् ब्रह्मा, वर्ष्णु एर् ांभशर् के ही समान सरस्र्ती, लक्ष्मी तथा उनकी शत्क्कतयों की कल्पना कर ली गई। सच तो यह है कक ये सभी गुण एर् ांकाय वएक ही परमात्मा में इस प्रकार साम्यार्स्था में त्स्थत हैं कक यह भी कहा जा सकता है कक उसमें कोई गुण ही नहींहै, ई तनगुण वहै।[1] एक ही अज्ञेय ईश्र्र, जो सर्वर्द्, सर्व्वयापक एर् ांसर्शवत्क्कतमान् ्है। नाना जनों को नाना प्रकार का प्रतीत होता है ।[2] एक प्राचीन धमर्वाक्कय का कथन है कक साधकों की सुवर्धा के भलए ही तनराकार परमात्मा को साकार कत्ल्पत कर भलया गया है।

दाशतवनक मनोर्वृत्त का जो सहज गुण उदार मतत है, उसी की प्रेरणा से अनुयातययों की सामान्य प्रर्वृत्त के अनुसार दहन्दू ूलोग सम्प्रदायों की आपेक्षिकता में वर्श्र्ास करते ेहैं। धम वतो अव्यक्कत-सम्बन्धी कोई भसद्धान्तमिा नहींहै त्जसे जब चाहा मानने लगेऔर जब इच्छा बदली तो दूर् हटा ददया। ई तो जातत के आध्यात्त्मक अनुभर्ों का प्रकटरूप है, उसके सामात्जक वर्कास का इततहास है, एक समाज वर्शेर् का अवर्च्छेद्य घटकार्यर् है। भभन्न-भभन्न लोग भभन्न-भभन्न धमों के अनुयायी बनें, यह तो त्रबलकुल स्र्ाभावर्क ही है। धम वतो अपनेरुभार् एर् ांरुधच का प्रश्न है- 'रुधचनाम् ्रै्धचत्र्यात्।्' जब आय वलोग यहाांके उन मूल तनर्ाभसयों से भमले ेजो भाताांत-भाताांत के देर्ताओांकी पूजा करते ेथे, तो उन्होंनेएकाएक उनके मतों को दबा देनेकी बात नही ांसोची। आखखर सभी लोग उसी एक परमत्मा की तलाश में हैं। भगतद्गीता का कथन है कक यदद कोई उपासक भगर्ान् ्के श्रेष्ठतम स्र्रूप तक नहींभी पहुांच सका है तो भी रे् उसकी प्राथनवा अस्र्ीकार नहींकरते। एक मत को परर्त्याग कर शीघ्रतापूर्कव दूसूरे को अगीीकार करनेकी कोभशश में हम अतीत से बहुत दूर् जा पडते ेहैं, फलतः अव्यर्स्था एर् ांअनर्स्था का सामना करना पडता है।

ससाांर के महान् ्उपदेशक, त्जन्हें इततहास का यथेष्ठ ज्ञान है, अपनेवर्चारों को उन लोगों पर जबरन लादकर जो न तो उन्हें समझतेही हैं और न पसन्द ही करते ेहैं, अपनी ही पीढ़ी में ससाांर का सुधार कर डालनेका प्रयास नहींकरते। वर्र्ाह-वर्च्छेद के भलए सर्ोच्च आदश वकी दृत्ष्ट से त्जतना कुछ चादहए, मूसा ने यहूददयों से

---

[1] रजोगुणः स्मृतो ब्रह्मा, वर्ष्णुः सत्र् गुणात्मकः ।
तमो गुण स्तथा रुद्रो, तनगुणवः परमेश्र्रः ॥

[2] तुलना करो-बाइत्रबल-साम-18-25, 26

 उससेकम को ही न्यायतः पाकर सन्तोर् कर भलया और ईसा-जैसे ◌ेकठोर आचरण-शास्त्री ने भी पयायव से उसका

समथनव ककया। ई इसीभलए कक लोगों के हृदय सख्त, सुधार-वर्रोधी होते ◌ेहैं। (10.11....), लूक (16.18) के दृढ़ आग्रह से युक्कत शब्दों को देखखए और कफर मैथ्यू (5.32 एर् ◌ां14.9) के अपर्ाद-र्ाक्कयों की ओर ध्यान दीत्जए। दहन्दू–दाशतवनक यद्यवप स्र्यां परमोच्च आदश वका पालन करतेथे; ककन्तु कफर भी उन्हें पता था कक जनसाधारण उसके भलए तैयार नहीांहैं और इसभलए बडी सार्धानी सेरे् उनका वर्कास करने में लग गये, उन पर बबरव बल-प्रयोग नही ◌ांककया। अज्ञान के कारण त्जन तनम्न श्रे्णी के देर्ताओांके लोक में उपासना हो रही थी, उन्हें भी उन लोगों ने स्र्ीकार कर भलया। केर्ल इतना कहा कक रे् सब उसी एक परम महान् ◌्ईश्र्र के अधीन हैं।[3] 'कुछ लोगों के देर्ता जल में, कुछ के स्र्ग वमें, कुछ के साांसाररक पदाथों में पाये जाते ◌ेहैं, पर वर्द्र्ान् ◌्अपने सच्चे परमात्मा को, त्जसकी महत्ता सर्त्र् प्रकट हो रही है, अपनी आत्मा में ही पाते ◌ेहैं।' एक और श्लोक है- 'कमशवील व्यत्क्कत का ईश्र्र अत्ग्न में, भारुक का भगर्ान् ◌्हृदय में, मन्द बुद्धध का मूतत वमें एर् ◌ांज्ञानी का परमात्मा सर्त्र् ही तनर्ास करता है।[4] दहन्दू–धम वतथा दशनव मानता है कक समय-समय पर आने र्ाले सृत्ष्ट एर्ां प्रलय के चि उस एक ही वर्श्र्-हृदय के स्फुरण तथा सकोचन के प्रतीक है जो सदा ही तनत्ष्ियि तथा सदा ही सकिय रहता है। समस्त ससाांर ईश्र्र का व्यक्कत स्र्रूप है। सायण का कहना है कक समस्त पदाथ वपरमात्मा के अवर्भार्व के उपाधेयमिा है।[5] ये पदाथ वभभन्न र्गों में वर्भक्कत ककये गए हैं। इनमें से ज सासां लेतेहैंर्े श्रे्ष्ठ हैं; उनमें भी रे् श्रे्ष्ठ हैंत्जनके मत्स्तष्क वर्कभसत हैं; उनम् ◌्रे् श्रे्ष्ठ हैं जो ज्ञान का प्रयोग करते ◌ेहैं और सर्श्रे्ष्ठ रे् हैं त्जन्होंने प्राखणमिा में ब्रह्म की एकता का अनुभर् कर भलया है ।[6] एक ही मूल आत्मा इन नान रूपों में अभभयुक्कत हो रही है।

मनुष्य के भीतर जो अनन्त है ई सान्त ससाांर के नाशमान् ◌्रूप सन्तुष्ट नहीांहोता। हमारे दुुःखों का कारण यह है कक हम अपने भीतर ईश्र् को नही ◌ांदेख पाते। हममें जो सान्त एर् ◌ांअतनत्य है यदद हम उससे बचे ◌रह सक तो मुत्क्कत पा सकते हैं। जीर्न में त्जतना ही अधधक हम अपनेभीतर त्स्थ अनन्त को व्यक्कत कर सकेंगे,◌े पदाथों की श्रे्णी में हमारा स्थान उतना ही उच्च होगा। बहुुत प्रबल अभभव्यत्क्कतयाां ही अर्तार कहलाती हैं। अर्तार क अद्भुत, चमत्कारपूण वईश्र्र का ससाांर में प्रकट होना नहीांहै, रे् तो उसी मह शत्क्कत की उच्च अभभव्यत्क्कतयाां मिा हैं त्जनका सामान्य अभभव्यत्क्कतयों से केर्ल मिाा में भेद है। गीता का र्चन है कक यद्यवप ईश्र्र सभी में है पर ई वर्शेर् रूप में उसी पदाथ वमें व्यक्कत होता है त्जसमें महत्ता पाई जाती है। ऋवर्, बुद्ध,

---

3 अप्सु देर्ा मनुष्याणा,◌ां ददवर् देर्ा मनीवर्णाम्।◌्
र्ाताना काष्टलोष्टेर्ु,◌ु बुद्ुधास्त्र्ात्मतन देर्ताः ॥

4 अग्नी कृत्यर्तो देर्ो, हृदद देर्ो मनीवर्णाम्।◌्
प्रततभास्र्ोल्पल बुद्धीनाम्,◌् ज्ञाततननाांसर्तवः भशर्ः ॥
(देखखए भगर्ानदास र्ैददक धम,व उसमें अनेक उपयुक्कत उद्धरण भमलेंगे।)

5 परमात्मनः सर्ऽववप पदाथााःव आवर्भार्वोपाधेयाः ।

6 मनु

पैगम्बर, ईसा आदद उसी वर्श्र्ात्मा की प्रबल अभभव्यत्क्कतयों हैं। गीता का कहना है कक आर्श्यकता पडनेपर रे्
सदा ही प्रकट होती रहेंगी। हमारे जीर्न में जब पतन की ओर ले जानेर्ाली भौततक मनोर्वृत्त की प्रबलता होती है
तो धम वका पुनः ससं्थापन करनेके भलए कोई राम अथर्ा कृष्ण, बुद्ध अथर्ा ईसा हमारे बीच अर्श्य आ जाता है।
इन पुरुर्ों में, जो इत्न्द्रयों पर वर्जय पा लेते हैं, जो प्रेम को सर्वि त्रबखेर देते ेहैं और जो हममें सत्य एर् ंधम वके प्रतत
स्नेह भर देते ेहैं-ईश्र्र की शत्क्कत घनीभूत हो गई है। रे् हमें सच्चे माग,व जीर्न तथा सत्य का दशनव कराते हैं। रे्
अपनी अन्ध-पूजा भी नहीं करनेदेते,े क्कयोंकक उससे आत्मसािात्कार में कुछ बाधा पडती है। रामचन्द्रजी ने अपने
को साधारण मनुष्य सेअधधक कहकर नहींप्रचाररत ककया- 'आत्मानम् ्मानुर्म् ्मन्ये, राम दशरथात्मजम्'् ।
त्जस दहन्दू ूको अपनेधम वका कुछ भी ज्ञान है, र्ह उन सबकी श्रद्धा और भत्क्कत करता है जो लोक-कल्याण में
लगेहैं। उसका वर्श्र्ास है कक ईश्र्र ककसी भी मनुष्य के रूप में अर्तररत हो सकता है जैसे ेईसा और बुद्ध में हुआ
था। यदद ईसाई इस बात को मान लें कक त्रबना ईसा की मध्यस्थता के भी मनुष्य को मुत्क्कत भमल सकती है तथा
ईश्र्र-सािात्कार हो सकता है, तो ईसाई धम वके आधारभूत भसद्धान्तों को दहन्दू ूसहर् वस्र्ीकार कर लेगा। ईश्र्र
की अभभव्यत्क्कत सेमनुष्य के व्यत्क्कतत्र् का उल्लघंन नहीं होता प्रत्युत् ्र्ह तो मनुष्य के नैसधगकव आत्मप्रकाशन
का उच्चतम स्र्रूप है, क्कयोंकक मनुष्य का सच्चा रूप तो अलौककक ही है। मानर्-अत्स्तत्र् में अन्ततनदवहत अनन्त
की िभमक अभभव्यत्क्कत ही जीर्न का चरम उद्देश्य है। इसकी सामान्य गतत नैततक कारणता अथर्ा कम-व
वर्पाक के भसद्धान्त पर तनभरव है। दहन्दू-ूधम वएक ऐसेपरमात्मा में वर्श्र्ास नहींकरता जो अपनेभसहांसन पर
बैठा-बैठा प्रत्येक व्यत्क्कत को जाचंता है और तब उसके सम्बन्ध में उधचत तनणयव देता है। दूरू बैठकर मनमानी
नीतत से ककसी के दण्ड में र्दृ्धध करके तथा ककसी में कमी करके र्ह न्याय का वर्धान नहींककया करता । ईश्र्र
मनुष्य में ही है, अतएर् कम-ववर्पाक का भसद्धान्त उसके भलए सर्थवा स्र्ाभावर्क है। प्रत्येक िण मनुष्य की
परीिा हो रही है। उसका प्रत्येक तनश्छल प्रयत्न उसके अनन्त प्रयास में सहायक होगा। हम त्जस स्र्भार् का
सृजन करते ेहैं र्ह आगे ेभी तब तक बना रहेगा जब तक कक हम परमात्मा के साथ अपने तादात्म्य का अनुभर्
नहींकर लेते। हम उस परमात्मा की सन्तान हैं त्जसके भलए एक हजार र्र् वएक ददन के बराबर हैं। अतः यदद एक
जीर्न में पूणतवा न भी प्राप्त हो सके तो हमें हताश नहीं होना चादहए। सभी दहन्दू ूपुनजन्वम मानते ेहैं। ससंार का
अत्स्तत्र् हमारी गलततयों के कारण है। सृष्ट-चि के चलते ेरहने के कारण हमारे रे् ही गत जीर्न हुआ करते ेहैं
त्जनके भलए पुनजन्वम आर्श्यक है। भूत में असख्ंय बार वर्श्र् की सृत्ष्ट एर् ंसहंार हो चुका है और भवर्ष्य में
अनन्तकाल तक बराबर इसी प्रकार उसका उद्भर् तथा लय होता रहेगा।

## धाभमकव अनुभूतत

धम वयह प्रयत्न करता है कक मनुष्य को अपने देर्त्र् का ज्ञान करा दे, केर्ल कोरा बौद्धधक ज्ञान देकर
नहीं; ककन्तु उससे तादात्म्य की अनुभूतत कराकर । इस अनुभूतत के भलए ककसी वर्भशष्ट माग वका तनदेश नही ं
ककया जा सकता। मनुष्य की आत्मा अनन्त-स्र्भार् है; अतः उसकी शत्क्कत-सम्भार्नाए ंभी अनन्त हैं। उसका
ज्ञेय परमात्मा भी उसी भातंत अनन्त है। असीम पररत्स्थतत के प्रतत अनन्त आत्मा की प्रततकियाए ंसीभमत नही ं
की जा सकती।ं दहन्दू-दाशतवनकों का वर्श्र्ास है कक अनन्तरूप जीर्न को थोडे-से बधें ेहुए रूपों में समेटकर नही ं

रखा जा सकता। एक सुप्रभसद्ध ग्रन्थ का र्चन है- 'त्जस प्रकार आकाश में उडनेर्ाली धचडडया ांतथा समुद्र में तैरने र्ाली मछभलया ांअपनेमाग वमें कोई धचन्ह नही ांछोडती, ां ठीक रै्से ही भगर्त्प्रात्प्त के पथ पर आत्म-सािात्कार-रभसक अग्रसर होते ेहैं।[7] उपतनर्दों के ऋवर्यों ने, यहूदी पैगम्बरों ने तथा धम-वसस्ांथापकों ने परमात्मा का शब्द सुना है, उसके सात्न्नध्य की अनुभूतत की है। ईश्र्र अपने भक्क्तों के प्रतत सदा ही न्यायपूण,व पिपातरदहत व्यर्हार करता है; रे् उसे ेचाहे त्जस नाम से पुकारें एर् ांउसकी उपासना के भलए चाहे त्जस सरखण का उपयोग करें। गीता में भगर्ान् ्का र्चन है- 'जो कोई त्जस ककसी रूप में मेरे पास आता है, म ैंउसी रूप में अर्श्य उसको भमलता हूां।'

मानर्-चेतना के त्रिवर्धधरूप के आधार पर ज्ञान-माग,व भत्क्क्त-माग वएर् ांकम-वमाग वके वर्भाग ककये गये हैं। ज्ञान, अनुभूतत तथा चेष्टा कोई तीन भभन्न-भभन्न शत्क्क्तया ांनहीांहैं, रे् तो एक ही अनुभर् के तीन दृत्ष्टकोण है। तीनों ही अपना-अपना अांश उसकी पूतत वमें देते ेहैं एर् ांसभी एक-दूसूरे में व्याप्त है। सम्यक ज्ञान, सम्र्क इच्छा, सभ्यकिया-ये तीनों की एक साथ रहते ेहैं। पहला हमें सत्य का दशनव कराता है, दूसूरा उसमें अनुराग उत्पन्न कराता है एर्ांतीसरा हमें जीर्न की रचना में लगाता है। भार्ना की उष्णता से हीन कोरा ज्ञात हृदय को दहम के समान शीतल कर देता है। ज्ञान से प्रकाभशत कोरी भारुकता पागलपन है। त्जस कम वको ज्ञान का पथ-प्रदशनव तथा स्नेह की स्फूतत वनहीांभमलती, उसे ेअथहवीन सस्ांकार-पद्धतत अथर्ा उन्मुक्क्त चचांलता ही समझाना चादहए। पूण व जीर्न की सत्ांश्लष्ट अनुभूतत में तीनों ही सत्म्मभलत हैं। भभन्न-भभन्न पुरुर् भभन्न-भभन्न अगों पर वर्शेर् बल देते े हैं, अतएर् जीर्न-समस्या को रे् भभन्न-भभन्न मागों से सुलझानेका प्रयास करते ेहैं।

गीता का र्चन है कक 'ज्ञान के सम्मान पूतत-ववर्धायक और कुछ नहीांहै। यह ज्ञान उसी वर्र्ेचना का नाम है त्जसेयथाथ वआत्मज्ञानी सनत्कुमार तथा शुष्क पात्ण्डत्य के प्रतततनधध नारद के उपतनर्त्प्रभसद्ध शास्िाथ वमें कोरी बकर्ास कहकर उडा ददया गया है। मनुष्य की मूल प्रकृतत तो आत्मस्र्ातत्र्ांय एर् ांज्ञान है। अपनी पररत्च्छन्नता के कारण हम अपनेसत्य-स्र्रूप से अनभभज्ञ रहकर भ्रम में पडेरहते ेहैं। तकवशास्ि का मुख्य काय व यह बताना नहीांकक मनुष्य को ज्ञान क्क्यों अथर्ा कैसे ेहोता है, र्रन् ्यह बताना है कक ई क्क्यों अथर्ा कैसे ेज्ञान-प्रकिया में असफल होता है। भूल का कारण हमारा सीभमतत ज्ञान है। सत्य का प्रत्यि करके इन सीमाओांको ध्र्स्त करना ही मानभसक वर्कास कहलाता है। भार् अथर्ा सकोंत पर तनभरव न रहने र्ाला यह ज्ञान सत्य में ही तनर्ास करता है। वर्चार एर्ां तकव ज्ञान की प्रात्प्त में सहायक हो सकते ेहैं। गीता युत्क्क्तपूण वआन्तररक सूझ पर जोर देती है-ज्ञानम् ्वर्ज्ञान सदहतम्।् बौद्धधक सहारे के त्रबना सम्भर् है हमारी आन्तररक सूझ व्यत्क्क्तगत भारुकता ही रह जाय। इस रिक र्ाक्क्य में गीतकार का यह सकोंत पाया जाता है कक सत्य की प्रत्यिानुभूतत में सार्भवौभमकता रहती है। यह प्रत्यिानुभूतत हमें वर्नम्रता की भार्ना से प्राप्त हो सकती है। यदद हम बौद्धधक अहांकार का पररत्याग कर दें तथा त्जज्ञासु भार् को अपना लें, तो स्र्गीय र्ायु के झोंके हम तक पहुांच सकते ह।ैं

[7] इस सम्बन्ध में हमारे 'भारतीय दशनव' नामक ग्रन्थ का गीता-वर्र्यक अध्याय देखखये।

 योगाभ्यास मन को इस योग्य बनाता है कक ई आभ्यन्तररक तनस्तब्धता के गम्भीर घोर् को सुन सके। तब हम
अपनी आत्मा से, वर्श्र्आत्मा से तादात्म्य का अनुभर् कर सकते ेहैं।

ईश्र्र-सिाात्कार के भलए ज्ञान-माग वबहुत ही मन्द गतत एर् ांकष्टपूण वहै। 'इस समस्त वर्श्र् के रचतयता एर् ांवपता को प्राप्त करना बहुत कदठन है तथा उसे ेपाकर सबको बताना तो असम्भर् ही है।[8] हमारी आयुइतनी छोटी होती है एर् ांअन्र्ेर्ण की गतत इतनी धीमी। हम खाली बैठकर प्रतीिा नहींांकर सकते। हमें जाननेकी जल्दी है। हम ककसी ऐसेधम वको स्र्ीकार कर लेना चाहते हैं जो हमारे जीर्न का सहारा बन सके, जो सन्देह-भार्ना से हमारी रिा कर सके एर् ांव्यार्हाररक जीर्न में हमारा सहायक हो सके। ईश्र्र-सिाात्कार के भलए लोगों की अधीनता उन नीम-हकीमों को अपना जाल त्रबछानेका मौका देती है जो अपनेअनुयातययों की अल्प काल में ही मोि प्राप्त करा देने का र्ादा ककया करते ेहैं। अन्धवर्श्र्ास तथा जादू ूजनसाधारण का सम्बल बन गया है। ब्राह्मण-व्यर्स्था में बुद्धध का पूण वपररत्याग ककसी दशा में भी नहींांककया गया है। सत्य की भार्ना ही लोक-जीर्न का तनयन्त्रण करती है। ऊांचे-से-ऊांचे दाशतवनक सत्य को साधारण बुद्धध के मनुष्यों की समझ में अपने योग्य कथा-कहातनयों का रूप दे ददया गया है त्जससे े'सभी सुगमतापूर्कव जीर्न के कदठन स्थलों को पार कर जायां, सभी आनन्द प्राप्त कर सकें, सभी सम्यक् ज्ञान की उपलत्ब्ध कर सकें एर् ांसभी सर्त्र सुख-भोग कर सकें ।[9] पुराणों के उपाख्यान मन्द-बुद्धध पुरुर्ों को चरम कल्याण का ज्ञान देकर उसमें उनकी रुधच उत्पन्न करते ेहैं तथा उनके आत्म-वर्कास में सहायता प्रदान करते ेहैं।

उपासना के त्जतने रूप देश में प्रचभलत थे, दहन्दू–ूदाशतवनकों ने उन सबको ही स्र्ीकार कर भलया तथा उन्हें इस प्रकार िमबद्ध कर ददया कक र्े िमशः ईश्र्राराधन के श्रेष्ठतम रूप तक पहुांच जायें, उस रूप तक पहुांच जायेंजो ईश्र्र के तनकट साहचय वकी अनुभूतत का अभ्यास करता है। भशशु-पुराण में भलखा है- 'उत्तमार्स्था तो सहजार्स्था है, दूसरी श्रेणी की अर्स्था ध्यान एर् ांधारणा है; तृतीय अर्स्था प्रततमा-पूजन है तथा चतुथ वअर्स्था तीथयविाा तथा होम इत्यादद करनेकी है।[10] ऋग्र्ेद में मूतत-वपूजा का नाम तक नहींांपाया जाला। अतः स्पष्ट है कक इसका प्रचार बाद में हुआ। सभी मानते ेहैं कक अधधकभसत मत्स्तष्क-मनुष्यों के भलए ही इसकी उद्भार्ना हुई है। मनुष्य में आददम युग के, सभ्यता-पूर्कवाल के अनेक धचन्ह अब भी पाये जाते ेहैं। ई ईश्र्र की कल्पना रांग-त्रबरांगे े धचिों के रूप में करना पसन्द करता है। ई अपनेमनोभार्ों को कला एर् ांसकोंतों के द्र्ारा ही व्यक्कत कर सकता है। र्े सत्य को व्यक्कत करने के भलए ककतने ही अपयाप्वत क्कयों न हों, जब तक मनुष्यों के आत्म-सिाात्कार में

---

[8] प्लोटो-दटभमयस-29

[9] सर्स्र्ततरतु दुगुाखवण, सर्ो भद्राखण पश्यतुां
सर्स्र्तद् बुद्धधमाप्रोतु, सर्स्र्सर्तव नन्दतु-भागर्त पुराण।
त्स्पनोजा के कथन से ेतुलना कीत्जए- 'परम कल्याण सार्जवनीन है तथा उसकी प्रात्प्त सबको समानरूप से होना चादहए।'

[10] उत्तमा सहजार्स्था, द्वर्तीया ध्यान धारणा ।
तृतीय प्रततमा-पूजा, होम यािा चतुधथकवा ॥

सहायक भसद्ध होते ेरहतेहैं, लोग उन्हें सहन करते ेरहते ेहैं। जब तक ई ठीक दृत्ष्ट-कोण को व्यत्जत करता रहता है तब तक ककसी भी प्रतीक को ततरस्कृत नहीांकरना चादहए। प्रोफेसर धगलबटव मरे ने 'ग्रीक धम वकी चार अस्र्थाए ांनामक ग्रन्थ में टापर तनर्ासी मैक्तिषिमस के लेखे का उद्धरण ददया है जो मूतत-वपूजा का बडा ही सुन्दर समथनव है। उस उद्धरण में प्रतीकोपासना के सम्बन्ध में दहन्दू–भार्ना का तनचोड आ गया है- 'उस ईश्र्र की जो सबका सृषूटा तथा वपता है, जो सूय वएर् ांआकाश से प्राचीन है, जो काल, अनन्तता तथा समस्त सत्ता प्रर्ाह से भी महान् ्है, ककसी भी शास्र्ीि कै द्र्ारा व्याख्या नही ांकी जा सकती; ई र्ाणी के द्र्ारा प्रकट नहीांककया जा सकता; आखोंां के द्र्ारा देखा नही ांजा सकता।' अतएर् उसके सच्चे स्र्रूप को समझने में अिम होनेके कारण हम शब्दों की, नामों की हाथीदाता, चादी तथा सोनेसे तनभमतव प्रततमाओां की, र्ृि तथा नददयों की, पर्तव, भशखर तथा तनझरवों की सहायता लेते हैं एर् ांउसके ज्ञान की तीव्र त्जज्ञासा हृदय में लेकर ससांार में जहा ांभी जो कुछ देखते ेहैं उसी को उसका रूप कहकर प्रचार करनेलगतेहैं, ठीक र्ैसेही जैसेलौकिकक प्रेमी। प्रेमी की दृत्ष्ट में ससांार का सुन्दरतम पदाथ वउसकी प्रेभमका ही है; ककन्तु उसकी स्मृतृत जगाने की िमता रखने ेके कारण ई र्ीणा, माला, कुरसी, िडाभूभम अथर्ा ककसी भी अन्य स्मृतृत-धचन्ह को देखकर आनन्द से भर उठता है। अधधक वर्ेचना करके प्रततमाओांके वर्र्य में कोई तनणयव करने के झमेले में हम क्कयों पडे! आर्श्यकता तो केर्ल इस बात की है कक मनुष्य को ईश्र्र के स्र्रूप को ज्ञान हो जाय और बस । यदद ग्रीक को कफडडयस की कला, भमस्र-तनर्ासी को पशु-पूजा ककसी को आग एर् ांककसी को नदी ही ईश्र्र का स्मरण कराती है तो उनकी इस भभन्नता से नाराज होने की क्कया जरूरत। आर्श्यकता तो केर्ल इस बात की है कक र्े भगर्ान् ्को जानें, उसमें अनुरक्कत हों और उसको कभी न भूलें।[11] ककतने सत्य, उदार एर् ांकोमल शब्द हैं पर उत्साहहीन, दुराग्रह एर् ांसाम्प्रदातयक प्रर्चांना की ही बातें सुनते रहने के अभ्यासी हमारे कानों में ये कुछ खटकतेसे हैं। यदद हम प्रततमा की लािखणकता को भुला दें और रूपक को अिरशः सत्य मान लें तो हमारे त्जज्ञास्य परमात्मा का ठीक उल्टा रूप हमारे सामनेआयेगा। वर्चारशील भारतर्ासी यह कभी नहीांभूलता कक मूतत-वपूजा केर्ल साधन है। योगी भगर्ान् ्का दशनव आत्मा में करता है, प्रततभाओ ांमें नही।ां[12]

तनम्नकोदट की उपासना को आर्श्यक मानकर, उसी प्रकार जैसे ेभशशुओ ांके भलए दूध एर् ांप्रौढ़ों के भलए मासां-भोजन की व्यर्स्था की जाती है, दहन्दू–धम वने एक ऐसे धाभमकव र्ातार्रण का वर्कास ककया है, त्जसमें एक ओर सर्ोच्च दाशतवनक ज्ञान पाया जाता है और प्रतीकोपासना का यह वर्धान त्जसको केन्द्र मानकर महान् ् कलापूण वसौंदय वकी सृत्ष्ट की गई है। उसमें भभन्न-भभन्न सास्ांकृततक वर्कास एर् ांधाभमकव ज्ञान से युक्कत मनुष्यों की सभी श्र्ेखणयों के भलए सामान्य बाह्य साधना का प्रबन्ध भी है। प्रौढ़ हो जानेसे यदद हमें खखलौनों की जरूरत नहीांरह गई तो इसीभलए खखलौने तोडकर बच्चों का जी दुखुाने में बुद्धधमानी नही।ां

11 पृषूठ 136-137

12 भशर्मात्मतन पश्यत्न्त प्रततमासु न योधगनः

भारुक पुरुर् ईश्र्र का पूण वसौन्दय वअथर्ा प्रेम मानते ेहैंतथा उसके साहचयजवतनत आनन्द में डूब जाने की कामना करते ेहैं। प्रेम तथा सौन्दय वरूपी भगर्ान् ्के प्रतीक कृष्ण हैं एर् ांसहृदय-स्पशी लोक गीत है- 'उसकी शाी बुला रही है, मुझे ेजाना ही होगा। यद्यवप गहन कांटकाकीण वबन में होकर जाना है कफर भी म ैंअश्र्य जाऊांगी।' जब अनुल्लघ्ांय आज्ञा भमलती है तो कोई भी सहृदय व्यत्क्कत कैसे ेउसकी अर्हेलना कर सकता है! सौन्दयप्रेवमी को प्रबल भारुकता में ही पूण वसन्तोर् प्राप्त हो जाता है। सौन्दय वका अत्स्तत्र् की सौन्दय वका समथनव है। भक्कत तो भगर्ान् ्के चरणों में लोट जाता है और ससाांर का कोई आकर्णव उसे ेर्हा ांसे हटाने ेकी िमता नही ां

तुम्हारे। चुम्बकों को पकड़े ेहैंयामहीं, अब म ैंउन्हें छोडूगांा नही.ां...म ैंतुम्हें नहींांछोडूगांा, चाहे तुम सारा ससाांर मुझे ेबदले ेमें क्कयों न दे दो।' चैतन्य का कहना है- 'म ैंधन नही ांमागांता, जन नहीांमागांता, सुन्दर त्स्यिाांअथर्ा काव्य-प्रततभा नहीांमागांता। हे ससाांर के प्रभो। म ैंतो केर्ल यही चाहता हूां कक प्रत्येक जन्म में म ैंतुम्हारा भत्क्कत पाता रहूां।' दहन्दू–दाशतवनक ने सदा यह प्रयत्न ककया है कक तनमलव चररि का अभ्यास एर् ांसत्य-प्रेम धाभमकव भत्क्कत से दब न जाय।ें उन्हें अच्छी तरह मालूम है कक हमारी भार्नाए ांशेर् जीर्न से अलग अन्य अपेिारदहत नहीांहो सकती।ां अलग से देखने ेपर उनका कोई नैततक महवर् नही।ां ककसी भी भार्ना को महवर् तो उसकी मूल प्रेरणा पर तनभरव करता है, हमें यह देखना होता है कक ई उच्च आध्यात्त्मक भत्क्कत का फल है अथर्ा नीच वर्र्य-र्ासना का पररणाम। भत्क्कत-माग वका यह भसद्धान्त नहीांहै कक सभी भार्नाएांपवरि् होती हैं। सच्ची धाभमकव भत्क्कत तो उस वर्र्के-जात वर्नम्रता को कहते ेहैंजो सब कुछ ईश्र्र के सहारे छोड देनेपर उत्पन्न होती है। ज्ञान-सूचक इस भार्ना के फलस्र्रूप भक्कत मानर्सेर्ा में जीर्न उत्सग वकर देता है। उपासना, सगीीत एर् ां कला भत्क्कत के वर्कासक हैं।

कमयवोगी कम वअथर्ा स्र्कतव्वय पालन करके तथा यि अथर्ा समाजसेर्ा करके मोि-लाभ करने का प्रयास करता है। स्र्तन्िता मनुष्य का स्र्ाभावर्क गुण है; आत्म-ज्ञान के अर्रुद्ध होने से बन्धन उत्पन्न होते े हैं। जब हम अपनी दासता को ही प्यार करने लगें तो समझना चादहए कक हमारी दासता पराकाष्ठा को पहुांच चुकी है। शेर् ससाांर सेसम्बन्ध वर्च्छेद करने र्ाली स्र्ाथ-वप्राचीर को यदद हम तोड सकें तथा उदात्त आदश वको अपना सकें, तो हम िमशः उस प्रेम का वर्कास कर सकते ेहैं जो भय, घृणा एर् ांकटुता का वर्नाश करता है। यिां कक तरह नीतत-धम वका पालन करने माि से हम अपनेलक्ष्य तक नहीांपहुांच सकते। उस नीतत को ईश्र्रानुभूतत का पुत्ष्टकर भोजन देकर सशक्कत बनाना होगा। तभी हमें इस बात का अनुभर् होगा कक प्रत्येक मनुष्य में केन्द्रीय सूय वके अमर प्रकाश की ककरण वर्द्यमान है। जब हम ककसी से प्रेम करते ेहैं तो परमात्मातवर् में अपनी तथा उसकी एकता का ज्ञान हमें होता है और उसी ज्ञान को अपने जीर्न में हम कियात्मक रूप देते ेहैं। अब हम दहन्दू– धम वकी दूसूरी वर्शेर्ता उसकी नैततकता की ओर आते ेहैं।

## नैनिकिा

नैततक आचरण का भसद्धान्त को कायात्वन्त करने का उद्देश्य यह है कक उसे अपनी शत्क्कतयों का पता चल जाय एर्ांअतीत के बधांन तथा भवर्ष्य के भयों से मुक्कत होकर ई आत्म-वर्श्र्ास की दृढ़ता से खडा रह सके।

ऐदहक जीर्न का प्रत्येक िण मधुर प्रेम की भार्ना तथा ईश्र्र के धचर सम्बन्ध की आनन्ददातयनी चेतना में त्रबताना ही नैततक आचरण है। आदश वपुरुर् सदैर् स्र्गीय प्रकाश में जीर्न-यापन करता है एर् ांसत्य, शुधचता, प्रेम तथा आत्मवर्सजनव के महान् ्गुण उसके जीर्न में मूतरूवप धारण करते ेहैं। प्राकृततक शत्क्कतयों पर मनुष्य की वर्जय से नहीीर्न् ्र्ासनाओां के तनरोध सेही उसकी नैततक उन्नतत को जाचांना चादहए। गोभलयों की बौछार में भी सच बोलना, शूली पर चढ़ा ददयेजानेपर भी प्रततदहसाां से वर्रत होना, मनुष्य तथा पशु सभी का सम्मान करना, सर्स्र्र् दान कर देना, परोपकार में जीर्न उत्सग वकर देना, अत्याचार को अवर्चभलत भार् से सहन करना आदद मनुष्य के प्रधान कतव्वय हैं। हमारे आधुतनक व्यार्हाररक सुधार भले ही उन्हें यह कहकर उडा दें कक रे् ऊांची बातें हैं और मनुष्य-प्रकृतत के दैतनक उपयोग के अयोग्य हैं; बुद्धधहीन भारतीयों अथर्ा 'गैलीली' के धीर्रों को सन्तोर् देनेके भलए रे् प्रशसांनीय आदश वहो सकते हैं, पर उनको व्यार्हाररक रूप देना असम्भर् है। दहन्दू– दाशतवनक जानते ेथे ेकक सामान्य लोक-प्रकृतत एर् ांनैततक आदश वमें महान् ्अन्तर है अतएर् उन्होंने भशिा एर् ां अभ्यास की एक ऐसी व्यर्स्था बना दी जो मनुष्य को इस लक्ष्य की प्राप्त्त के भलए तैयार कर सके। सस्ांथाओांएर् ां सस्ांकारों का जाल, जो लोगों के चररि एर् ांनैततक भार्नाओां को वर्कभसत करता है, 'धम'व कहलाता है और र्ह दहन्दू–धम वका एक वर्शेर् अ ांग है। दहन्दू ूधम वककसी को बलपूर्कव ककसी मत वर्शेर् में दीक्षित करने में वर्श्र्ास नहीांकरता, पर सभी दहन्दुओु ांके व्यर्स्था मानकर चलनेपर अर्श्य जोर देता है। उसेधम वकी अपेिा सस्ांकृतत कहना अधधक उपयुक्कत होगा। 'यदद तुम 'धम'व का पालन करोगे, तो तुम्हें भसद्धान्त अथर्ा सत्य का ज्ञान स्र्तः हो जाएगा।' यह 'धम'व । प्रत्येक व्यत्क्कत के हृदय में त्स्थत मृगप्राय अत्ग्न को प्रज्र्भलत करने में सहायक होता है। लोक-हृदय से अनुमोददत आचार-शास्ि ही र्ह 'धम'व है। ककसी व्यत्क्कत वर्शेर् का मन इसका वर्धान नहीांकरता; अतः यह र्ैयत्क्कतक नहीांकहा जा सकता; कानून इसे ेमाननेको वर्र्श नहीांकरता, अतः यह बाह्य भी नहीांकहला सकता। यह तो र्ह आचार-व्यर्स्था है, त्जसका अनुमोदन लोकमत अथर्ा जन-साधारण का हृदय करता है। जमनव इसे ेSittlichkeit करते ेहैं। 'कफष्टे' ने इसकी पररभार्ा इस प्रकार की है- 'आचरण सम्बन्धी रे् तनयम को लोगों से पारस्पररक व्यर्हार को तनयिावत करते ेहैं एर् ांजो हमारी सस्ांकृतत की र्तमवान दशा में आदत अथर्ा दूसूरी प्रकृतत हैं. इसीभलए हमारे अचेतेन मत्स्तष्क का अ ांग बन गये हैं। 'धम'व ककसी को भी सदाचारी बनने को वर्र्श नहीांकरता, र्ह तो मनुष्यों को सदाचार-पालन का अभ्यास कराता है। र्ह अटल यात्रिक तनयमों का सग्रांह नही ांहै प्रत्युत् ्जीर्नधारी के सदृश है एर् ांसमाज के वर्कास से प्रभावर्त होकर स्र्य ांभी बढ़ता चलता है। भारतर्र् वमें तो राज्य भी धम वका सेर्क होता था। र्ह भी धम वका अततिमण नहीांकर सकता था। उसका काम धम वको बदलना अथर्ा रद्द करना नहीांथा, र्रन् ्उसके पालन की व्यर्स्था करना था। राज-धम वककसी दशा में भी लोगों की जीर्नचया वमें अनुधचत हस्तिेप नहीांकरता था। चार हजार र्र् वसे भी अधधक हो गये जब से भभन्न-भभन्न धाभमकव सम्प्रदायों तथा शािों के पारस्पररक युद्ध एर् ांराजनीततक कलह के बार्जूद भी हमारा 'धम'व अथर्ा सामात्जक जीर्न उन्हीांभसद्धान्तों को मानकर चलता आ रहा है। यदद हम भारतीय जीर्न की सप्राण अवर्त्च्छन्न धारा देखना चाहते हैंतो उसका दशनव हमें उसके राजनीततक इततहास में नही ांर्रन् ्उसके साांस्कृततक तथा सामात्जक जीर्न में ही भमल सकता है। राजनीततमयता का रोग तो उसे ेप्लासी के युद्ध के बाद ही लगा है। आज सम्पूण व जीर्न राजनीतत सेओत-प्रोत है। राज्य का समाज पर आिमण आरम्भ हो गया है और रर्ीन्द्रनाथ के शब्दों में

 'त्रबना राष्ट्रों का भारत' अब पाश्चात्य अथ वमें उसके समस्त गुण-दोर्ों को लेकेर एक 'राष्ट्र' बन जानेके प्रयास में
सलांग्न है।

'धम'व के दो रूप होतेहैं-एक र्ैयैत्क्कतक और दूसूरा सामात्जक । ये दोनों ही अन्योन्याधश्रत हैं। व्यत्क्कत की धम-वभार्ना को एक पथ-प्रदशकव चादहए एर् ांउसे ेयह भसखानेकी आर्श्यकता है कक उसका उद्देश्य क्कया है तथा ककस प्रकार उसे ेइत्न्द्रयों का जीर्न त्यागकर आध्यात्त्मक जीर्न पसन्द करना चादहए। समाज के दहत का भी समानरूप से ध्यान रखना है। सब प्राखणयों को एक सामञ्जस्य-सिू में बाधां रखनेर्ाली शत्क्कत धम वकहलाती है।[13] सामात्जक कल्याण का वर्धान करने र्ाला आचरण ही पुण्य है, इसके प्रततकूल आचरण को पाप कहते ेहैं। प्रायः जोर देकर कहा जाता है कक सबसेबडा पुण्य कम वदूसूरों के साथ र्हीं व्यर्हार करने में है त्जस व्यर्हार की आशा हम दूसूरों से अपनेभलए करते ेहैं। तनत्य कमों में सामात्जक तथा र्ैयत्क्कतक दोनों ही प्रकार के कतव्वयों का समार्ेश कर भलया गया है। तनत्य कम वतनम्नभलखखत हैं-शौचम् ्(शुद्धता), आचरम् ्(भशष्टाचार), पचां महायज्ञ (समाज-सेर्ा) तथा सन्ध्या-र्न्दनम् ्(सन्ध्या तथा उपासना)। र्ैयत्क्कतक जीर्न के अर्स्था-वर्भाग एर् ां सामात्जक र्गों के तनयामक र्णाश्रवम धम वमें इसका वर्स्तृतृ वर्र्ेचन ककया गया है। व्यत्क्कत का लक्ष्य सासांाररक सुख प्रात्प्त उतनी नहीांहै त्जतनी आदश वकी प्रात्प्त अपने उद्देश्य की भसद्ध है। इसकी प्रात्प्त व्यत्क्कत की उस भशिा से ही सम्भर् है त्जसके भलए कष्ट उठाना होगा तथा सयांम का पालन करना होगा। प्रत्येक मनुष्य की आयु को चार आश्रमों में बाटां ददया गया है। पहला आश्रम ब्रह्मचय वहै। इस आश्रम में सयांम, धैयै,व ब्रह्मचय वतथा लोक-सेर्ा की भार्नाए ांबालकों में पररपुष्ट कर दी जाती है। इस तनयम का पालन प्रत्येक व्यत्क्कत को करना पडता है, र्ह चाहे त्जस र्ग वका हो, चाहे धनी हो चाहे तनधनव। दूसूरा आश्रम गृहृस्थाश्रम है। इस आश्रम में आनेपर गृहृस्थ-धम वका पालन करना होता है। अब र्ह व्यत्क्कत ककसी सामात्जक ससांथा का सदस्य बनता है एर् ांउस ससांथा के अधधकार तथा कतव्वय उसे स्र्ीकार करने पडते ेहैं। अपने सहचरों के साथ त्जस बन्धन में हमें बधांना होता है उसके पररणामस्र्रूप मानर्प्रकृतत की कुछ मधुरतम आदतों का वर्कास होता है। इस समय आत्मतनभरवता, भमतव्यतयता एर् ांअततधथसत्कार का अभ्यास करना होता है। गृहृस्थ का सम्मान सबसे अधधक होता है क्कयोंकक र्हीं शेर् तीन आश्रमों का आश्रयदाता है। र्ण-वतनयम इसी आश्रय के भलए मान्य है। तीसरा आश्रम र्ाणप्रस्थ कहलाता है। इस समय व्यत्क्कत को सासांाररक सम्पवत्त से वर्रक्कत होना पडता है, गृहृस्थ-धम-वपालन के पररणामस्र्रूप जो गर् वअथर्ा अहांकार उत्पन्न हो गया है, जैसे ेकुल-गर्,व धन-गर्,व बुद्धध अथर्ा सौभाग्य गर्,व उसका तनरोध करना पडता है तथा सन्ांयास का अभ्यास करना पडता है। जब र्ह उच्च जीर्न के पूणतवः योग्य हो जाता है तो सन्ांयास ले लेता है। सन्ांयासी मनुष्य-जातत का रागरदहत सेर्क होता है जो आत्म-शत्क्कत में ही शात्न्त का अनुभर् करता है। अनन्त से पूण वसामजांस्य स्थावपत हो जाता है और मनुष्य की भशिा का यहीांपर अर्सान हो जाता है।

---

[13] धारणाद धमभवमत्याहुः धमेण र्द्धधताः प्रजा

 ये सन्ांयासी ससाांर को दुखु-दैन्य में पडा छोडकर अलग नही ांहो जाते। उनमें जो परम महान्
्हैं, जैसे ेबुद्ध तथा
शकांर, रामानुज तथा रामानन्द एर् ांऔर भी अनेक, रे् तो राष्ट्र के रक्कत में ही प्रवर्ष्ट हो गये हैं तथा उन्होंनेही
उसके धम वकी स्थापना की है। उनके नाम आज राष्ट्र की सबसे ेबडी पैतृक् सम्पवत्त हैं।

र्ण-वव्यस्र्था का सम्बन्धत्क्कतयों के सामात्जक र् कतों से है। धनुष्य का वर्कास तभी सम्भर् है जब र्ह
सामात्जक व्यस्र्था के ककसी ककन्दु ुवर्शेर् पर ही अपने सम्पूण वव्यत्क्कतत्र् को केत्न्द्रत कर दे। भूकक मनुष्यों में
मानभसक जीर्न के तीन अगों में से ककसी एक की ही वर्भशष्टता पाई जाती है, अतः द्वर्जों को तीन भागों में बाटां
ददया गया है-वर्र्ार-प्रधान, मार्-प्रधान एर् ांकिया-प्रधान। त्जनमें ककसी भी गुण की वर्शेर्ता नहीां, रे् ही शुद्र है।
चारों र्णों की उपमा पदहलों, सैतनकों, औद्योधगकों एर् ांसाधारण मजदूरूों से दी जा सकती है जो सब एक ही सस्ांथा
के सदस्य हैं ऋग्र्ेददक प्राचीन काल में ही पारस्पररक अनुराग में बद्ध चारों र्णों के सूचक भशर, बाहु, कदट एर् ां
जर्ांा के रूपक के द्र्ारा सामात्जक एकता का आदश वव्यक्कत ककया जा चुका था। इस 'सम्पूण'व में प्रत्येक र्ण वका
उधचत स्थान, अधधकार तथा कतव्वय तनत्श्चत कर ददया गया था। कममविा सम्मानपूण वसमझा जाता था; अतः
र्ण-वगर् वअथर्ा ऊांच-नीच की भार्ना को प्रोत्साहन नहीां ददया जाता था। र्ण,व अधधकार का नहीांउत्तरदातयत्र् का
सूचक है। प्रत्येक व्यत्क्कत में सभा गुण वर्द्यमान है, केर्ल भभन्न-भभन्न व्यत्क्कतयों में भभन्न-भभन्न गुणों की
प्रबलता पाई जाती है। अपने कतव्वय का पालन करके हम केर्ल 'सम्पूण'व का ही उपकार नहीांकरते ेप्रत्युत आत्म-
प्रकाशन भी करते ेहैं। प्रत्येक व्यत्क्कत की वर्भशष्ट प्रकृतत उसके कम वमें ही पूणतवः वर्कभसत होती है और र्ह कम व
एक वर्शेर् अथ वमें उसका अपना धम,व स्र्धम वहै।[14]

दहन्दू–ूधम वका आदश वप्रत्येक व्यत्क्कत को ब्राह्मण, प्रत्येक पुरुर् को पैगम्बर बनाना है। तभी उसको
आन्तररक स्र्तन्त्िा एर् ांआध्यात्त्मक साहचय वका आनन्द प्राप्त होता है और तभी र्ह स्र्मेर् दुषुटता का
प्रततकार तथा प्रततदहसांा करना बन्द कर देता है और तब उसमें इतना धैय वएर् ांप्रेम उत्पन्न हो जाता है कक यदद
कोई र्ार करे तो र्ह उसे ेसहन कर सके तथा यदद कोई उसेलूटना चाहे तो खुद ही र्ातांछत र्स्तु को उसे ेअपणव कर
सके। उसका हृदय शात्न्त सेपूण वरहता है त्जसका अथ वहै घृणा का एकान्त वर्नाश । सच्चा ब्राह्मणत्र् मानर्-
शत्क्कत के उच्चतम वर्कास का प्रतीक है। आध्यात्त्मक महत्ता के आधार पर ही समाज में र्ण वकी व्यस्र्था की गई
है। मनुष्य के पखां नहीांहोते;े अतः उडकर भशखर पर जा पहुांचना उसके भलए सम्भर् नहीां, उसे ेतो धीरे-धीरे कार
तथा प्रयास के साथ ऊपर उठनेमें ही सन्तुष्ट होना पडेगा। दहन्दुओु ांकी सामात्जक व्यस्र्था में यही िभमक
योजना स्र्ीकृत हुई है। इस बात की पुत्ष्ट में गोरिा तथा अदहसांा के दो उदारहण दूांगा। 'ककसी जीर् की दहसांा मत
करो।' यही सबसे बडा धम वहै, यही मनुष्य के योग्य धम वहै। प्रत्येक ब्राह्मण के भलए इसका पालन करना अतनर्ाय व
है कफर भी इस व्यस्र्था में ित्रियों का वर्धान है त्जनका धम वहै युद्ध में लोगों को मारना तथा स्र्य ांलडते ेहुए मर
जाना। व्यस्र्था-वर्धायकों का वर्र्ार था कक 'आखां एर्ांदातां के बदले ेमें दातां' लेनेकी भार्ना मानर्-प्रकृतत का

[14] यहाांपर हमनेइस वर्र्य में कुछ नहीांभलखा है कक र्णव-व्यस्र्था का ग्राम-शासन तथा व्यर्साय-सांघ पर क्कया प्रभार् पडता
है तथा इस सस्ांथा के र्तमवान भ्रष्ट रूप को भी छोड ददया है।

 अटल गुण है। उसका तनर्ारण एकाएक नहींककया जा सकता। जहा ांअनाचार को स्ीकार करना अनुधचत है एर् ां
प्रेम के द्रारा उसका प्रततकार सम्भर् नहीां, हा ांबलपूर्कव उसका वर्रोध करना वर्दहत है एर् ांित्रियों से कहा गया है कक शिुओ ांका दमन करना तुम्हारा कतव्वय है। कफर भी यह अधधकार तो मानर्-प्रकृतत पर दया करके ही ददया गया है तथा ित्रियों को बता ददया गया है कक ब्राह्मणों का प्रेम-धम वउनके दहसांा-धम वसे श्रेष्ठ है। ित्रिय वर्कास की तनम्न श्रेणी का द्योतक है, क्कयोंकक ई मनुष्य को केर्ल मासां का वपडां मानता है, उसमें भगर्ान ्की ज्योतत नहींदेखता। उसे ेघृणारदहत भ्रातृभार् से कतव्वय समझकर ही युद्ध करने की आज्ञा है, प्रततदहसांा की भार्ना से 7f - 3H वर्चार से नहींकक इसने हमें दुखु ददया है, अतः हम भी इसे ेदुखु देंगे। यदद ित्रिय इस प्रकार मानर्दहत का ध्यान रखकर अपना कतव्वय करे तो उसकी आध्यात्त्मक उन्नतत होगी और धीरे-धीरे पशुबल पर आधश्रत रहना कम करता हुआ ई अतांतोगत्र्ा ससांार में ककसी भी जीर् की दहसांा न करनेर्ाला ब्राह्मण बन जायेगा। दहसांापूण व युद्ध की आज्ञा दी अर्श्य गई है, पर चरम लक्ष्य तो उसका अततिमण कर जाना ही है। प्रकृतत की धारा के साथ बहनेका उद्देश्य उसे ेपार कर जाना है।

अदहसांा धम वका वर्धान पशु-पक्षियों के भलए भी है। हेतु-शास्ि की दृत्ष्ट से इसका अथ वयह भी है कक हमें तनराभमर् भोजन ही करना चादहए। पशु-पक्षियों की सृत्ष्ट भी ईश्र्र ने ही की है, अतएर् उनके प्रतत भी हमें सदस्य होना चादहए। गाय पशु-जगत ्की प्रतीक है। धाभमकव दहन्दू ूतनत्य भगर्ान ्से प्राथनवा करता है कक गो-ब्राह्मण की रिा हो, गो-ब्राह्मण जो िमशः पशु एर् ांमानर् जगत ्के शारीररक एर् ांआध्यात्त्मक पोर्कों के प्रतीक हैं। गाधीजी ने भलखा है- 'गाय के देर्त्र्-प्रदान का कारण तो स्पष्ट है। भारतर् वमें मनुष्य की सबसे बडी भमि गाय ही थी। उससेही समृद्धधध की प्रात्प्त होती थी। गाय एक करुण काव्य है... ई करोडों भारतर्ाभसयों की माता है। गौ-रिा का अथ वसमस्त मूक सृत्ष्ट की रिा है।[15]' भारतर् वमें कुछ ऐसेलोग भी थेजो पशुओां पर जरा भी दया नही ां ददखाते थे। उनकी आदत में सुधार करना पडा था। मासां-त्यागी तथा खेल अधर्ा भोजन के भलए भी ककसी पशु की दहसांा न करनेर्ाले ब्राह्मण का आदश वलोक-चररि की उन्नतत में काफी सहायक भसद्ध हुआ है। ित्रिय तथा र्ैश्य मुख्यतः शाकाहारी हैं। उत्सर् तथा पर् वके ददन शूद्र भी मासां-भिण नहींकरते। इस प्रकार शाकाहारी-प्रर्ृवृत्त तनत्श्चत रूप से बढ़ रही है। पशुओ ांपर त्रबल्कुल ही दया न करने र्ाले केर्ल 'पचांम' र्णी ही हैं त्जन पर दहन्दू–ूधम व का प्रभार् रांचमाि भी नहीां ददखाई पडता है।

दहन्दू–ूधम वपर यह लाछां न लगाना कक उसनेदभलत र्गों के मानभसक एर् ांचाररत्रिक वर्कास के भलए कुछ भी नही ांककया, प्रकट करता है कक दहन्दू–ूधम वने भारत में जो कुछ ककया है उसके सबांधां में हम त्रबल्कुल ही अज्ञ ह।ैं बौद्ध एर् ांईसाई धम वकी इतनी शतात्ब्दयों के पश्चात ्भी आज जब तक सभ्य जातत ककसी असभ्य जातत के सम्पकव में आती है तो ई उस असस्ांकृत जातत की मनोर्ृवृत्त को समझनेका प्रयास नहीां करती, केर्ल िूर उपायों के द्रारा वर्जय प्राप्त कर उन्हें अपनेअधीन बना लेती है त्जसका पररणाम यह होता है कक यदद उस असभ्य जातत के पास रोने को आखों बच रही ांतो ई ददन-रात रो-रोकर भगर्ान ्को अभभशप्त ककया करती है कक क्कयों उसनेइन सस्ांकारों को उनके देश में भेजा। भारत के आयों ने यहाांके मूल तनर्ाभसयों को भी अपना अांग बना भलया

[15] नर्जीर्न-6 अक्कतूबर ,1921

तथा मभलनता एर् ांमददरापान की आदत छुडाने में, पवरि् जीर्न त्रबताने एर् ांपरमात्मा की भत्क्कत करने में उनकी प्रचुर सहायता की। यह देखकर कक यहा ांके मूल तनर्ासी नागों की पूजा करतेहैं, आयों ने उनसे ेकहा कक नागदेर् से भी महान् ्नागेश्र्र है, र्ह नागों का स्र्ामी कृष्ण है जो काभलय नाग के मस्तक पर नृत्य कर रहा है। समाज को शीघ्रतापूर्कव उच्च आचर की ओर ले जाकर, जो आन्तररक प्रेरणा के त्रबना असम्भर् है, उन्होंनेकोई ऐसा काम नहींककया त्जसके भलए र्े इततहास के प्रतत दहसाां-भाजन बनें। र्ण-वव्यर्स्था के द्र्ारा िभमक सभ्यता-वर्करण का काय वमुसलमानों के आने सेपहले ेतक चलता रहा । भारत-जैसे ेवर्शाल देश में, जहाां यातायात की कोई वर्शेर् सुवर्धा भी नहींथी, जो कुछ भी सफलता भमली र्ह र्ास्तर् में महान् ्है। जेम्स केनेडी भलखते ेहैं- 'इन आददम तनर्ाभसयों अथर्ा अन्त्यजों को दहन्दू ्धम वमें दीक्षित करके उन्हें पचा जाने का भार नर्ीन दहन्दू–धम वपर पडा और ईसा की 7र्ी ांतथा 11र्ी ांशताब्दी के मध्य में यह काम पूरा हो गया। यह काम इतनी कुशलता से ककया गया कक आज इस समस्त उत्तरी भारत में रक्कत, ससांकृतत एर् ांधम वकी दृत्ष्ट से बहुत कुछ एक ही प्रकार की जनता को तनर्ास करते ेदेखते हैंजो अपनी सीमा के उस पार तनर्ास करने र्ाली नीच जाततयों से भली भाताांत पहचानी जा सकती है।'[16] दहन्दू–समाज में वर्देशी बराबर आते ेरहे तथा दहन्दू–धम वइन भभन्न प्रकृतत के लोगों में उच्च जीर्न की स्फूतत वउत्पन्न करने में बराबर सफल रहा है। अगर यह ससांकार-कम वन चलता रहता तो आज भारत में पाचां करोड अछूतों के स्थान में 25 करोड अछूत होते। दहन्दुओंां की राजनीततक पराधीनता के कारण यह काम कुछ मन्दा पड गया है। तभी से दहन्दू–समाज अनुदार रूदढ़र्ादी बन गया है और भारत-तनर्ाभसयों का एक बहुत बडा भाग समाज से दूरू जा पडा है। दूसूरे सम्प्रदाय इस दुबुलवता से लाभ उठाकर उसकी काफी हातन कर रहे हैं।

## परम्परा

सभी दहन्दू ्र्ेदों को सर्ोपरर धाभमकव प्रमाण स्र्ीकार करते ेहैं। उनमें जीर्न तथा वर्श्र् के तवर् का तनरूपण है। र्ेदों का प्रधान अगां उपतनर्द् हैं जो उस स्र्तांि आध्यात्त्मक प्रगतत का पररणाम हैं त्जसनेअज्ञातरूप से र्ेदों के अपररष्कृत अशांों को दबा ददया। दहन्दू–धम वका परर्ती इततहास इसी औपतनर्ददक सुदृढ़ आधार पर तनभमतव एक भव्य भर्न का इततहास । यद्यवप धाभमकव वर्चारों ने अनेक िाांतया ांकी, अनेक बार महान् ्वर्जय ें प्राप्त की,ां कफर भी लगभग पाचां हजार र्र्ों सेउसके मुख्य भसद्धान्त उसी रूप में चले आ रहे हैं। जब-जब दुराग्रह के वर्कास ने धम वको सकीणं वसाम्प्रदातयकता में अर्रुद्ध कर ददया है तब-तब सच्चे महात्माओंने जन्म लेकर आध्यात्त्मक नर्-जागरण का उपदेश ददया है। उपतनर्दों का प्रर्ाह जब दुराग्रहपूण ववर्र्ाद में लुप्त हो गया, जब शुष्क शास्िाथ वके ज्र्र ने धाभमकव चेतना को बेसुध कर ददया, तब भगर्ान् ्बुद्ध ने सत्य की सरलता एर् ांआचरण की वर्शुद्धता पर जोर ददया। जब शास्िीय ससांकृतत एर्ांतनरथकव पात्ण्डत्य ने धम वको अमानुवर्क शास्िर्ाद बनाकर इस दुबोध व्यथतवा में तनष्णात् ्पत्ण्डतों की हास्यास्पद अहांकार से भर ददया था, सम्भर्तः तभी, यद्यवप देश के दूसूरे भाग में, गीताकार ने सभी पवरि्-हृदय मनुष्यों के भलए स्र्ग-वद्र्ार उन्मुक्कत कर ददया। भारतीय धम व का जो ससांकार शकांर ने ककया था र्ह अब भी सर्थवा शत्क्कतहीन नहींहुआ है। रामानुज तथा माधर्, कबीर तथा

[16] इम्पीररयल गजदटयर-भाग 2, अध्याय 8

नानक दहन्दू–ूधम वपर अभमट छाप छोड गए हैं। यह स्पष्ट है कक दहन्दू–ूधम वएक प्रणाली है, पररणाम नहीां; एक र्द्धवमान परम्परा है, अटल ददव्य-प्रकाशन नही।ां ककसी ओर से भी आनेर्ाले ज्ञान पर इसनेकोई प्रततबन्ध नहीां लगाया, क्कयोंकक आत्मराज्य में मेरे और तेरे का भेद नहीां है।

## दहन्दू–ूधम व

आयों के भारत में प्रर्ेश करने के ददन से आज तक गम्भीर जातीय एर् ांधाभमकव वर्प्लर्ों की तनरन्तर सामना करते ेरहने का गौरर् अथर्ा दुभाग्वय भारत का सदा ही रहा है। एक वर्शेर् अथ वमें भारतर्् वससांार का एक छोटा सस्ांकरण है। र्ह एक प्रयोगशाला है जहा ांससांार की समस्याओ ांसे सम्बत्न्धत जातीय अथर्ा धाभमकव सर्ांलेर्ण के प्रयोग ककये जाते ेहैं। यदद र्ह ठीक है कक प्रत्येक जातत की एक वर्शेर्ता होती है और र्ह ईश्र्राभभव्यत्क्कत के ककसी वर्शेर् रूप को ही हमारे सम्मुख उपत्स्थत करती है, तो मालूम होता है जातीय एर् ां धाभमकव सघांर्ों का समाधान करनेके भलए ही भारत चुना गया है।

दहन्दू–ूधम वकी प्रचडां तरांगों तथा शातां जल-राभश के लम्बे ेइततहास में इस सररता की र्् गततयों एर् ां वर्स्तृत बालुकापूण वतटों में एक सामान्य रू्त्त को, एक आध्यात्त्मक उद्देश्य को खोज लेना सम्भर् है जो तनत्य पररर्तनवशील रूपों के भीतर भी त्स्थर रहा है। प्राचीन दहन्दू–ूधम वके मुख्य भसद्धान्त मृत सीप नहीांहैं प्रत्युत् ्

 जीवर्त शत्क्कतया ांहैं जो सामथ्य वएर् ांलिाखणकता से पूण वहैं। यदद ऐसा न भी हो तो भी उस दहन्दू–ूधम वके
भसद्धान्तों को समझना मनोरांजन सेखाली नहींांहै, त्जसके मानने र्ाले इस समय बीस करोड हैं।

'धम'व शब्द का अथ वकाफी जदटल है। यह उन सभी आदशों तथा उद्देश्यों को, प्रभार्ों तथा सस्ांथाओ ांको व्यक्कत करता है जो मनुष्य के व्यत्क्कतगत एर् ांसामात्जक चररि का तनमाणव करते ेहैं। यह उस आचार-शास्िका नाम है त्जसके पालन से ऐदहक सुख तथा मोि, दोनों की ही प्रात्प्त होती है।[17] यह आचारशास्ितथा धम वदोनों का समुच्चय है। 'धम'व तनयमों सेदहन्दू–ूजीर्न पूणतवः तनयत्रांित है। उसके उपर्ास तथा उत्सर्, उसके पाररर्ाररक तथा सामात्जक बधांन, उसकी रुधच तथा रुभार्-सबका मूलाधार धम वही है।

मानर् जीर्न का लक्ष्य मोि है। आत्म-भशखर पर चढ़कर अमरत्र् लाभ करना मनुष्य के भलए तनत्श्चत है। हम देर्-सन्तान-अमृतस्य पुिाः- हैं। मानर्-हृदय का अमर स्र्प्न जीर्न की आत्मज्ञान के भलए तीव्र उत्कण्ठा ही दहन्दू–ूधम वका आधार है। र्ह मानता है कक आत्मा ही अत्न्तम सत्य है। हृदय की सब कामनाय,ें न्याय के सारे वर्र्ाद, आत्मा के अत्स्तत्र् को मानकर ही चलते ेहैं। इसेतकव के द्र्ारा भसद्ध नहीं ककया जा सकता, यद्यवप इसके त्रबना प्रमाण की ही सम्भार्ना नहींांहो सकती। यह केर्ल श्रद्धा का भी वर्र्य नहीं है क्कयोंकक यह र्ही श्रद्धा है जो तकव का भी मूल है। यदद मनुष्य की आत्मा के सम्बन्ध में भी सन्देह सम्भर् है तो सन्देह ही ससांार से भमट जाएगा। यदद कुछ भी है तो आत्मा भी है। यह र्ह चरम सत्य है जो परररतनव से परे है, र्ह अदृष्ट र्ास्तवर्कता है जो समस्त जीर्न एर् ांतकव का आधार है। 'हम है' यह एक ऐसा सत्य है त्जसकी तुलना में हमारे वर्चारों का कोई महत्र् नहीं।ां मनुष्य की र्े दुबुलवताए ांही, जो उसके माग वमें बाधक होती हैं, उसके भय का कारण बनती हैं; र्ह अन्धकार है जो अन्तर के प्रकाश को तछपाये है। यदद हम अपने जीर्न के एकमाि तनत्श्चत त्रबन्दु ुअपनी आत्मा की शरण में पहुांच जाए ांतो हम अनुभर् करेंगे ेकक ससांार-रूपी अन्तहीन प्रतीत होनेर्ाले पथ में हम अकेले ेनहींांहैं और तब हम ससांार पर वर्जय पा सकते हैं तथा मृत्युको ललकार सकते हैं। 'जो तुम्हारे भीतर है, र्ह उससेबडा है जो ससांार में है।[18]

यद्यवप सम्पूण वप्रयत्न का उद्देश्य मनुष्य की आध्यात्त्मक पूणतवा है, पर दहन्दू–ूधम वककसी भी धाभमकव वर्श्र्ास अथर्ा उपासना के फलस्र्रूप पर जोर नही ांदेता। भगर्ान् ्की प्राथनवा करने अथर्ा उस तक पहुांचनेके माग-वचयन में लोगों को पूण वस्र्तन्िता है। दहन्दू–ूवर्द्र्ान् ्मानर्-जातत-वर्द्र्ान तथा दशनव के पत्ण्डत थे,े अतएर् उन्होंनेधाभमकव वर्श्र्ास के सम्बन्ध में कभी बल प्रयोग नहींांकरना चाहा । धम-वसम्बन्धी शिु ुअथर्ा मनोमाभलन्य तभी शुरू होता है जब हम ईश्र्र-सम्बन्धी अपनी कल्पना को वर्शेर् महत्र् देनेलगतेहैं। इसके अततररक्कत धम वस्र्तन्िता का समथकव है एर् ांमनुष्य पर सबसेबडा अत्याचार यही है कक हम उसे ेसमझ में न आनेर्ाली बात में वर्श्र्ास करनेको वर्र्श करें। दूसूरे, व्यत्क्कत तथा ईश्र्र के सम्बन्ध का र्गीकरण बहुत कदठन है। मनुष्य के हृदय अपने रक्कत से अपनी भत्क्कत-पद्धतत का रूप अकांकत करता है। एक सस्ांकृतत का श्लोक है-

---

17 अभ्युदय तथा तनश्रे्रेयश

18 जान 5-21

'त्जस प्रकार पिी आकाश में उडते ेसमय और मछभलयाां समुद्र में तैरते ेसमय अपनेपीछे कोई धचन्ह नहीांछोडती, र्ही दशा भगर्द्भक्कत की है।' ईसा ने ददव्य जीर्न के रहस्य के सीभमत मानर्-हृदय में व्यक्कत होनेकी बात कही थी- 'हर्ा जहा ांचाहती है, जाती है; तुम उसका शब्द तो सुनतेहो पर यह नहीांबता सकते कक र्ह कहा ांसे आई है और ककधर जायेगी; ठीक यही हाल भगर्ान् ्के भक्कतों को है।' ईश्र्र अपनेको कभी तो त्रबजली की चमक में और कभी हृदय के स्पन्द में प्रकट कराता है। जो दहन्दू ूअपनेधम वके भार् को समझता है र्ह सभी धमों का सम्मान करता है। बोलपुर में रर्ीन्द्रनाथ के स्कूल में एक तनराकार परमात्मा की उपासना की जाती है, पर दूसूरे मतों की तनन्दा करने का र्हाां तनर्ेध है। धम वके मामले ेमें महात्माजी बहुुत उदार हैं। ब्राह्मण-दाशतवनकों का अन्य धमों के प्रतत क्कया भार् है, यह बताते ेहुुए वर्ल्सन भलखता है- 'र्ारेन हेत्स्टांग्स की आज्ञा से दहन्दू–ूवर्धान-सदांहता का सकांलन करने र्ाले पत्ण्डत अपनेकाम का आरम्भ इस भूभमका से करतेहैं कक सब प्रकार की धाभमकव पूजा से समान पुण्य की प्रात्प्त होती है। र्े कहतेहैं कक वर्रोधी वर्श्र्ास एर् ांधाभमकव रै्म्य इस वर्श्र्-योजना के अ ांग हैं, क्कयोंकक जैसे े धचिकार ककसी धचि को सुन्दर बनाने के भलए उसमें भातांत-भातांत के रांग भरता है, अथर्ा माली वर्वर्ध प्रकार के पुष्पों से र्ादटका को सजाता है, रै्सेही ईश्र्र ने प्रत्येक जन-समुदाय के भलए वर्भशष्ट धम वतनयत कर ददया है, त्जससे ेप्रत्येक व्यत्क्कत अपनी पद्धतत सेउसका यशोगान कर सके और चूकांक सबका उद्देश्य एक ही है अतएर् भगर्ान् ्को र्े सब एक समान वप्रय है।[19]

इसका यह अथ वकदावप नहीांहै कक दहन्दू ूदाशतवनकों को ईश्र्र को सम्यक् ज्ञान नहीांहै तथा र्े सब धमों को समानरूप से ठीक मानतेहैं। उन्हें ऊांचे-से-ऊांचे सत्य का यथाथ वअनुभर् है, यद्यवप र्े यह नहीांचाहते कक सब उनके ही अनुभर् को स्र्ीकार कर ले। उनका ख्याल है कक यदद मत्स्तष्क ससुांकृत है तो सत्य का प्रत्यि स्र्तः हो जायेगा। प्रत्येक धम वअपने अनुयातययों के मानभसक एर् ांसामात्जक वर्कास का प्रकाश होता है, इसभलए उपलब्ध मतों के स्थान में त्रबलकुल नये मतों को स्थावपत करना धृष्ूटतापूण वहै। तनम्न श्र्ेणी के वर्चार बढ़ती हुुई वर्र्ेचेना के सम्मुख ठहर नहीांसकते तथा सच्चा सुधारक मनुष्य की मानभसक एर् ांचाररत्रिक उन्नतत करने का यत्न करता है। सत्य का ज्ञान धाभमकव वर्श्र्ास का पररणाम नहीांहोता र्रन् ्गम्भीर नैततक आचरण का अनुभर् होता है। इसीभलए दहन्दू–ूदाशतवनक भसद्धान्त की अपेिा आचार को अधधक महवर् देते ेहै। दहन्दुओुां के धम वको धमशवास्ि कहकर जीर्न-योजना कहना ही अधधक उपयुक्कत होगा। कोई दृढ़ दहन्दू ूहै अथर्ा नहीां, यह बात इस पर इतना नहीां तनभरव करती कक र्ह ककसी वर्शेर् भसद्धान्त को मानता है अथर्ा नहीां, त्जतना इस बात पर कक र्ह 'धम'व को मानकर चलता है कक नही।ां[20]

ईश्र्र के अत्स्तत्र् में दृढ़ वर्श्र्ास होनेसे जो आचरण स्र्भार्तः होनेलगता है, धम वउसी को जीर्न का आदश वबनाने की आज्ञा देता है। यदद सबसे बडा सत्य यही है कक ईश्र्र मनुष्य के हृदय में तनर्ास करता है तो इस वर्श्र्ास को कायात्वन्त करनेर्ाला आचरण ही आदश वआचरण होगा। भभन्न-भभन्न | सद्गुुण सत्य के ही

---

[19] एच.एच.वर्ल्सन - 'लेख तथा व्याख्यान', भाग 2, पृषूठ 8

[20] मनुस्मृतृत 2, 2

वर्भभन्न रूप (सत्याकारा:) हैं।[21] सत्य, सौन्दय वएर् ांशील आदश वपुरुर् के जीर्न के लिण हैं, उसका आर्श्यक अांग है। ई आत्मत्याग, वर्नम्रता, र्ात्सल्य एर् ांपवर्ति्रा आदद सदगुणों का व्यक्कत स्रूप ही होगा। बासना पर आत्मा की वर्जय होनेसे घृणा् के मेघ एर् ांवर्रय् की कुांजर्ादटका वर्नष्ट हो जाती है और उसका हृदय शात्न्त से भर उठता है और तब महान् ्सकांट के अर्सरों पर, व्यत्क्कतगत हातन अथर्ा सामात्जक सकांट में भी ई वर्चभलत नहीांहोता। शान्त धचत्त, दृढ़ तनश्चय तथा प्रमादरदहत दृत्ष्ट से ई समयोधचत व्यर्हार ककया करता है। ई ककसी एक देश का नहीांप्रत्युत् ्सच्चे अथ वमें ससाांर का नागररक बन जाता है। शत्क्कत की इच्छा एर् ांअहांकार उत्पन्न करने र्ाले रजोगुण तथा आलस्य एर् ांतनत्ष््यिताजनक तमोगुण पर आनन्द एर् ांप्रेमे व्यजांक सत्र्गुण का प्राधान्य हो जाता है। महात्मा के धम वअन्तप्रेरणा बन जाता है; दूसूरों के भलए ई बाह्य-तनयिांण है, सामात्जक रीतत अथर्ा लोक-मत का अनुरोध है।

जो आदश वहमें िोध एर् ांमिो से बचनेको कहता है, मनसा, र्ाचा, कमणवा पवरि् बनने को कहता है, ई पाप एर् ांदु:ख सेपूण वजीर्न के थपेडों से व्यग्र मानर् के भलए असम्भर् आदश वहै। ई जीर्न से ऐसी चीज मागांता है त्जसका देना जीर्न के भलए सम्भर् नही।ां ई जीर्न के समस्त आधारों को नष्ट कर देना चाहता है। यदद मिो के भलए सर्स्र्-त्याग आर्श्यक है तो बहुत-से लोग मिो के वर्चार को ही त्याग देंगे। ससाांर का कुछ ऐसा तनयम है कक जो आध्यात्त्मक मयादवा का पालन करना चाहते हैं, उनके सफलता भमलने की आशा बहुत कम ही होती है। हम सभी जानते ेहैं कक 'पर्तव के उपदेश' को ककस प्रकार असम्भर् आदश वकहकर उडा ददया जाता है। हम हमेशा एक गाल पर थप्पड खाकर मारनेर्ाले की ओर दूसूरा गाल दूसूरा थप्पड खाने ेके भलए नही ांफेर सकते, जब हमारा अनुभर् है कक दोनों गालों पर चपत लगाने की इच्छा में प्रबल आकर्णव है। कष्टों में भी आनन्द का अनुभर् करना ददव्य गुण हो सकता है; पर मनुष्य तो बडा दुबुलव प्राणी है। ईसाई-ससाांर तो यह कहकर सताोर् कर लेता है कक ईसा भी एक-आध बार दु:ख से व्याकुल हो उठे थे- 'हे वपता! यदद सम्भर् हो तो इस वर् के प्याले को हटा लो।' 'हे भगर्ान्!् आपनेहमारी सुध क्कयों त्रबसार दी?' र्े लोग, त्जन्हें अपनी व्यार्हाररकता पर गर् वहै, आदश वको सामान्य मानर्-स्र्भार् का रूप दे देना चाहते हैं, उसे ेप्रभुता एर्ांलोभ, र्ासना तथा पाप के अधीन बना देना चाहते हैं। आधुतनक सासांाररक सुधारक कहता है- 'तुमने प्राचीन उपदेशकों को यह कहते ेसुना है कक 'दहसांा मत करो', पर म ैं तुमसे कहता हूां कक 'भोजन के भलए पशु, भशकार के भलए पिी तथा युद्ध में मनुष्यों को छोडकर तुम ककसी को दहसांा न करना।' कहा गया है-'लालच न करो।' पर मेरा आदेश है कक 'तुम बडेपैमाने पर उद्योग और साम्राज्यर्ाद को छोडकर और कही ांलालच मत करना।' तुमनेपुराने लोगों को यह भी कहते ेसुना है कक 'घृणा् मत करो' म ैंतुमसे कहता हूां कक 'तुम वपछडी हुई जाततयों, अपने शिुओ ांतथा तनबलवों को छोडकर अन्य ककसी से भी घृणा् न करना ।' उस त्यागपूण वधाभमकव जीर्न से घबडाकर, त्जसका भसद्धान्त है कक आनन्द की प्रात्प्त शत्क्कत तथा सम्पवत्त से नहीांशात्न्त एर् ांप्रेम से होती है, हमारे प्रगततशील सुधारक धम-वतनयमों में इतनेअपर्ाद जोड देते ेहैं कक उनकी आत्मा की हत्या हो जाती है तथा दहसांा धन-राभश एर् ांशस्ासि् प्रचुर अर्ाचवीन व्यर्हार को ही मनुष्य-जीर्न का चरम उद्देश्य मानने र्ाले भसद्धान्त की पुत्ष्ट हो जाती है। र्े अनायास ही उस मनुष्य की कहानी को भुला देते ेहैं,

---

[21] देखो महाभारत-अनुशासन पर्व -162 तथा शात्न्त पर्व -33

 त्जसने अनेक र्ीं के भलए पयाप्वत अन्न-सग्रांह करने के भलए बडी-बडी खवत्तयों के. तनमाणव करने की योजना
तैयार की थी, ककन्तु उसी रात को मृतूयु का भशकार हो जाने के कारण उस योजना को कायात्वन्त्त करने का अर्सर ही त्जसेनहीींभमल सका था।

दहन्दू–ूदाशतवनकों को अच्छी तरह मालूम है कक मनुष्य की र्ास्तवर्क प्रकृतत में, जो काफी खराब है, तथा असम्भर् प्रतीत होनेर्ाले आदश वमें बहुुत बडा अन्तर है। यथाथ वतथा आदश वके महान् ्अन्तर का ज्ञान उन्हें आदश वको नीचे ेधगराने की प्रर्ूवृत्त नही ींदेता। र्ैसा करना उन्हें अपनी आत्मा के प्रतत अिम्य अपराध करना प्रतीत होता है। अतः बाह्यतः दुदुवम जीर्न-पररत्स्थततयों से ही र्े एक अमूल्य आदश-वसृजृन का प्रयास करते ेहैं। मनुष्य का रुभार् तथा उसकी नैततक रुधच धीरे-धीरे ही बदलती है। यदद हम पूणतवा की ओर बढ़ना चाहते हैं तो हमें धैय व से काम लेना होगा। कम ववर्पाक भसद्धान्त के अनुसार पूणतवा तक पहुुंचनेके भलए लाखों योतनयों में होकर जाना पडता है। वर्चारों को आदश-वभूभम तक पहुुंचाने के भलए अनेक कष्ट-श्रम उठानेपडतेहैंएर् ींबडी-बडी योजनाए ीं बनानी पडती हैं। अपनेहृदय को आनन्द से उच्र्भसत करनेके भलए असख्ांय हृदयों को कुचलना होता है। पवरि् भार् के उत्पादन के भलए अनेक त्यागपूण वप्रयासों की आर्श्यकता होती है। अधधकाशां लोग आध्यात्त्मक भशखर पर एक-एक सीढ़ी करके ही चढ़ पाते हैं। एक छलाकां में चोटी पर पहुुंचने र्ाले उांगभलयों पर धगने जा सकते हैं। र्णाश्रवम धम वही र्ह उपाय है त्जसेदहन्दुओु ींने िभमक वर्कास के भलए ढूांढ़ तनकाला है। उसका उद्देश्य है कक साधारण-से-साधारण व्यत्क्कत महात्मा अथर्ा ऋवर् बन जाय। उसके तनयम भौततक नहीां, आध्यात्त्मक राज्य के तनयम हैं, र्े ककसी राष्र वर्शेर् के नहीांप्रत्युत् ्सार्भवौभमक हैं। यदद धाभमकवता का अथ वउन तनयमों से है त्जन्हें मानने का आदेश हमारा हृदय देता है और कानून अथर्ा वर्धान से उन तनयमों को सूधचत ककया जाता है त्जनको मानने के भलए राज्य की ओर से वर्र्श ककया जाता है तो हमारा 'धम'व इन दोनों से परे की चीज है। यह तो र्ह परम्परा है त्जसका अनुमोदन मनुष्यों की अगखणत पीदढ़यों के हृदय कर चुके हैं, जो हमारी आत्मा में सत्य की प्रततष्ठा करती है। यह राजकीय वर्धान एर् ींर्ैयत्क्कतक हृदय दोनों से ही भभन्न है। इसभलए पारस्पररक कलह तथा साम्राज्यर्ादी आिमण भारतीय जीर्न को स्पश वभी नहीां कर सके तथा लगभग पचास शतात्ब्दयों से र्ह उसी अवर्कल रूप में चला आ रहा है। वर्जय के तूफान इस अवर्चभलत जनसमुदाय के ऊपर से र्ैसै ेही तनकल गये जैसै े नरकुल के र्न पर होकर प्रबल र्ायु का झोंका।

धमो ही र्ह आदश वहै त्जसकी ओर मानर् जातत को अग्रसर होना है। सम्पूण वजीर्न इसी आदश वसे जडडत है। सब मनुष्य समान हैं, क्क्योंकक र्े सब परमात्मा की सन्तान हैं; र्े समान हैं क्क्योंकक उन सभी को एक ही दद्व्य गतत प्राप्त करनी है। परन्तु मनुष्यों की आदश-वप्रात्प्त की योग्यता में भेद है। उन्हें भभन्न-भभन्न धिाा में मभलनता तथा अवर्द्या का िय करना है एर् ींअपनेजीर्न को प्रकाश तथा प्रेम से भरने के भलए भभन्न-भभन्न प्रयास करने हैं। प्रत्येक व्यत्क्कत की सम्यक् भशिा के भलए र्णों एर् ींआश्रम व्यर्स्था कर दी गई है। इसमें मानर्-प्रकृतत के वर्वर्ध रूपों को ध्यान में रखा गया है। मनुष्य-जीर्न का मूल कम वअथर्ा र्ासना है। मनुष्य र्ासनाओां को समुदाय है। मनु का कथन है- 'मनुष्य को काम का-र्ासना का-दास नहीांहोना चादहए, पर अकामता तो ससांार

भारत की अन्तरात्मा 23 में ददखाई नहीींदेती।[22] चूकांक हमारी समस्त किया ॄ्सनाजन्य होती है; अतएॄ् उसका उधचत सयांम भी धम वका

अ ांग है। फलतः काम भी धमसवगांत समझा गया है। काम का अथ वकेर्ल पाशवर्क इच्छाओां की तृतूप्त नही ांहै र्रन्

आत्म-स्ॄातत्र्ांय का प्रकाशन है। यह तब तक सम्भर्् नहीां जब तक हम इत्न्द्रयों की दासता से मुक्कत नहीांहोते। मनुष्य-जीर्न नाना प्रकार के इत्न्द्रय-सुखों के उपभोग में ही नहीांसमाप्त हो जाता र्रन् ्ॄह तो अशाश्र्त रूपों के द्र्ारा वर्कभसत होने ॄ्ाले एक शाश्र्त तवर् की अभभव्यत्क्कत है। मनुष्य की कामनाओ ांको पाररॄ्ाररक जीर्न एॄ् ां सामात्जक कतव्वय की ओर प्रेररत कर ददया गया है। भाॄुक अथर्ा कलात्मक जीर्न भी जीर्न के परमकल्याण का अ ांग है, परन्तु सन्ांयास के ॄ्ातार्रण में कला का वर्कास सम्भर्् नही। ां उसके भलए अथ वकी आर्श्यकता है। यदद लोगों की रचनात्मक प्रर्ृवृत्तयों को उच्च सास्ांकृततक जीर्न के भलए मुक्कत करना है तो समाज की आधथकव आर्श्यकताओांकी पूतत वकरनी होगी; अतः ऐसेतनयम बना ददये गये हैंत्जससे ेव्यत्क्कत की स्र्तांत्रता समाज की आर्श्यकता से तनयत्रांित कर दी गई है। आत्म-त्याग के ही द्र्ारा सम्पवत्त का उपाजनव एॄ् ांउपभोग सम्भर्् है। काम तथा अथ वका तनयांिण भी धम वही करता है। त्जनमें धम-वभार्ना प्रबल होती है ॄे् सात्त्क्क प्रकृतत कहलातेहैं, अथ-वप्रेमी राजभसक प्रकृतत के होते ेहैं तथा केर्ल र्र्य-लोलुप तामभसक प्रकृतत के मनुष्यों में पररगखणत है।[23] जो व्यत्क्कत 'धम'व के तनयमों का पालन करता है र्ह अनायास ही मोि प्राप्त कर लेता है; अतएॄ् धम,व अथ वकाम तथा मोि जीर्न के लक्ष्य कहे जाते ेहैं।

जीर्न तथा वर्श्र्् की उत्पवत्त का कुछ भी कारण क्कयों न हो, नैततक उद्देश्य की महत्ता को सभी स्र्ीकार करते ेहैं। दहन्दू-दूशनव के अनुसार मनुष्य का जन्म एक ददव्य उद्देश्य का पररणाम है। हमारे वर्गत जीर्न की अतृप्ूत ॄ्ासनाए ांही इस जन्म का कारण हैं। तप के द्र्ारा ही हमारी दुबुलवता शत्क्कत में एॄ् ांअवर्द्या ज्ञान में पररणत हो सकती है। जीर्नजात पापों का ि य तप तथा सयांम के द्र्ारा ही ककया जा सकता है। 'आश्रम' शब्द की व्युत्पवत्त त्जस धातु सेहै उसका अथ वकष्ट उठाना है। त्रबना कष्ट के उन्नतत नही ांहो सकती; त्रबना मृतूयु के पुरुज्जीर्न कैसे ेसम्भर्् हो सकता है! आदद से लेकर अन्त तक हमारा जीर्न एक प्रकार की मृतूयु है त्जसका अथ व है अधधक वर्शाल जीर्न। त्जतना ही हम अपनेभलए मृत होते ेजाते ेहैं, उतना ही भगॄान् ्के तनकट अधधक जीवर्त होते ेहैं। जीर्न तथा मृतूयु में अटूट सम्बन्ध है एॄ् ांपूण ववर्नाश का फल र्ग वजीर्न है। प्रत्येक दहन्दू ूके भलए चारों आश्रमों का वर्धान है। पहले ेदो आश्रम ब्रह्मचय वतथा गृहस्थ आश्रम कहलातेहैं। अत्न्तम दोनों जीर्न से अर्काश ग्रहण करने से सम्बत्न्धत हैं तथा उनमें पहुांचकर पुरुर्् भगॄान् ्तथा मानर्ता का सेर्क बन जाता है।'[24] पहला आश्रम यज्ञोपर्ीत सस्ांकार से आरम्भ होता है जो आध्यात्त्मक जीर्न में दीक्षित होनेका सूचक है। इसका उद्देश्य मनुष्य के शारीररक एॄ् ांमानभसक पुष्टता का वर्धान करना है। इस आश्रम का मुख्य लक्ष्य स्ॄास्थ्य-र्ृद्धवन एॄ् ांमानभसक वर्कास है। छाि को तनमलवता, ब्रह्मचय,व भशष्टाचार एॄ् ांआत्स्तकतापूण वजीर्न की भशिा दी जाती है। सब वर्द्याधथयवों को, चाहे ॄे् राजपूत हों अथर्ा कृर्क-सन्तान-दररद्र जीर्न त्रबताकर

---

22 मनुस्मृतत 2, 23।

23 मनुस्मृतत 12, 38

24 मनस्पतत 687

 सामात्जक सहानुभूतत का अभ्यास करना पडता है। प्रत्येक छिा को जीर्न-धारणा के भलए भभिा मागांनी पडती है
और दररद्रता का अभ्यास वद्यार्थी को यह बुद्धि देता है कक साधु-जीर्न के भलए सम्पवत्त आर्श्यक नहीांहोती। वद्याधथयवों को स्र्च्छन्द नहीांछोडा जाता और न उन्हें वर्र्केहीन धमान्वधता के ही अधीन कर ददया जाता है। न तो उन्हें स्र्कल्पना-प्रसूत प्रततमाओ ांका तनमाणव करनेको अधधकार रहता है और न र्े अन्धवर्श्र्ास तो साम्प्रदातयक सकीीणतवा के ही भशकार बनाने ददये जाते ेहैं। वद्याधथयवों की िमता एर् ांआर्श्यकता के अनुसार ही
भशिा का प्रबन्ध ककया जाता है। तब समस्या इतनी जदटल नहीांथी जैसी आज है, क्क्योंकक बालकों का भार्ी व्यर्साय प्रायः तनत्श्चत रहता था। भशिा की व्यस्था में, र्ह धाभमकव हो अथर्ा सामान्य, बालक तथा बाभलकाओ ां में कुछ भी भेद नहीांककया जाता था। केर्ल सहभशिा को अर्श्य प्रोत्साहन नहीांददया जाता था।
भशिा-काल समाप्त होने पर वद्यार्थी को पाररर्ाररक उत्तरदातयत्र् ग्रहण करना पडता था। पुरुर् अकेला नहीांहोता, उसके ऊपर स्त्री एर् ांबच्चों का भी भार होता है।[25] र्ह कुटुम्ब का भरण-पोर्ण करनेर्ाला तथा समाज का आश्रयदाता बन जाता है। पाररर्ाररक जीर्न एर् ांसामात्जक कतव्वय, दोनों ही चरम लक्ष्य की प्रात्प्त में सहायक होते ेहैं एर् ांउनके भलए आत्म-सयांम अतनर्ाय वहै। प्रत्येक पुरुर् को लोक-कल्याण की भार्ना से ही अपना कतव्वय करना पडता है। केर्ल व्यत्क्कतगत सुख के भलए लोक सेर्ा का पररत्याग ककसी को भी नहीांकरना चादहए।[26] हम पारस्पररक सहायता करने का र्चन दे चुके हैं, अतएर् हमें एक-दूसूरे के भलए ही प्राण धारण करना चादहए-व्यत्क्कत पररर्ार का, पररर्ार सम्प्रदाय का, सम्प्रदाय राष्र का एर् ांराष्र ससाांर का दहत-साधन करे। र्ण-व धम,व त्जसका उपयोग गृहस्थ आश्रम सेआरम्भ होता था, मनुष्यमिा की एकता एर् ांअन्योन्याश्रय-सम्बन्ध को मानकर ही चलता है। र्ह सामात्जक तथा र्ैयत्क्कतक आर्श्यकता का ध्यान रखकर चलता है। र्ह व्यत्क्कतत्र् की रिा करता है, क्क्योंकक र्ह अपने से श्रेष्ठ सत्ता की सेर्ा करके अपनेको ऊपर उठा देता है। र्ातार्रण के एक वर्र्ेर् अांग पर अपनी सम्पूण वशत्क्कत को केत्न्द्रत करके र्ह अपना पूण ववर्कास करने का प्रयास करता है। यह हीगल के वर्रोधी दृश्यों के सामजांस्य का उदाहरण है। यह एक ऐसा दृत्ष्टकोण है जो व्यत्क्कत एर्ां समाज के वर्रोधी-से प्रतीत होनेर्ाले अधधकारों में सत्न्ध करा देता है। र्ण-वव्यर्स्था का मूल भसद्धान्त अकेले ेव्यत्क्कत का कल्याण अथर्ा अकेले ेसमाज को दहत नहीां है; ककन्तु उनसे ेभी श्रेष्ठ उद्देश्य की कल्पना है त्जसकी प्रात्प्त में सतत् ्आत्म-ससांकार एर् ांसमाज-सेर्ा साधन बन जाते ेहैं। मानर्-प्रकृतत की अनेक-रूपता का ध्यान रखकर र्ह उन प्रणाभलयों एर् ांउपायों का तनदेश करता है त्जनका अनुसरण करके प्रत्येक व्यत्क्कत अपनेको पूणरूवपेण व्यक्कत कर सकता है। र्ास्तवर्क भेदों को स्र्ीकार करके र्ह आदशसवाम्य की स्थापना करता है। र्ह प्राकृततक शत्क्कतयों से सहयोग करता है, उनकी अर्हेलना नही ांकरता । आधुतनक ज्ञान-मचां से जो इस व्यर्स्था की प्रततकूल आलोचना करते ेहैं र्े भूल जाते ेहैं कक ककसी अन्य देश में इतने भभन्न मानभसक एर् ांसासांकृततक स्तरों के लोग एक ही समाज का अांग कभी नही ांबने। र्ेद-पूर् वकाल के तनर्ासी, त्जनसे आयगवण आकर भमल गये, तनम्न कोदट की सभ्यता एर् ांससांकृतत से युक्कत थे। उन्हें शुद्धि-सम्भार्नाहीन 'एकजातत' कहलाने र्ाले चतुथ वर्ण वमें स्थान ददया गया, क्क्योंकक उनमें मत्स्तष्क, हृदय एर् ांचेष्टा के उत्कर् वके अनुसार तीन श्रेखणयों में वर्भक्कत कर ददए गए। त्जनमें बुद्धि का वर्र्ेर्

[25] मनुस्मृतत 10, 45

[26] भगर्द्गीता 3, 16

 उत्कर् वपाया जाता है, रे् ब्राह्मण हैं, त्जनमें प्रेम तथा परिाम का उत्कर् वहै रे् ित्रिय हैं; त्जनकी

रुधच व्यार्हाररक
जीर्न में ही वर्शेर् हैं, रे् रै्श्य हैं। ये चारों र्ण विमशः बौद्धधक, सैतनक, व्यार्सातयक तथा शारीररक श्रमजीवर्यों के समानाथकव हैं। सब अपनी-अपनी शत्क्कत के अनुसार ससांर की सेर्ा करते ेहैं। ब्राह्मण अपनेअध्यात्म, ित्रिय अपनेपरिाम, रै्श्य अपनी बुद्धध तथा शूद्र सेर्ा के द्र्ारा समाज का उपकार करता है।[27]' सभी लोक-दहत को र्ग-वदहत की तुलना में श्रेष्ठ समझते ेहैं। स्र्ाथ वएर् ांआत्मोन्नतत की कामना को न्याय तथा धम वके उन तनत्य भसद्धान्तों से, त्जनका दातयत्र् हमारे ऊपर रख ददया गया है, दबा ददया जाता है। प्रत्येक र्ण वअपने-अपनेकतव्वय का पालन करता है तो समाज को न्याययुक्कत अथर्ा धमसवम्मत कहा जाता है।

शूद्रों के भी र्ास्तवर्क दहतों की उपेिा नहीांकी गई थी। रै्श्ै य व्यापार करते ेतथा धन एर् ांसुखभोग में रुधच रखतेथे, पर इसमें भी उन्हें जीर्न एर् ांकल्याण की भार्ना रखनी पडती थी। इस र्ग वको एक प्रकार का आधथकव-सघां कहना चादहए। कफर भी र्खणक्-रू्वृत्त दबी रहती थी, क्कयोंकक उन्हें सुख-साधनों को स्नेह-रज्जु ुमें ही बाधांकर रखना होता था। ित्रियों का कतव्वय था कक रे् आन्तररक अव्यर्स्था तथा बाह्य आिमणों से समाज की रिा करें। देश की सैतनक-शत्क्कत उनके ही अधीन थी। देश की राजनीतत का सचांालन भी र्ही करते ेथे। दहन्दू-ूधम व को यह पसन्द नहीांथा कक समस्त समाज आर्श्यकता पडने पर सैतनक का काम करे। प्रत्येक काय वमें वर्शेर्ज्ञता ही कुशलता की जननी होती है। त्जनका धम वही युद्ध करना तथा अन्याय का बलपूर्कव प्रततकार करना है, उनकी धचत्त-रू्वृत्त भी रै्सी ही होनी चादहए एर् ांउनकी भशिा का उधचत प्रबन्ध होना चादहए। शासन-कला का ममज्ञव प्रत्येक व्यत्क्कत नहीांहो सकता। लोगों की यह भार्ना दृढ़ होती जा रही है कक यदा-कदा राजनीतत से अपना मनोरांजन कर लेनेर्ाले लोग, त्जनका उद्देश्य अपने तनर्ाचवकों को सन्तोर् देना मात्र होता है तथा त्जनकी राजनीततक पाठशाला लोकवप्रय तनर्ाचवनों की हुल्लडबाजी ही है, कभी सफल शासक नहीांबन सकते। एक वर्शेर् र्ग वको सेना तथा शासन का भार सौंप ददया गया था। सम्पूण वसमाज शासन, प्रभुता एर्ां शत्क्कत की उत्कट र्ासना से पीडडत नहीांथा। आज दुतनया पर हुकूमत करने तथा अपने भलए बाजार तलाश करने की भार्ना से महायुद्ध छेडेजाते ेहैं, लोगों के चाररत्रिक वर्कास अथर्ा कल्याण की भार्ना से जाते ेप्रेररत होकर नही।ां राजनीततक वर्क्षिप्तता के कारण ससांर में महान् ्अनर्स्था है और हम एक अतनत्श्चत पररणाम की ओर द्रुतुगतत से वर्र्श बहे जा रहे हैं। कहा जा सकता है कक इसी बात का क्कया तनत्श्चय की शासन-व्यर्सायी र्ग वकी उपत्स्थतत से न्यायपूण वतनस्र्ाथ वराज्य स्थावपत हो सकेगा? परन्तु त्जस प्रकार की भशिा उन्हें दी जाती है, र्ह इस बात का पयाप्वत प्रमाण है कक रे् अपने कतव्वय का पालन उधचत रूप से करेंगे। इसके अलार्ा शासकों को 'धम'व के रद्द करने अथर्ा उसमें पररर्तनव करने का अधधकार ही नहीं था, रे् तो केर्ल उसके पालन कराने के भलए तनयुक्कत थे। 'धम'व में पररर्तनव तो केर्ल ब्राह्मण वर्द्र्ान् ्ही कर सकते ेथे, त्जनका अपना कोई स्र्ाथ वनहीांथा एर् ांजो हठपूर्कव दररद्रता में रहकर आध्यात्त्मक जीर्न त्रबताते थे। शकाां अथर्ा सकांट के अर्सर पर धाभमकव समस्याओ ां का तनणयव र्ही ककया करते ेथे।

---

[27] शिुनीतत 1,38,42

उनका सामात्जक सगांठन र्ही था जो वर्भशष्ट जन-शासन-प्रणाली का श्ेरेष्ठतम रूप हो सकता है, क्कयोंकक तनयम बनाने का तनःस्पृह दाशतवनकों के ही हाथ में था। यहूदी, ईरानी तथा केल्ट जाततयों में भी कानून बनाने का काम पुजारी ही करते ेथे। ब्राह्मणों के ज्ञान, आत्म-तनग्रह, तनःस्र्ाथ वप्रेम आददक सद्गुणों के कारण स्र्ाथपूवण व कानून का बनना कदठन था। ज्ञानाजनव तथा जीर्नोत्कर् वमें तनरत ब्राह्मणों का पद शासकों तथा अधधकाररयों से ऊांचा था तथा इनको सन्तोर् देनेर्ाला आचरण करने को ब्राह्मण बाध्य नहींथे। रे् सभी सासांररक धचन्ताओां से मुक्कत कर ददए गए थे; आध्यात्त्मक बातों में रे् भौभमक अधधकाररयों के अधीन नहींथे।[28] यह सस्ांथा मानती है कक सब प्रकार के श्ेरेष्ठ सुधारों को जन्म पहले ेककसी एक ही व्यत्क्कत के मत्स्तष्क में होता है और जनसाधारण उससेबचना चाहते हैं। यदद सुधार होनेसे पूर् वबहुमत उसके पि में होना आर्श्यक कर ददया जाय तो समाज कभी आगे ेनही ांबढ़ सकता। सस्ांकृतत ांएर् ांवर्कास के भलए परमार्श्यक है कक वर्धायक वर्द्ान् ्एर् ांपूण वस्र्ाधीन हों। 'शताब्दी (Century)' नामक पत्रिका में बररेण्ड रशल का एक सुन्दर लेख है। उसमें उन्होंनेभलखा है कक "स्र्तिां न होने से दूरूदशी व्यत्क्कत शत्क्कतहीन हो जाता है ।" मनु के अनुसार "एक ज्ञानी का मत लाखों मूखी के मतों से श्ेरेष्ठ होता है।'[29]

आध्यात्त्मक वर्कास के वर्भभत्न स्तरों के अनुकूल ही तत्सम्बन्धी धम-वतनयमों का सृजन ककया गया है। रै्श्य सुखोपभोग की कामना लेकर ममतापूर्कव जीर्न से धचपटा रहता है। ित्रिय सगांठन एर् ांसुव्यर्स्था के भलए उसका वर्सजनव कर देता है और बलपूर्कव अनाचार का दमन करता है। ब्राह्मण दृढ़ तनश्चय एर् ांअदम्य उत्साह के साथ अदहसांा का जीर्न त्रबताता है। उसकी अदहसांा दुबुलवता अथर्ा कायरता की नहीां, र्रन् ्आत्म-शत्क्कत एर् ांददव्य प्रेम की सूचक है। र्ह ित्रिय की अर्स्था को पार कर चुका है तथा उसनेउसको सच्चे भक्कत के अयोग्य पाया। शतात्ब्दयों के परम्परा-प्राप्त अभ्यास एर् ांर्ातार्रण के प्रभार् ने दहन्दू ूको वर्नम्र, तनत्ष्िय, मननशील, ब्राह्मण, सन्ांयासी के आदश वका पुजारी बना ददया है। आज भी गाधीी-जैसे िीणकाय महात्मा के सम्मुख र्ह पूण व श्रद्धा तथा अवर्चल भत्क्कत से नतमस्तक हो जाता है।

ब्राह्मणेतर र्णों की व्यर्स्था करने तथा ित्रियों का कतव्वय ही युद्ध घोवर्त कर देनेसे अनेक लोगों का यह वर्श्र्ास हो गया है कक दहन्दू-्धम वको आधार अदहसांा नहींहै। लोग इस सीधी बात को भूल जाते ेहैं कक उच्च स्तर तक पहुांचने के भलए तनम्न कोदट को पार करना आर्श्यक है। हम त्जतना ही ऊपर चढ़ते ेहैं, उतना ही हमारा जीर्न अधधक त्यागमय हो जाना चादहए। ईसा को अपने कांधों पर त्रबठाल कर नदी के पार ले-जानेर्ाले साधु किस्टफर की कथा हम सब पर चररताथ वहोती है। र्ह त्जतना ही अधधक गहरे पानी में बैठैता गया उसका भार उतना ही अधधक बढ़ता गया। धीरे-धीरे र्ासनाओांको जीतकर ससांार के आध्यात्त्मक मूलाधार के बढ़ते ेहुए ज्ञान के द्र्ारा शूद्र-र्णां में जन्म लेनेर्ाले सब मनुष्य िमशः ऊपर को उठते ेहैं और ब्राह्मण न बन जानेतक बढ़ते ेही जाते ेहैं। त्जतना ही ऊपर हम उठते ेहैं, हमारा बोझ उतना ही बढ़ता जाता है और इस र्द्धवधत भार के अनुपात से ही

---

[28] मनुस्मृतृत 4,11

[29] मनुस्मृतृत 12, 113

 हमारी शत्क्कत बढ़नी चादहए। िित्रय, हीनर्ण वहोनेसे बल प्रयोग कर सकता है-यद्यवप वर्शुद्ध

हृदय, एर् ांघृणृा

रदहत-पर ब्राह्मण तो ककसी दशा में भी घृणृा अथर्ा बल-प्रयोग नहींकर सकता। र्णों में जो अपिेाकृत भेद है र्ह भी पूण वआदश वकी दृत्ष्ट से ठीक है। हम इसका भी एक उदारहण देते ेहैं। आधुतुनक वर्कासर्ाद का भसद्धान्त भी मनुष्य तथा पशुओ ांमें एक ही जीर्न-प्रर्ाह माननेर्ालेदहन्दू–ूमत की पुत्ष्ट करता है। दहन्दू–ूधम वजीर्मात्र को आदर की दृत्ष्ट से देखनेपर उनके प्रतत स्नेह एर् ांकरुणा के प्रसार पर जोर देता है। अदहसांा का तनयम पशुओ ांके भलए भी है। उसका तो यह भी भसद्धान्त है कक मासांभिण मनुष्यों की उदात्त र्ृवृत्तयों में जडता का सचांार करता है। र्ह शरीर को त्जतना पुष्ट नहींकरता उतना मन को दुबुलव बनाता है। ईसा भी तो स्पष्ट कहते ेहैं कक पशुओ ांको भी अबध्य समझना चादहए क्कयोंकक त्रबना ईश्र्र की मरजी के एक गोरैया की भी मृतृयु नहीं हो सकती, पर भारतर्ासी मासांाहारी थे, अतएर् ऐसेतनयम बनाये गए त्जसमें मासां-भिण चतुथ वर्ण वके ही भलए वर्दहत रह गया और शेर् समाज के भलए साधारणतः उसका तनर्ेध कर ददया गया, त्जसका पररणाम यह हुआ कक दहन्दू–ूसमाज समुदायतः मासां खाना छोडता जा रहा है।

र्ण वका आधथकव महत्र् है। आजकल पाई जाने र्ाली जाततयों में से अनेक तो केर्ल व्यार्सातयक समुदाय हैं। सब कोई सब कुछ नहींकर सकता और र्ह यह समझता ही है कक र्ह चाहे त्जस व्यर्साय को सफलतापूर्कव चला सकता है। लोगों को काम की खोज में भी नहींभटकना पडता । उनका काम पहले ेसे ही तनत्श्चत रहता है। तनबाधव प्रततयोधगता एर् ांस्र्ाथपूवण वव्यत्क्कतप्राधान्य का दमन ककया जाता है। प्रत्येक काम अथर्ा व्यर्साय को धाभमकव स्र्रूप दे ददया गया है। थबई तथा बढ़ई, कुम्हार तथा ग्र्ाला वर्श्र्ास करता है कक अपना-अपना काम करके र्ह ईश्र्र की इच्छा का पालन करता है और समाज की सेर्ा करता है। बडेपैमाने पर चलने र्ाले उद्योगों तथा भमलों के इस युग में हम जरा भी नहींसोचते ेकक परररार् से दूरू रहकर ककसी बडेभमल में काम करने र्ाले मजदूरू मशीन की तरह त्जस काम में जुटेु रहते ेहैं, उसमें उन्हें आनन्द नहींभमलता। जातत-व्यर्स्था में एक ही व्यर्साय में काम करने र्ाले सब लोग अपनेस्र्ाभावर्क र्ातार्रण में काम करते ेहैं, उन्हें घर से दूरू जाकर थोडे ेर्ेतन पर अधधक समय तक काम करनेको वर्र्श नहींहोना पडता । सौंदय,व स्नेह तथा सामात्जक कतव्वय की भार्ना से युक्कत पूण वजातीय जीर्न मजदूरू को आनन्द देता है। उसके कुटुम्ब के लोग काम में उसका हाथ बटांाकर उसे माधुय वतथा कोमलता से भर देते ेहैं। यदद अल्पर्यस्क बच्चों तथा त्स्त्रयों का काम करना आर्श्यक ही हो तो यही अधधक उपयुक्कत है कक र्े घरेलू र्ातार्रण में ही काम करें जहा ांअपनी रचना-प्रर्ृवृत्तयों को र्े स्र्तनभमतव र्स्तुओ ांमें मूत वकर सकें। प्रततयोधगता में सफलता अथर्ा ग्राहकों के सन्तोर् की अपेिा यहाांपर कतव्वय-पालन के भलए उन्हें श्रेष्ठतर प्रेरणा भमल सकती है। एक ही पेशे ेके लोगों में सामुदातयक सद्भार्ना एर् ांव्यार्सातयक मयादवा का वर्कास होता है। र्ातार्रण के वर्कास प्रभार् से छोटे-छोटे बच्चों को उपयुक्कत व्यार्सातयक भशिा भमल जाती है। अज्ञातरूप से र्े व्यर्साय-परम्परा में दि हो जाते ेहैं और इस प्रकार अपनी रुधच के अनुकूल आत्मानुमोददत व्यर्साय में लग जाते ेहैं। यह सच है कक आधुतनक पररत्स्थततया ांकुटीर उद्योग अथर्ा छोटे पैमाने के उत्पादन के प्रततकूल हैं, पर सभी जगह ऐसा नहींहै। लभलत कलाए,ां सजार्ट के काम एर् ांकताई तथा बुनाई के काम आदद ककसानों के सहायक व्यर्साय के रूप में घर पर चल सकते हैं और तेल के इांजन अथर्ा त्रबजली से चलने र्ाले छोटे-छोटे कारखाने भी खोले ेजा सकते हैं। व्यार्सातयक सघां के रूप में

 जातत-व्यस्र्था अभी बेकार नहीांहुई है। यद्यवप आरम्भ से ही जीर्न के तनत्श्चत कायिवम बना लेनेका प्रस्तार्

अनुधचत नहीांकहा जा सकता, कफर भी नैसधगकव प्रततभा तथा रै्यत्क्ततक प्ररृ्वत्त का कुछ भी ध्यान न रखकर ककसी

पद्धतत वर्शेर् को त्स्थर रूप दे देने का यह भी पररणाम हो सकता है कक व्यत्क्त का जीर्न दासता की जजीर में जकड जाय और ई आधुतनक युग की जदटल पररत्स्थतत के अनुकूल अपनेको न बना सके।

र्स्तुतः ककसी भी व्यत्क्त की जातत उसकी बुद्धध, मनोर्ेग अथर्ा चेष्टा के प्राधान्य से तनधारवरत होती है। ये स्थूलरूप से सत्र्, रजस् ्एर् ांतमस् ्नामक तीन गुणों के व्यजांक हैं।'[30] मनु ने जातत-तनणायवक तीन बातों का उल्लेख ककया है-तपस् ्अथर्ा व्यत्क्तगत प्रयास, श्रुतम अथर्ा सास्ांकृततक र्ातार्रण एर् ांयोतन अथर्ा र्शाांनुिम। पहला तनयम काफी अतनत्श्चत है और उसका रै्ज्ञातनक उपयोग सम्भर् नहीांा दूसूरा पाररर्ाररक प्रभार्ों पर आधश्रत है जो स्र्य ांजन्मजात सस्ांकारों पर आधश्रत रहते ेहैं। व्यार्हाररक लिण केर्ल जन्म रह जाता है और उनका मत दहन्दुओां को स्र्ीकृत कम वएर् ांपुनजन्वम के भसद्धातां के ही अनुकूल है।

भभन्न-भभन्न जातीय सस्ांकारों से युक्कत मनुष्य एक साथ सौहाद्रव तथा शात्न्तपूर्कव र्ण-वव्यस्र्था को मानकर ही रह सकते हैं। इसके सस्ांथापकों का वर्श्र्ास था कक यद्यवप जन्म समाज-वर्भाग का सर्ोत्तम पररचायक है, पर उसका र्ास्तवर्क आधार आध्यात्त्मक । मनु यहाांतक मानते ेहैं कक वर्शुद्ध एर् ांसाधु ुआचरण के पुरुर् पैतृक सस्ांकारों पर वर्जय पा जाते ेहैं।[31] महाभारत के अनुसार "उच्चता की कसौटी तनमलव चररि है, जातत अथर्ा वर्द्र्त्ता नहीांा[32]' जन्म के अलार्ा और सब बातों की हमनेपूण वउपेिा कर रखी हैं, त्जसका पररणाम यह हुआ हैं कक लोग सदा के भलए एक अनुल्लघ्ांय सीमा में बन्द हो गए, भार्ी पीदढ़या ांइस व्यस्र्था की दास बन गईं एर् ांसामात्जक वर्कास अर्रुद्धप्राय हो गया। इस व्यस्र्था के पररर्तनविाम बाधासकुांल रूप में जीर्न के स्र्ाभावर्क प्रकाह का कोई ध्यान नहीांरखा गया। हमारे समाज में इतना भेदभार्, इतनी बडी सम्बन्ध-हीनता आ गई है कक जातत के भसद्धान्त को गौण मानेत्रबना काम नही ांचलता ददखाई देता। ऐसी ही त्स्थतत की ओर सकेंात करते ेहुए महाभारत में भलखा गया है- "वर्र्ाहों के द्र्ारा इतनी बडी सकांरता आ गई है कक जातत का तनयम व्यथ व हो गया है। हमें मुख्य स्थान शील को देना चादहए। प्रथम मनु का कहना है कक शील का ध्यान न रखकर केर्ल जातत को सब कुछ समझना अथहवीन है।"[33]

छिा-जीर्न की भशिा एर् ांअभ्यास के बार्जूद भी र्ण-वधम वकी भभन्नता के कारण लोगों में भमथ्याभभमान एर् ांदूरत्र् की भार्ना का आ जाना सम्भर् था; अतः सबके साथ एक-सा व्यर्हार करने के तनयम पर काफी जोर ददया गया है। जैसे ेव्यर्हार की हम दूसूरों से आशा करते ेहैं रै्सा ही व्यर्हार दूसूरों के साथ करना सर्शे्रवष्ठ गुण समझा जाता है। वर्ष्णु ुपुराण में भलखा है- "तुम्हें सर्ि्व समत्र्-दशनव करना चादहए क्कयोंकक

---

[30] देखो भवर्ष्र्पुराण 3, 4-23 ।

[31] इस वर्र्य में महाभारत-र्ाण पर्,व अध्याय 216 भी पठनीय है।

[32] र्ुतूतमेर्-महाभारत-र्ाण पर्,व अध्याय 314।

[33] र्न पर्-व182, देखो मनुस्मृतृत 4, 224-225 ।

साम्यभार्ना ही, समवर् ही, ईश्र्र की उपासना है।[34] अदहसाां, सत्य, तनश्छल व्यर्हार, पवरि्ता तथा आत्म-तनग्रह आदद ऐसेकतव्वय हैं त्जनका पालन सबके भलए समान भार् से अतनर्ाय।व[35] आखखर र्ण-ववर्भेद हमारी अपूणतवाओ ांके ही कारण तो है, अतएर् उसके भलए गर् वकरनेकी कौन-सी बात है। भगर्ान् ्में र्ण-वभेदे कहा ांहै! जातत-भेदों का वर्धान केर्ल गृहस्थआश्रम के भलए है। यहा ांभी मानर्ता से बढ़कर उनका स्थान नही ांसमझा जाता। आज इस बात की जरूरत है कक जातत-भेद के मूल भसद्धान्त को तो हम स्र्ीकार कर लें पर एक अधधक उदार सामात्जक मनोर्वृत्त वर्कभसत करने का अभ्यास करें। जीर्न-सुवर्धाओ ांको घातक सकीणतवा एर् ांकठोर तनयमों से जकड रखना मानर्ता एर् ांसौहाद्रव के आदश वसे प्रततकूल है; अतः उनका पररत्याग करना होगा। मनुने उन्हें प्रोत्साहन नहीांददया- "ककसान, पररर्ार का शुभ धचन्तक, ग्र्ाला, नौकर, नाई तथा सेर्ा-भार् से आनेर्ाले गरीब अपररधचत शूद्र के हाथ से भी भोजन ग्रहण कर लेना चादहए।'[36]

भारत में मुसलमानों के आगमन से पूर् वजातत-भेद इतना अनुल्लघ्ांय नहीांथा। सामात्जक तनयमों में तरलता थी तथा वर्कास के भलए आर्श्यक पररर्तनव को ककसी कठोर तनयम के अनुरोध से बभलदान नहीांकर ददया जाता था। पुराणों में ऐसे पुरुर्ों तथा पररर्ारों की कथायेंहैं त्जन्हें हीन र्ण वसे उच्च र्ण वप्राप्त हो गया था। उत्थान तथा पतन की सम्भार्ना मनुको भी मान्य है।[37] पुण्य िभमक शुद्धध के द्र्ारा र्ण-वपररर्तनव के भलए कुछ तनयम हैं।[38] पुण्य करके तनम्न कोदट से ऊपर उठना सम्भर् था। जब भारत में दहन्दुओु ांका राजनीततक प्रभुत्र् लुप्त हो गया और यहाांके नए शासकों ने बलात् ्धम-वपररर्तनव की नीतत को अपना भलया तो सामात्जक भार्ना गायब हो गई तथा धम-वतनयम और नीततया ांअन्धवर्श्र्ास बन गईं, त्जसका राष्रीय सगांठन पर बडा ही भयकांर पररणाम हुआ। हमें धम वकी उस मूल भार्ना को पुनः प्राप्त करना होगा जो कुछ वर्शेर् रूपों तक ही सीभमत नहीांथी प्रत्युत् ्जो पुराने रूपों को बदलकर तथा नये-नये रूपों का वर्कास करके तनत्य नये रूपों में व्यक्कत हुआ करती थी। राजनीततक सकांट के समय जातत-व्यर्स्था को जो वर्शेर् महवर् प्राप्त हो गया था, अब उसकी कोई आर्श्यकता नही ांरही। भवर्ष्य में र्ण वतभी रह सकेगा जब उसे ेसामात्जक सम्बन्धों तक ही सीभमत रखा जाये। प्रत्येक समाज का तनयम है कक व्याह-सबांधां लोग उन्हीांलोगों से करते ेहैं जो समान रुभार् तथा आचार रखते ेहैं। चूकांक एक ही व्यर्साय के लोगों में सामान्य सास्ांकृततक परम्परा का वर्कास अधधक सम्भर् है; अतः समान व्यर्साय के लोगों में ब्याह-सम्बन्ध का एक तनयम-सा हो जाता है। प्राचीन भारत में भी असर्ण ववर्र्ाह को मना नहीांककया गया था यद्यवप उसको प्रोत्सादहत भी नहीांककया गया । अनुलोम तथा प्रततलोम वर्र्ाह कम ही होते ेथेपर दहन्दू–कानून की दृत्ष्ट में र्े अर्ैधैतनक नहीां हैं।'[39] इस प्रकार के वर्र्ाह बडी सख्ांया में इसभलए नही ां होते ेकक र्े जातत के तनकटतम औद्योधगक, सामात्जक तथा आध्यात्त्मक जीर्न में गडबडी उत्पन्न कर देते ेहैं।

---

[34] अध्याय 17।

[35] मनुस्मृतत 10-63, 6-91, 92।

[36] मनुस्मृतत 4, 223।

[37] मनुस्मृतत 10-42, 9-335।

[38] मनुस्मृतत 10, 57-65

[39] देखो बॉम्बे लॉ ररपोटवरभाग 24, गुलाब बाई बनाम हीरालाल ।

जातत-भेद यदद तनकट सामात्जक सम्बन्ध का ही आधार रहे तो ई राष्ट्रीय जीर्न के बर्डिे में बाधक नहींहो सकता। सम्राट् अशोक ने अपने दहन्दू ूमिोी से कहा था- "वर्र्ाह तथा तनमींण के समय र्ग वका वर्चार करना चादहए, धम वके प्रश्न में नहीं, क्कयोंकक धम वका सम्बन्ध सद्गुणों से होता है और सद्गुणों एर् ंर्णों में कोई सम्बन्ध नही।ं"[40]

यह कहना कक दहन्दू ूसमाज-सेर्ा सेअपररधचत है, एक साहसपूण वअसत्य है। अछूत जाततयों का प्रश्न लेकर बडा कोलाहल मचाया जाता है, पर लोग इस बात को भूल जाते ेहैं कक स्र्तन्त्र भारत ने अछूतों का त्जतना उपकार ककया है उतना उपकार आज के युग में ककसी भी स्र्तन्त्र देश ने अपनी वपछडी जाततयों का नहींककया। उन्नत राष्ट्रों ने तस्मातनया तथा आस्रेभलया के मूलतनर्ाभसयों को, कुछ मार्री जाततयों तथा उत्तरी अमेररका के रेड इंडडयन लोगों को ककस प्रकार सभ्य बनाया है? ससं्कार करते–करते ेया तो उन्हें त्रबलकुल लुप्त ही कर ददया है तथा जहा ंर्ह सम्भर् नहीं हो सका, र्हांउन्हें पाप तथा अपराध के उस गम्भीर खड्ड में धगरा ददया है जो बबरव जीर्न के ककसी भी स्र्ाभावर्क रूप की तुलना में अधधक हीन है। यदद त्रब्रदटश-रिा में काकफर तथा डच लोगों की अभभभार्कता में जार्ा तनर्ाभसयों की र्ृद्धध हुई, यदद स्रेट सेदेटलमेण्ट तथा त्रब्रदटश भारत के तनर्ासी इन सुधारकों के रहते ेभी गायब नहींहो गए हैं तो इसीभलए कक दयालु परमात्मा ने उन्हें ऐसे जलर्ायु में पैदा ककया है जो उनके सुधारकों के अनुकूल नहींपडती। योरोपीय तनर्ासी उष्ण कदटबन्धों को कभी अपना तनर्ास नहींबना सकते। र्े र्हांशासन कर सकते हैं, पर बस नहींसकते। यदद प्राकृततक बाधाए ंन होती ंतो इन कदटबन्धों का इततहास दूसूरा ही होता है। त्जस समय से आयगवण इन कम सभ्य जाततयों के सम्पकव में आयेतब से बराबर उनका यह प्रयास रहा कक कुछ ऐसा प्रबन्ध ककया जाय, त्जससे ेये जाततया ंसामात्जक अथर्ा आध्यात्त्मक वर्कास कर सकें। आयों ने इस अनाय वकृष्ण र्ण वजाततयों के प्रतततनधध कृष्ण को भी स्र्ीकार कर भलया और उसके द्र्ारा र्ह उपदेश ददलर्ाया जो ईश्र्र को सबका वपता तथा मनुष्यों को भाई-भाई बताता है। कृष्ण के आचरण से समाज ने अपने को अपमातनत समझा तथा इन्द्र एर् ंब्रह्मा नामक र्ैददक देर्ता क्रुद्ध हो गये। आज इन देर्ताओंके उपासक आय वकृष्ण को भगर्ान् ्का अर्तार मानते ेहैं, पर कृष्ण, आय-वपत्ण्डतों का बडा सम्मान करते ेथे ेऔर कहा जाता है कक युधधत्ष्ठर के राजसूय यज्ञ में ब्राह्मण-अततधथयों के पैर उन्होंनेही हाथ से धोये थे। आयों ने अनाय वदेर्ताओंके साथ बडा सुन्दर व्यर्हार ककया, जहा ंसम्भर् हो सका उनमें ससं्कार ककया एर् ंजहा ं आर्श्यक हुआ उनको आय-वदेर्ताओंके अधीन कर भलया। मदहर्ासुर के उपासकों को बताया कक ब्रह्ममदहर् से श्रेष्ठ हैं। नागोपासक को समझाया कक इन नागों से महान्,् नागों के स्र्ामी, नागेश्र्र कृष्ण हैं त्जन्होंनेनागराज काभलय के फन पर नृत्य ककया था। तनम्न र्ग वके लोगों के क्रभमक सभ्य होनेके धचन्ह भारतर्ष वके समस्त सासं्कृततक इततहास में त्रबखरे पडेहैं। जब-जब लोक-प्रर्ृत्त ने सामान्य मानर्ता की उपेक्षा की तब-तब कोई-न-कोई शकंर अथर्ा बुद्ध उठ पडा तथा ऊंच-नीच सबके समान भवर्ष्य की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट ककया। देश का वर्स्तार 2,000 मील लम्बाई तथा 1,500 मील चौडाई, उतना नहींहै त्जतना डैन से र्ीरशेर्ा तक का। जो यातायात के साधन आज उपलब्ध हैं र्े अभी हाल तक नहीं थे। यदद वपछडी हुई जाततयों को सभ्य बनाने का काम

---

[40] इत्ण्डयन सोशल ररफामरव-जून 4, 1922

दहन्दुओु ांने उत्साह तथा सफलता के साथ न ककया होता तो आज अछूतों की सख्ांया पाचां करोड से कही ांअधधक होती। जब वर्देभशयों का अिामण हुआ तो दहन्दू ूघबरा गए एर् ांआत्मरिा की भार्ना बना ददया। पररणामतः कुछ जाततया ांर्ण-वव्यस्र्था के बाहर ही रह गईं। यद्यवप मनु का कहना है कक "पचांम र्ण वहै ही नहीं।"[41] कफर भी त्जन जाततयों पर अभी तक धम वका प्रभार् नहीींपडा था, र्े पचांम र्ण वबन गईं। "जो अपनेकतव्वय से च्युत है, िूर तथा तनदवयी है और दूसूरों को दु:ख देता है, जो कामी तथा सहांार की भार्ना से पूण वहै, र्ह म्लेच्छ है।"[42] इन लोगों की शोचनीय दशा का त्जतना र्णनव ककया जाए, थोडा है। ककसी भी व्यत्क्कत की उपेिा केर्ल इसभलए करना कक र्ह नीचे है अथर्ा ककसी भभन्न जातत का है, दहन्दू–ूधम वके वर्रुद्ध है। अब जब शात्न्त स्थावपत हो चुकी है तो दहन्दू–ू नेता इस प्रमुख सत्य को बार-बार घोवर्त कर रहे हैं कक नीच-से-नीच पुरुर् में भी आत्मा है और हमें कभी यह ने समझना चादहए कक उनका सुधार हो ही नहीींसकता।

र्ाणप्रस्थ तथा सन्ांयास नामक अत्न्तम दोनों आश्रम, त्जनको सुवर्धा के भलए हम एक ही समझ सकते े हैं, उन लोगों के भलए हैं जो प्रततयोधगतापूण वजीर्न-सघांर् वसे अर्सर ग्रहण कर चुके हैं। भारतीय पुरुर्ों का सर्श्रेवष्ठ उदाहरण सन्ांयासी है। पिपात, घृणा एर् ांर्ासना का पूण ववर्नाश करके व्यत्क्कत स्र्ाथ-वपरायणता की तनम्नकोदट से आत्म-वर्सजनव की उच्चता तक पहुांचा है। र्ह सब सस्ांथाओां में रह चुका है और अब उन सबसे परे hat 3 । अब उसका भार्ुक जीर्न भगर्भत्क्कत अथर्ा ईश्र्र-प्रेम में प्रकट होता है, पाशवर्क र्ासना अथर्ा र्ैयत्क्कतक सुखाभभलार्ा में नही।ां उसे मानर्ता की एकता तथा सम्पूणतवा का प्रत्यिानुभर् हो जाता है एर् ांर्ह सब प्रकार के अन्धवर्श्र्ासों तथा दुरुाग्रहों से मुक्कत हो जाता है। उसकी समस्त शत्क्कत का उपभोग मानर्-सेर्ा में होता है, क्कयोंकक र्ह जानता है कक ईश्र्र सब मनुष्यों में है एर् ांसब मनुष्य ईश्र्र में है ।[43] जो सबको एक में देखता है, त्जसमें अहम् ्सर्भर्ार्ना से दब गया है, र्ह पाप कर ही नहीींसकता। र्ही भगर्द्गीता का पुरुर्ोत्तम, बौद्धों का बुद्ध, सच्चा ब्राहाण है त्जसे अपनी दररद्रता का गर् वहै, जो अपनेकष्टों में ही प्रसन्न है तथा जो शात्न्त एर् ां आनन्द को हृदय में रखकर त्स्थतप्रज्ञ हो जाता है, र्ह सब मनुष्यों, पशुओ ांतथा पक्षियों को प्रेम करता है, अन्याय का प्रततकार नहीींकरता र्रन् ्प्रेम से उसे ेजीत लेता है। उसमें मानर्-आत्मा का श्रेेष्ठतम स्र्रूप ददखाई पडता है। उपतनर्त्कालीन ऋवर्यों के युग से सन्ांयाभसयों के आदश वसे भारतीय जीर्न सदा ही प्रभावर्त रहा है। इस आदशव के पालन करने के भलए राजा अपनेदण्ड तथा मुकुट को छोडकर दररद्रतासूचक कपडे पहन लेता है, योद्धा वर्जय-गर् वभूल कर अपने अस्र्-शस्र् तोड फेंकता है एर् ांकुशल व्यापारी तथा मजदूरू दृढ़तापूर्कव फल को भगर्ान् ्पर छोडकर अपनेकतव्वय-पालन में सलांग्न हो जाता है ।

सन्ांयासी मानर्ता के उपकारक एर् ांसहायक होतेहैं। उनमें जो सर्श्रेवष्ठ हैं, जैसे ेशकांर तथा रामानुज, रामानन्द और कबीर, र्े तो जातत के रक्कत में भभदां गए हैं एर् ांउन्होंनेही उसके धम वकी नीर्ां डाली है। यह सच है कक मध्य कालीन योरोप की ही भातांत भारत में भी बहुतेरे सन्ांयाभसयों ने सासांाररक धचन्ताओ ांसे बचनेके भलए एकान्त

41 10, 4।

42 शिुनीतत 1, 44

43 सर् वभूतमयम् ्हररम्–वर्ष्णुपुराण1, 19, 91

में भाग जाने की गलती की। मठों की सुनसान कोठररयों में अथर्ा पहाडों की कन्दराओं में जीर्न त्रबताने र्ाले ये सन्ंयासी गहन अन्धकार के पथ-भ्रष्ट यिी हैं। पाप के तनरन्तर ध्यान एर्ं अपनी मुत्क्कत की धचन्ता में सलंग्न ये तपस्ी, मालूम पडता है, अपनी आत्मा की रिा करनेकी व्यग्रता में ही उससेहाथ धो बैठे। त्जस प्रकार मध्ययुगीय योरोप में मठ-जीर्न का जो तूफान उठा र्ह ईसा के उस उपदेश के त्रबल्कुल प्रततकूल है जो हमसे कहता है कक हमें अपनेको वर्श्र्ासपिा सेर्क बनाना है, तनरीिण-काय वमें तनयुक्कत चौकीदार, कायाध्वयि त्जसके बहुत बडी त्जम्मेदारी है, पिु त्जससे र्वपता अपनेगुप्त रहस्यों की चचाव करता है, बनाना है, उसी प्रकार जीर्न-सघांर् वसे पराङमुख ये पुरुर् यथाथ वसन्ंयासी नहींहैं। सन्ंयासी तो लोक-कल्याण के साथ सब कुछ सहन करने को सदा तैयार रहता है।

उन्नतत के भशखर पर पहुंचने के भलए, ब्राह्मण बनने के भलए, यह आर्श्यक नहींहैं कक धम-वतनयमों का अिरशः पालन ककया जाय। ऐसेउदाहरण भी भमलते हैं जहांधम-वर्रूवृत्त एकाएक जाग पडी है-तनतान्त साधारण प्रतीत होने र्ाले लोगों में उच्च आध्यात्त्मकता की बाढ़ तथा उच्च र्गीय जीर्न की भशिा से हीन व्यत्क्कतयों में आश्चयजवनक चाररत्रिक वर्कास भी देखने र्को भमलता है। धाभमकव तनयम तो आध्यात्त्मक वर्कास के सामान्य रूप के द्योतक हैं। तनम्न श्रेणी के लोगों के तनरथकव श्रम-साध्य तनयम-पालन पर तथा कमकवाण्ड के औधचत्य के सम्बन्ध में धचन्तापूण वप्रश्नों पर मुक्कतात्माए र्ंहांसा करती हैं, सभी र्णों के लोग सन्ंयास-आश्रम में जा सकते र्हैं, पर त्रबना तीनों ऋणों से उऋण हुए ककसी को भी मुत्क्कत की इच्छा नहींकरना चादहए'[44] - देर् ऋण से स्तुतत एर्ं प्राथनवा के द्र्ारा, वपतृ ृऋण से दान, समाज-सेर्ा तथा सन्तानोत्पादन के द्र्ारा, ऋवर्-ऋण से वर्द्यादान के द्र्ारा उऋण हुआ जा सकता है।

जीर्न से वर्रक्कत र्योर्द्ृध तथा सासांररक सफलता के भलए समुत्सुक युर्ा आदद सभी प्रकार के लोगों के भलए दहन्दू–धम वमें स्थान है। चारों र्ण वकुछ ऐसे वर्भशष्ट र्ग वनहींहैं त्जनमें दहन्दुओं को ही वर्भक्कत ककया जा सकता है प्रत्युत् र्ह तो एक ऐसा र्गीकरण है त्जसमें सम्पूण वससांर का समार्ेश हो सकता है। त्रबना शत्क्कत-प्रयोग के एर्ं त्रबना शोर्ण की भार्ना के एभशया के एक बहुत बडेभाग को दहन्दू–धम वने सभ्य बना ददया है। यह काम उसनेसाम्राज्य-वर्स्तार के प्रलोभन में आकर नहीं ककया र्रन् ृसास्ंकृततक वर्जय की कामना से, अपनी आध्यात्त्मकता से लोगों के वर्चारों एर्ं हृदयों को प्रभावर्त करके ककया है। दहन्दू–प्रततभा की रचनात्मक प्रर्ृवृत्त मध्य एभशया में त्स्थत खोतान सेलेकर भारत एर्ं ऑस्रेभलया के बीच में त्स्थत जार्ा द्र्ीप तक सर्वि कला एर्ं जीर्न में फैल गई। ईसा की दूसरी शताब्दी में जार्ा एक दहन्दू–उपतनर्ेश था और तब से बराबर र्ह दहन्दू ूअथर्ा बौद्ध रहा है। आज जापान, चीन तथा बमा वभारत को अपनी आध्यात्त्मक मातृभूभम मानतेहैं, र्ैसेही जैसे ेईसाई कफलस्तीन को। रूस से चीन तक समरकन्द ततब्बत आदद जहा ंभी हम जायेंहमें दहन्दू ूसभ्यता का प्रभार् भमलेगा। यह सब त्रबल्कुल साधारण प्रतीत होता है जब तक यह याद करते ेहैं कक भारतीय सभ्यता के धचन्ह पत्श्चमी एभशया में, दजला एर्ं फरात नददयों से भसधांचत मेसोपोटाभमया के दोआब में भी पाये जाते ेहैं। र्ोगज कोय में जो खुदे हुए लेख पाये गये हैं, जो योग्य पत्ण्डतों की राय में कम-से-कम 1400 र्र्वईसा पूर् वके हैं, र्े हमें

---

[44] मनुस्मृतृत 6, 35

उनकी बात बताते ेहैं जो दहन्दू–देर्ताओांके उपासक थे। भारतर्व्कोयह इतना बडा प्रभार् इसभलए नही ांहै कक उसका धम वइतना प्राचीन अथर्ा उसका साम्राज्य बडा है, इसभलए भी नही ांकक उसने सहाांरक शस्त्रास्त्रों का

तनमाकया है अथर्ा उसने बहुत बडी मिाा में बल-प्रयोग ककया है, र्रन् ्इसभलए कक इस नानात्र् के नीचे े एकत्र् का ज्ञान उसे ेथा । जहा ांभी भारतर्ासी गये र्हा ांसब पदाथों का एकता भगर्ान् ्में कर लेनेकी भार्ना भी उनके साथ गई। त्जतने महान् ्वर्चार भारत में आये उन सबका सश्ांलेर्ण इसी रूप में ककया गया। उसने सभी धमों का स्र्ागत ककया, क्कयोंकक ध्यान की नभस्पशी उच्चता से उसनेयह अनुभर् कर भलया कक पर्तव-भशखर पर का आध्यात्त्मक प्रदेश एक ही है यद्यवप घादटयों से उस तक पहुांचनेके माग वभभन्न-भभन्न हैं। जो लोग त्रबना यह जानेकक सब रास्ते ेएक ही चोटी तक पहुांचने के वर्वर्ध माग वहैं, मैदान में भटकतेकफरते थे,े उनको उसनेबताया - "आखों खोलो । घाटी की र्स्तुएां हमें अलग ककये हैं। चोटीपर हम सब एक हैं। पहाडी के नीचे ेखडे ेरहने पर इस माग व की वर्र्धता का अर्थ कुछ अथ वहै; ककन्तु अगर हमें इस बात का ज्ञान हो जाय कक दहमाच्छाददत भशखरों पर उनका क्कया महवर् है तो हमें पता चलेगा कक र्े सब एक ही परमात्मा तक पहुांचनेके भभन्न-भभन्न रास्ते ेहैं।" सम्भर् है कक अपनी समन्र्य-शत्क्कत के कारण भारतर्व्एक बार कफर ससांार के उन प्रबल धाभमकव प्रर्ाहों में सामजांस्य स्थावपत कर सके त्जनका सत्म्मलन उसी अन्तरात्मा में हुआ है।

# ईश्र्र के सम्बन्ध में दहन्दू–मत

मानर्-सस्ांथा होने के नाते ेधम वएक जीर्धारी प्राणी के समान है। इसमें उसी प्रकार की सम्पूणतवा आत्म-र्ैलिण्य होता है जैसा अन्य जीर्धाररयों में। र्ह अचल, त्स्थर न होकर सतत गततशील रहता है। उसका तवर् उसके वर्गत जीर्न में नहीां भमल सकता है और न उसके र्तमवान रूप में ही र्ह पाया जा सकता है। धम वकी व्याख्या हमें उसके र्ास्तवर्क अथ,व उनके लक्ष्य को ध्यान में रखकर करनी होगी, उसकी अस्फुट अथर्ा अधप्रवस्फुदटत अभभव्यत्क्कत में नहीां, ठीक र्ैसे ही जैसे ेयेम्पीडाककल्स की व्याख्या अररस्टादटल ने की थी। (मेटाकफत्जक्कस 1, 985 अ 3)। यदद हम ककसी धम वकी िभमक अर्स्थाओ ांके इततहास का अध्ययन करें तो हम देखेंगेकक उसमें एक ऐसा भौततक गम्भीर तवर् है जो सदा नये-नये रूपों में अपनेको अभभव्यक्कत करने का प्रयत्न ककया करता है, पर जो कभी पूणतवः व्यक्कत नहीांहो पाता। यह र्द्धवमान आदश,व यह गत्यात्मक भसद्धान्त ही, जो ककसी भी वर्भशष्ट अर्स्था में अपूण वरूप से ही प्रकाभशत रहता है, र्ास्तवर्क तवर् है, यही उस समस्त ऐततहाभसक गतत का र्ास्तवर्क अथ वहै।

यदद हम दहन्दू–ूधम वका तवर् जानना चाहें तो र्ह हमें आध्यात्त्मक अनुभूतत की र्ास्तवर्कता में भमलेगा। अपनेअन्तस्तल में हमनेसत्य को दृढ़तापूर्कव पकड रखा है। दहन्दू ूधम वके सम्पूण वइततहास में धम वकी इस आभ्यन्तररकता पर, उसके र्ैयत्क्कतक अथर्ा प्रयोगात्मक स्र्रूप पर, जोर ददया गया है। जब दहन्दू ू र्ैददककाल को अपनेसस्ांथापकों का युग कहकर स्मरण करते ेहैं, तो इसका अथ वयह होता है कक र्ैददक ऋवर् पथ-प्रदशकव थे, अध्यात्म देश के प्रथम अन्र्ेर्क थे। ऋवर् शब्द 'दृश' धातु से बना है त्जसका अथ व'देखना' होता है। धम वका अथ वदृष्ट वर्र्य दशनव, अनुभूतत होता है। ऋवर्यों ने त्जस सत्य की घोर्णा की है र्ह तकव अथर्ा तनयभमत दशनव का फल नहीां हे प्रत्युत् ्आध्यात्त्मक सूझ का पररणाम है। ऋवर्यों को र्ेदे में तनबद्ध सत्यों का रचतयता नहीांसमझा जाता र्रन् ्र्े तो उनके देखनेर्ाले ेभर हैं त्जन्होंनेअपनी आत्मा का वर्श्र्ात्मा से तादात्म्य करके उन चरम-सत्यों का दशनव कर भलया है। उनके र्चनों का आधार आर्ेशपूण वसूझ नहीांहै र्रन् ्हृदय में त्स्थत शत्क्कत एर्ांजीर्न का अनर्रत अनुभर् है। "सदा पश्यत्न्त सूरयः।" र्ेदों को सर्श्रेष्ठ प्रमाण इसीभलए माना जाता है कक र्ास्तवर्कता ही सबसे बडी प्रामाखणकता है। ईश्र्र हमारा वप्रय आदश वनहीांहै, र्ह तो उस सत्य का नाम है त्जसका हम अनुभर् करते ेहैं। आध्यात्त्मक अनुभूतत ककसी काल्पतनक वर्चार को नहीां, सत्य के तनकटतम साहचय वको कहते ेहैं।

त्जस महात्मा ने भगर्ान् ्का साहचय वप्राप्त ककया है केर्ल उसके सम्बन्ध की चचा वसुनकर ही उसे ेनहीां जाना है, र्ह उसकी पररभार्ा नहीांचाहता। उसके भलए शकाां अथर्ा अवर्श्र्ास करना असम्भर् है। उसके इस अद्भुत एर् ांसरल तनश्चय को भी डडगा नही ांसकता; ककन्तु त्जन्होंने धम वका ज्ञान दूसूरों से सुनकर प्राप्त ककया है, जो धाभमकव बनने का कष्ट तो नहीांउठाना चाहते पर धम वसे प्राप्त होने र्ाले सन्तोर् का उपभोग करना चाहते ेहैं, जो धम वका पथ-दशकव चमत्कारपूण वकहातनयों अथर्ा कमकवाण्ड की सस्ांकार-पद्धतत को बनाना चाहते हैं, उन साधारण मनुष्यों के भलए इस अनुभूतत को धचिात्मक रूप देनेकी आर्श्यकता है। इसके अततररक्कत अपने अनुभर् को दूसूरे पर व्यक्कत करने का, उसके रहस्यों को वर्शद रूप देनेतथा वर्रुद्ध आलोचना से उसकी

 यथाथतवा की रिा करने का एकमिा साधन भार्ा तथा तकव है। दहन्दू–धूम वमें ईश्र्र की व्याख्याए ांसभी प्रकार की
सस्ांकृतत के लोगों के अनुरूप पाई जाती हैं-त्रबल्कुल स्थूल भी तथा परम सूक्ष्म भी।

इस अन्तज्ञानव से युक्कत व्यत्क्कत जब अपनेअनुभर् को साधारण तकव की भार्ा का रूप देना चाहता है तो ई एक अतनर्ाय वप्रबल वर्श्र्ास के साथ, जो स्र्ाभावर्क है, इस अलौककक सत्य का प्रततपादन करता है। ई जानता है कक आत्मा का तनकट, सीधा तथा तनत्श्चत सम्बन्ध एक ऐसेलोक से है जो इत्न्द्रय जगत् ्से भभन्न है, जो इत्न्द्रयों के इस सामान्य लोक सेअत्यधधक तेजपूण वहोकर भी उससेककसी प्रकार कम सत्य नहीांहै। तकव, अन्तज्ञानव एर् ांआध्यात्त्मक अनुभूतत सब एक स्र्र सेउस सत्ता की यथाथतवा के सिाी हैं त्जसका मूल स्र्रूप आध्यात्त्मक है, जो इस सबका आधार, "अमरता एर्ांमृतूयु त्जसकी प्रततच्छाया है" (यस्य छायामृतम् ्यस्य मृतूयुः - ऋग्र्ेद 10-121)। आध्यात्त्मक अनुभूतत का मुख्य लिण उसकी अतनर्चवनीयता है। जब हम अनुभूतत सत्य का र्णनव करना चाहते हैं तब हमें रूपों अथर्ा शब्दों का सहारा लेना पडता है, पर सत्य को व्यक्कत करने के भलए बडे-से-बडेशब्द अथर्ा रूप भी अपयाप्वत हैं। बुद्ध आध्यात्त्मक अनुभूतत की यथाथतवा स्र्ीकार करते ेहैं पर र्े उसे ेककसी स्र्तिां सत्ता को ज्ञापक नहीांमानते। उनकी दृत्ष्ट में यह मत कक आध्यात्त्मक अनुभूतत ईश्र्र का सिाात्कार कराती है, अनुमानमिा है, प्रत्यि ज्ञान नही।ां बुद्ध प्रत्यि को छोडना नहीां चाहते। र्े इतना ही कहकर सन्तुष्ट हो जाते ेहैं कक इस व्यक्कत र्स्तु-जगत् ्में एक सूक्ष्म भार्-जगत् ्भी व्याप्त है। श्र्ेष्ठ दहन्दू–दाशतवनक तथा

**धमवयवस्थापकशर्चाररों** का कहना है कक सभी रूपों में भमथ्या का अांश रहता है एर् ांसत्य रूपों से परे है। उपतनर्द्, बुद्धध और शकांराचाय वतथा उनके अनुयायी मानते ेहैं कक अवर्भक्कत, अद्र्ैत इस अनेकरूप, अतनत्य-जगत् ्से परे अथर्ा उसी में व्याप्त वर्शुद्ध तेजपूण वआत्मा एक तनगुणव सत्ता है त्जसका न तो सम्यक् ज्ञान ही सम्भर् है और न उसका र्णनव ही ककया जा सकता है। हम न मानकर भी इस बात को मान लेतेहैंकक ईश्र्र की महत्ता अज्ञेय है, ई मन तथा र्चन की पहुांच के बाहर है। "ई ज्ञात से भभन्न है तथा अज्ञात से भी श्र्ेष्ठ है (केनोपतनर्द् 1, 3)। "र्हाांतक दृत्ष्ट नहीांपहुांचती, मन तथा र्ाणी भी नही ांपहुांचती" (र्ृहदारण्यक उपतनर्द् 3, 8, 8) पर इस बौद्धधक तथा आध्यात्त्मक वर्नम्रता में एक खतरा है। ब्रह्म के वर्र्य में मौन रहने से बुद्ध पर नात्स्तक होनेका आिेप ककया गया। उस चरम सत्य को सर्थवा सम्बन्धहीन एर् ांतनगुणव बताकर हम उसे ेकेर्लमिा सत्ता-शून्य बना देते े हैं। शकांराचाय वका कहना है कक अनुभर्मूलक गुणों के अभार् को सत्ता की त्जस अलौककक महत्ता का अनुभर् जीर्न ने ककया है उसको केर्ल व्यक्कत कर देनेका प्रयास है-ई ब्रह्म जो पूणतवः भभन्न है, त्जसके वर्र्य में तनर्ेध र्ाक्कय को छोडकर और कुछ कहा ही नहीांजा सकता।

दहन्दू–धूम वकेर्ल तनर्ेधात्मक व्याख्या से सन्तुष्ट नहीांहुआ। आध्यात्त्मक अनुभूतत के तीन गुण होते े हैं-सत्य, ज्ञान तथा तनरर्पेिता। चूकांक हमारी अनुभूतत का कुछ भाग इन गुणों से युक्कत होता है, अतएर् यह भी सम्भर् है कक अनुभूततमिा का स्र्रूप इसी प्रकार का हो। त्जस चेतना को प्रत्यि, तनरर्पेि अन्तज्ञानव होता है ई र्ही ददव्य चेतना है जो हमारा आदश वहै। उस ब्राह्मी त्स्थतत में र्ास्तवर्कता स्र्य ांअपने-आपको देखती है, स्र्य ां अपने-आपको जानती है एर्ां पूणतवः स्र्तिां रही है। तब ऐसा कुछ शेर् नहीांरह जाता जो उसका अपना ही स्र्रूप न बन जाय अथर्ा जो उसको अज्ञात रह जाय और तब सभी प्रकार के द्र्न्द्र्ों का अन्त हो जाता है। यही पूण वसत्ता,

 पूण वचेतना, पूण वस्तिांता की त्स्थतत है, यही सत्,् धचत्,् आनन्दां है। वर्चार तथा उसके वर्भभन्न रूप, इच्छा तथा
किया, प्रेम तथा समत्र् का र्ही आधार है। उसके ये मानर्ी अ ांश कष्ट, ि ोभ एर् ांद्रन्द्रपूण वहोते ेहैं। इसीभलए जो शान्त तथा मानर्ी है र् अनन्त एर् ांपूण वब्रह्म की दृत्ष्ट से अपयाप्वत है। परमात्मा यथाथ वहै, सत्य नहीां; पूण वहै, प्रशस्त नही।ां उसकी स्तिांता ही उसका जीर्न है, र्ही उसकी मूलभूत स्र्ाभावर्कता है।

यद्यवप इस अध्यात्म-तवर् की पूणतवा सासाांररक पदाथों से भभन्न है, कफर भी र् हममें पाई जानेर्ाली श्रेष्ठतम र्ृवृत्तयों से बहुत कुछ भमलती है। यदद ब्रह्म का स्र्रूप मानर् की आत्मा से त्रबलकुल भभन्न होता तो उसका अस्पष्ट आभास भी पाना हमारे भलए सम्भर् न होता। हम यह भी न कह सकते कक ब्रह्म सर्थवा भभन्न गुणर्ाला है। मनुष्य की आत्मा में उसके अन्तस्तल में, उसकी बुद्धध के भी परे एक ऐसा तवर् है जो ब्रह्म से भमलता-जुलता है। मनुष्य के हृदय में ही ब्रह्मानुभूतत का आधार मौजूद है। ईश्र्र का प्रकट होना तथा मनुष्य का धचन्तन एक ही र्स्तु के दो पहलू हैं। ईश्र्र एर् ांमनुष्य की आत्मा में साम्य-दशनव ही अध्यात्म-ज्ञान की आधारभशला है। र् केर्ल अनुमान का वर्र्य नहीांहै। आध्यात्त्मक अनुभूतत में आत्मा तथा परमात्मा का भेद रहता । हम परमात्मा के अशां हैं एर् ांहममें र्ही प्रततत्रबत्म्बत हो रहा है। 'तत्र्मभस' (तुम र्ही हो) महार्ाक्कय एक अनुभूतत सत्य का र्णनवमिा है। बाइत्रबल का यह र्ाक्कय - 'ईश्र्र ने मनुष्य को अपनेही रूप का बनाया; उसनेउसे े ईश्र्र के ही रूप का बनाया।' (उत्पवत्त प्रकरण 1, 27)। हमें बताता है कक "मनुष्य की आत्मा में ही ईश्र्र का दीपक है।" (प्रार्ब व20, 27 ) । प्लैटो के मतानुसार मनुष्य में सूक्ष्मरूप से अमरत्र् शत्क्कत रहती है, त्जसका स्र्ामी बनने के भलए उसे ेअतनत्य सासाांररक पदाथों से वर्रत्क्कत का अभ्यास करना होगा। इसी गहन सत्य को ईसा इस प्रकार प्रकट ककया करता था- 'म ैंऔर मेरा वपता एक ही हैं।'

ईश्र्र र् अनन्त तवर् है जो हमारे भीतर भी है और बाहर भी। यदद हमारे भीतर परमात्मा न होता तो हमें उसकी आर्श्यकता का अनुभर् ही न होता; यदद हमारे बाहर र् न होता तो उपासना की कोई जरूरत न रहती। जब हम परमात्मा को मनुष्य की आत्मा से श्रेष्ठ स्र्रूप का बताते ेहैं तो हमारा धम वभत्क्कतपूण वहोता है। ईश्र्र-सम्बन्धी हमारा सर्ोच्च ज्ञान भी अपूण वही होता है। सदा कुछ-न-कुछ ऐसा शेर् रह ही जाता है जो अज्ञात या अनुच्चाररत है। धाभमकव चेतेना इस बात पर जोर देती है कक उस श्रेष्ठ तवर् के साथ साहचय वका अनुभर् करें त्जसके साथ हमारे तादात्म्य की सम्भार्ना न हो। भत्क्कत कई प्रकार की होती है। एक भक्कत अपने प्रभु के समीप चरम दैन्य की भार्ना लेकर उपत्स्थत होता है और दूसूरा अपने उस वप्रयतम के प्रेमालाप में मग्न रहता है त्जसकी दया की आशा अधम-से-अधम पापी भी कर सकता है। उस सर्ोत्तम तवर् से ईश्र्र की तुलना करना, त्जसका ज्ञान हमको है, ककसी अन्य र्स्तु से तुलना करनेकी अपेिा कही ांअधधक सत्य के नजदीक है। भक्कत उस महान् ्सत्य को एक ऐसे साकार ईश्र्र का रूप देना चाहता है जो ससाांर का मूल, पथ-दशकव एर् ांअन्त है। ब्रह्म को तनरपेि तवर् समझनेअथर्ा उसे ेशरीरधारी ईश्र्र माननेमें कुछ मौभलक भेदे नहीांहै केर्ल दृत्ष्टकोण का अन्तर है। अन्तर इतना ही है कक एक हमें ईश्र्र के र्ास्तवर्क स्र्रूप का और दूसूरा उसके उस स्र्रूप का जैसा र् हमारी इत्न्द्रयों को प्रतीत होता है। ईश्र्र का व्यत्क्कतत्र् तो एक धचन्हमिा है और यदद हम उसकी लिाखणकता को भूल गये तो सत्य सेबहुत दूरू जा पडगें।

दहन्दू–धम वभारत के आध्यात्म-ज्ञान का तनदशकव है। ब्रह्म की एकता एर् ांसम्पूणतवा का ज्ञान ही इसका आधार है। अपनेइस वर्श्र्ास के कारण कक मनुष्य-जीर्न सर्व एर् ांसदैर् भगर्ान् ्का ही अ ांश होता है, उसने धाभमकव उदारता का बहुत अभ्यास ककया है। यदद हममें कुछ लोग ग्रीष्म की सधांया के समय अन्तोन्मुख सूय-व सुर्मा का तनरीण करें तो सबकी भार्नाय ेंएर् ांवर्चार एक नहींहोंगे ेऔर उनका र्णनव भी तनश्चय ही भभन्न-भभन्न होगा, पर इस व्याख्या-वर्वर्धता के कारण हमें शकांालुअथर्ा नात्स्तक हो जाने की आर्श्यकता नही।ां

# इस्लाम और भारतीय वर्चारधारा [45]

**1**

---

[45] इस्लाम पर स्फुट वर्चार-लेखेक सर अहमद हुसेन के. सी. आई. ई., सी. एस. आई.; सम्पादक, खान बहादुरु हाजी ख्र्ाजा मुहम्मद हुसेन, गर्नमवेंट सेण्रल प्रेस, हैदराबाद (दक्षिण) ।

आज के युग में हम अनेक ददशाओांमें अपनेपूर्जवों की अपो एक उच्चतर ज्ञान और अधधक व्यापक दशनव की उत्कट खोज के धचन्ह पाते हैं जैसा कक शायद ही कभी हुआ हो। अब धाभमकव वर्चारों के परम्परागत बन्धन ढीलेपड रहे हैं और वर्चार-स्तिांता तथा अपने जीर्न को र्तमवान समय की आर्श्यकताओांऔर आकिाांाओांके अनुरूप नये भसरे से पररर्ततिव करने के अधधकार का काय वकरते ेहैं। आधुतनकता से प्रभावर्त मत्स्तष्क को प्राचीन ज्ञान के तनष्कर् वऔर प्राचीन वर्नम्र श्रद्धाओांकी अपो नूतन वर्चार अधधक आकर्कव प्रतीत होते ेहैं। आज के युग की अत्स्थरता पुराने धमों को इस बात की चुनौती है कक रे् अपनी उपादेयता और उपयुक्ततता को एक बार कफर प्रमाखणत करें। सभी उन्नततशील धमों के आध्यात्त्मक नेता अपनेपरम्परागत वर्चारों पर मनन करने में सलांग्न हैं ताकक रे् र्द्धवमान ज्ञान और अनुभर् से प्रेररत आिपों से उनकी रिा कर सकें। त्जस पुस्तक की म ैंआलोचना कर रहा हूां उसमें सर अहमद हुसेन महोदय ने, जो कक एक सम्भ्रान्त, उदार तथा धमतवनष्ठ भारतीय मुसलमान हैं, उन ददशाओ ांकी ओर सकेंात ककया है त्जनमें इस्लाम की व्याख्या करना आधुतनक वर्ज्ञान और दशनव सेसामजांस्य स्थावपत करानेके भलए आर्श्यक है। इस पुस्तक से हमें इस बात का आभास भमलता है कक इस्लाम के भार्ी पुनतनमवाणव में भारतर् वकी क्कया देन होगी।

ककसी धम वका ककसी देश वर्शेर् में क्कया रूप होगा, यह उसकी सास्ांकृततक परम्परा और राष्ट्रीय वर्भशष्टता पर तनभरव करता है। अरब में इस्लाम केर्ल एक सरल ककन्तु उच्च ईश्र्रर्ादी धम वथा, त्जसमें आगे े आनेर्ाली शतात्ब्दयों में उत्पन्न हुई बारीककयों के भलए कोई स्थान नहीांथा। जब इसने फारस के लोगों पर अधधकार जमाया तब सेभमदटक भार्नाओ ांने रहस्यर्ादी भार्नाओांके सामने मस्तक टेका। आददम अरब-परम्परा की अनुपम सुन्दरता का स्थान एक गहन दशनव तथा आकर्कव धम-वकथाओ ांने ले भलया, त्जनमें मुहम्मद एक रहस्यपूण वव्यत्क्कत बन गये जो न पूणतवः इस लोक के थे ेऔर न स्र्ग वके। भारतीय जनता में लगभग 7 करोड व्यत्क्कत इस्लाम-धम वको मानतेहैं और उनमें से अधधकाशां उसी नस्ल के हैंत्जसके दहन्दू।ू यह स्र्ाभावर्क है कक भारतीय इस्लाम की अपनी वर्शेर्ताएांहैं। अभी तक भारतीय मुसलमान इस्लाम की व्याख्या करने में अपने आध्यात्त्मक र्ांशानुगत ज्ञान का उपयोग करना अपनेभलए गौरर् र्स्तु समझता था; परन्तु इधर, आश्चय वहै कक हमारे कुछ भशक्षित मुसलमान भाइयों के हृदय में एक वर्धचि भ्रम घर करता जा रहा है चूकांक उन्होंनेइस्लाम धम व स्र्ीकार कर भलया है, रे् स्पेने के मूरों और बगदाद के खलीफाओांके र्ांशज हो गये हैं। रे् सास्ांकृततक और सामात्जक दृत्ष्ट से अपने को अपनेदहन्दू–पूडोभसयों से भभन्न मानते ेहैं। अपनेधाभमकव वर्श्र्ास अथर्ा बौद्धधक वर्चारों को बदलकर हम अपनी सम्पूण वमानभसक दशा को तो नहीांबल देते। धम-वपररर्तनव का अथ वयह तो नही ां होता कक हम अपनेदेश के इततहास अथर्ा उसके आदशों से वर्लग हो जाय।ें आज के युग की यह अभभनन्दनीय त्स्थतत है कक मुसलमानों के भारतीय नेता भारतर् वकी आध्याभमक परांपरा की एकता का अनुभर् करने लगेहैं और उन कृत्रिम वर्र्मताओ ांतथा वर्भभन्नताओ ांका वर्रोध कर रहे हैं त्जन्हें झूठे पैगम्बरों और कुदटल राजनीततज्ञों ने उकसाया है। हमारा धम वचाहे जो हो परन्तुहमारी रगों में एक ही खून प्रर्ादहत हो रहा है और हमारी आध्यात्त्मक परम्परा एक ही है। 'ए. ई.' जो बात आयरलडैं के वर्र्य में कहता है र्ह भारतर् वके वर्र्य में और भी अधधक सत्य है। हम उन कुछ अर्भशष्ट जाततयों में सेएक हैं, त्जनकी परम्परा का स्रोत देर्ताओ ांऔर दैर्ी

भारत की अन्तरात्मा 39 घटनाओ ांसे सम्बद्ध है।'[46] भारतर्् वका इततहास अतीत की धुधांली स्मृतृतयों तक जाता है

और इसी कारण हमारी

अनेक पद्धततयाांहमें प्रभावर्त करती हैं और कभी-कभी हमारी इच्छा के प्रततकूल अन्तरात्मा में एक अद्भुत रूर झकृांत करती ांतथा हमें वर्स्मृतृ घटनाओांकी याद ददलाती और हमारी वर्स्मृतृ दृत्ष्ट को सकिय बनाती हैं। भारतात्मा एक आध्यात्त्मक तवर्् है जो हम सबको भारतीय बनाती है। एक व्यापक अध्यात्म की आधार-भशला के सहारे इस्लाम की सत्यतम, उच्चतम, और उत्कृष्टतम अथ वमें व्याख्या करने का, ताकक ह उस धम वसे पृथक् हो जाये त्जसेएक अभशक्षित कट्टरपथांी, कुदटल राजनीततज्ञ अथर्ा अनुदान मुल्ला स्र्ीकार करता है, भारतीय मुलमानों का ही अधधकार है। यदद भारतीय मुसलमान अपनी पैतृक् परम्परा और नर्-स्र्ीकृत धम वमें सामञ्जस्य पैदा कर ले तो ह इस्लाम के उन पहुलओ ांको बल दे सकेगा जो अभी तक उदासीनता के भशकार रहे हैं; परन्तु त्जन्होंने सचमुच सभ्यता तथा सस्ांकृतत के वर्कास और एक मृतप्राय सस्ांथा को नर्जीर्न प्रदान करने में सहयोग ददया है। साथ ही ह उन तनस्सार छोटी-छोटी बातों का ततरस्कार कर सकेगा जो ऐततहाभसक घटनाओ ां के कारण आर्श्यकता से अधधक महवर्् पा गई हैं। ह उस रूदढ़-प्राप्त धम वके कुप्रभार्् को तोड सकेगा जो जनता के जीर्न की ओत-प्रोत ककये हैं और इस्लाम-जगत् ्के समि मुहम्मद की भशिाओ ांका ऐसा भाष्य प्रस्तुत कर सकेगा जो, म ैंतनश्चयपूर्कव कह सकता हूां, उनकी भशिाओ ांके अधधक सत्न्नकट होगा, उन रूदढ़र्ादी पररर्द्धवनों के नही ांत्जनकी सृतृष्ट उनके बाद के अनुयातययों ने की है। श्री अमीर अली ने अपनी पुस्तक 'इस्लाम की अन्तरात्मा' में (त्जसका इस आलोचना के भलखने ेमें मनैं तनस्सकोीच उपयोग ककया है) और सर अहमद हुसेन ने अपनी पुस्तक 'इस्लाम पर स्फुट वर्चार' में उन सुन्दर वर्चार-कुसुमों का आभास ददया है जो भारतीय अतीत की भूभम में वर्कभसत होंगे।

## 2

मुहम्मद के जीर्न के त्जस पहलू का भारतीयों पर सबसे अधधक प्रभार्् पडता है, ह है उसकी गहन धाभमकव भार्ना। सृतृष्ट के रहस्योद्घाटन के प्रयत्न में मुहम्मद प्राथनवा और मनन के भलए हीरा पर्तव की एक कन्दरा में वर्चार-तनमग्न और समाधधस्त रात-रात बैठे रहते ेथे। उनकी दृत्ष्ट में धम वका अथ वथा सत्य को पहचानना एर्् ांजीर्न में उसे मूतरूवप देना। धम वऔर जीर्न को पयायव बताने का अथ वयह होता है कक हम धाभमकव वर्श्र्ासों और रूदढ़यों के प्रतत भी रै्सी धारणा बना लेतेहैं। धाभमकव वर्श्र्ास उसी सीमा तक ठीक होते ेहैं जहा ांतक उनमें और जीर्न की घटनाओां में साम्य होता है। अनुभर्् धाभमकव वर्श्र्ासों की कसौटी है और यह प्रत्येक युग का कतव्वय है कक ह अनुभर्् के अनुरूप धाभमकव वर्श्र्ासों की नूतन व्याख्या करता जाए। सर अहमद हुसेन ने इस्लाम की जो नई व्याख्या प्रस्तुत की है ह न तो पूणतवः प्राचीन वर्श्र्ास के अनुकूल है और न पूणतवः उसकी वर्रोधी, र्रन ह इन दोनों के बीच की र्स्तु है (पृषृठ 8-9)। लेखक कुरान के शब्दों की उस शात्ब्दक व्याख्या कोई श्र्र-र्ाक्कय मानने के भलए तैयैार नहीांहै जो मुल्लाओांतथा मौलवर्यों ने प्रस्तुत की है र्रन्् ्उसनेउनका ह अथ व लगाने में, जो उसको युक्कतसगांत मालूम होता है, अपने को पूण वअधधकरी माना है। ऐसा करनेमें उन्होंने मुहम्मद की भशिा के प्राण का अनुगमन कक है, क्कयोंकक उन्होंने कही ांभी ऐसेबन्धन नहीांलगाये हैं त्जनके कारण भार्ी

---

46 'भाष्यकार'

मनुष्य जातत की आत्मा पर प्रततबन्ध लगे। ईश्र्र का ज्ञान मनुष्यात्मा के द्रारा ही सम्भर् है और हम यह वर्श्र्ास करने के भलए वर्र्श नहीींहैं कक त्जनको ऐसा ज्ञान हुआ था, उनमें से बुद्धधमान्–से-बुद्धधमान् ्व्यत्क्कत भी अपनेयुग की भूलों और भ्रमों से पूणतवः मुक्कत था। कुरान में ऐसी अनेक स्थानीय और अल्पकालीन महवर् की बातें हैं जो धम वके शुद्ध अथ वमें त्रबल्कुल अनार्श्यक हैं। सभी धमों के कट्टर और अनुदार अनुयायी भूल जाते ेहैं कक धम वकी शुष्क अत्स्थयाां सारहीन हैं, महवर् तो केर्ल उस भार्ना का है जो उन अत्स्थयों में प्राण-प्रततष्ठा करती है। (पृषूठ 12)। सर अहमद हुसेन ने इस्लाम और उस धम वका अन्तर प्रकट करने का उद्योग ककया है त्जसे े कुछ मौलर्ी कट्टरता के साथ प्रततपाददत करते ेहैं। 'म ैंइस्लाम को मुहम्मदी-धम वसे पृथक् मानता हूां। मुहम्मदी-धम वर्ास्तवर्क और शुद्ध इस्लाम नहीींहै। ई इस्लाम की आत्मा को भूल गया है और केर्ल उसके तनयमों की शब्दार्ली को याद ककये हैं' (पृषूठ 12 दटप्पणी 'क') ।

जब हम धम वके अनुभर्-गम्य पहलू पर वर्चार करते ेहैं तो हम देखते हैं कक सभी मतों के सचमुच धाभमकव व्यत्क्कत एक-दूसूरे के उससे कहीींअधधक तनकट हैंत्जतना कक र्े समझते ेहैं। दहन्दू–ूधम वकी उदारता के अनुरूप हमारे लेखक ने स्र्ीकार ककया है कक सभी धमों का आधार-सत्य एक है और उसने जलालुद्दीन रूमी के इस र्ाक्कय को अपने मत की पुत्ष्ट में उद्धृत ककया है- 'सभी धमों में मौभलक एकता है।"[47] भारतीय मुसलमान के भलए पृथक्ककरण की भार्ना को हृदयगांम करना असम्भर् है यद्यवप सेमेदटक धमों की यह एक प्रमुख वर्भशष्टता है। भारतर्् वअपनेइततहास के आदद काल सेधाभमकव स्र्तन्त्िता और धाभमकव सद्भार्ना का समथकव रहा है। इसी भार्ना के अनुरूप अकबर महान् ्ने सभी भारतीयों को एक ऐसेधम वके सूि में बाधांकर, त्जसकी कियाओांमें मुसलमान और दहन्दू ूएक-दूसूरे से सहयोग कर सकें, एक सुसगांदठत राष्र में पररणत करनेका उद्योग ककया था यद्यवप उस समय की त्स्थतत की प्रततकूलता के कारण ई अपनेउद्देश्य में सफल नहीं हो सका। उपतनर्दों की आदशर्वाददता से प्रभावर्त होकर, त्जसमें मूततपूवजा और अन्धवर्श्र्ास के भलए कोई स्थान नहीींहै और जो इस कारण ससाांर के सभी लोगों को स्र्ीकाय वहो सकती है, अकबर के प्रपौि द्रारा भशकोह ने 'मजमुए बहरैन' (अथात्व ् इस्लाम और दहन्दू–ूधम वके सागरों का सत्म्मलन) नामक पुस्तक की रचना की। उसने स्र्ीकार ककया कक दोनों ही धम वउच्च जीर्न का माग वददखाने ेकी पूरी ि मता रखतेह।ैं सर अहमद हुसेन का वर्श्र्ास है कक हम वर्भभन्न मागों का अनुसरण करते ेहुए भी समान मुत्क्कत-पद की प्रात्प्त कर सकते हैं। 'कृपया यह न भूभलए, मनुष्य अनेक हैं और मत्स्तष्क भी अनेक हैं; अतः त्जतने वर्चारशील मत्स्तष्क हैं उतनेही वर्भभन्न धम,व ईश्र्र-सम्बन्धी वर्भभन्न मत, उसके गुणों की वर्भभन्न कल्पनाए ांऔर सृत्ूष्ट तथा प्रलय की उतनी ही धारणाए ांसम्भर् हैं' (पृषूठ 24)। जो लोग मुसलमानों के आचारों से पररधचत हैं, उनके भलए शायद यह वर्श्र्ास करना कदठन होगा कक उपयुक्कवत मत कुरान की भशिाओां के अनुकूल है; ककन्तु यह ठोस सत्य है। यह भ्राांततमूलक वर्श्र्ास कक इस्लाम के अततररक्कत और कोई सच्चा धम वनहीींहै, कट्टरता, असहनशीलता और धमान्वधता का सृजन करता है और कुरान की भशिाओांके वर्रुद्ध है। 'कुरान की दूसूरी सुरा का पहला खण्ड हमें स्पष्ट आदेश देता है कक न केर्ल उसमें वर्श्र्ास करो जो मुहम्मद को व्यक्कत ककया गया था र्न् ्उसमें भी वर्श्र्ास करो जो मुहम्मद के पूर्वती सन्तों के

[47] महनईर, तृतीय, पृषूठ 12

द्वारा प्रकट ककया गया है। यह स्पष्टतः इस बात का प्रमाण है कक आज भी कई सच्चे ेधम वहैं और भवर्ष्य में भी अनेक सच्चे धम वरहेंगे ेत्जनमें इस्लाम केर्ल एक होगा और है। (पृषूठ 40-4)।'[48]

मुहम्मद की धाभमकव प्रततभा इसी से स्पष्ट है कक उन्होंने कोई सैद्धान्तिक परीण नहींरखा। उनके र्ाक्कयों के सग्रांह में प्रायः सर्प्रवथम र्ाक्कय है- 'जो व्यत्क्कत कहता है कक अल्लाह के अततररक्कत कोई दूसूरा देर्ता नहींहै, र्ह तनश्चय ही मोि प्राप्त करेगा।' मुहम्मद ने ईसाई और यहूूदी धमों के पृथृक्कत्र् की नीतत का वर्रोध ककया है और कहा है कक र्े सभी लोग मोि के अधधकारी हैं जो ईश्र्र में वर्श्र्ास करते ेहैं और उनके भसर्ा कोई भी स्र्ग वमें प्रर्ेश न पा सकेगा.... यदद यह सच है तो इसका प्रमाण दीत्जए। नहीं, र्ह हो ईश्र्र की ओर आकृष्ट होता है और उधचत काय वकरता है, ईश्र्र की कृपा प्राप्त करेगा।' (सुरा पचांक 105 - 106 ) । 'सचमुच मुसलमान और र्े जो यहूूदी, ईसाई अथर्ा सबाई हैं अथर्ा जो भी ईश्र्र में अत्न्तम ददन में वर्श्र्ास करता है और र्ह काय वकरता है जो ठीक है.... उनको ईश्र्र की कृपा प्राप्त होगी, उनको न ककसी र्स्तु का भय होगा और न उनको कोई दु:ःख होगा।' (सुरा पचांम 69)। वर्मल अन्तरद्दत्ष्ट के कारण मुहम्मद ने आचार को वर्चार की अपेिा अधधक महवर् ददया है। प्रत्येक धम वजो नेकी के बढ़ाने में सहायक होता है, उनके भसद्धान्त चाहे जो हों, स्र्ीकार करने योग्य है; क्कयोंकक यदद हम ईश्र्रेच्छा का पालन करेंगे ेतो हमें धम वके भसद्धान्त भी मालूम हो जाएगें। 'हमनेप्रत्येक को एक तनयम और एक माग वबताया है और यदद ईश्र्र की इच्छा होती तो र्ह सबको एक धम वको अनुयायी बना सकता था। परन्तु उसनेऐसा नहीं ककया ताकक र्ह तुम सबकी उस माग वमें परीिा कर सके जो उसनेअलग-अलग तुम सबको बताया है। इसभलए अच्छे कायों में तनष्ठा बढ़ाओ। तुम्हें ईश्र्र के पास लौटकर जाना है और र्ह तुम्हें

---

48 जलालुद्दीन रूमी की मनसर्ी पत्ांक्कतयों का तनम्नाकांकत साराशां व्यक्कत करता है कक हमें तनम्न कोदट की उपासना-वर्धधयों से क्कयों सहानुभूतत रखनी चादहए और उनकी सदाशयता में वर्श्र्ास करना चादहए-'मूसा नेएक ददन ग्रीष्म ऋतु में एक वर्क्षिप्त गडररये को ईश्र्र की प्रततष्ठा पर आिेप करते ेहुए प्राथनवा करते ेसुना और र्ह घबरा उठा, क्कयोंकक गडररया कह रहा था, 'परमात्मा, कैसा अच्छा होता कक म ैंजान पाता कक तूकहाां है ताकक म ैंतेरी सेर्ा कर सकता, तेरे बालों में कांघी कर देता, तेरे जूतों की भमट्टी झाड देता, तेरे कमरे में झाड़ू लगा देता और तेरे भलए तनत्य प्रातःकाल दूधू और शहद ले आया करता।' मूसा नेकहा, 'अरे अधमी। र्ाग्धारा को रोक ! तू ककससे बातें कर रहा है? क्कया तू सर्शवत्क्कतमान् ्परमेश्र्र अल्ला के प्रतत यह कह रहा है? क्कया तू समझता है कक उसे ेतेरी मूखतवापूण वसेर्ा की आर्श्यकता है? क्कया तू सभी सीमाओां का उल्लघांन कर जाएगा? कुकमी! चेत जा, ताकक त्रबजली न फटे और हम सब तेरे कारण वर्नाश को प्राप्त न हों। र्ह तो त्रबना आांखों के देखता है, त्रबना कानों के सुनता है, न उसके कोई बेटा है, न स्त्री, न र्ह ककसी स्थान में बन्द है और न र्ह समय के अन्तगतव है। उस पर यदद कोई सीमाए ांकुछ प्रभार् रखती हैं तो र्े प्रकाश और प्रेम।' लत्ज्जत होकर बेचारे गडररये नेअपना कपडा फाड ददया। उसका सभी धमवर्श नष्ट हो गया और र्ह दहम्मत हारकर चल ददया। तब ईश्र्र नेमूसा नेकहा, 'तूने मेरी प्रततष्ठा

[illegible] को दु:ःखी करके क्कयों भगा ददया है। ये जल्दबाज, मनैं नहींर्रन् ्भमलानेर्ाली भशिा देनेके भलए भेजा था। मुझे जो सबसे ेअधधक नापसदां है, र्ह है त्रबलगार् और पररत्याग। सबसे बुरी बात है ककसी को बलपूर्कव ककसी माग वपर चलर्ाना। मनैं व्यत्क्कतगत लाभ के भलए सृतृष्ट नहींकी थी र्रन् ्मेरा उद्देश्य यह था कक जीर्न मुझसे भमलने की महत्ता को समझ सके। यदद कोई बचपन की बात करे तो इससे क्कया होता है! म ैंतो केर्ल हृदय की परख करता हूूं कक उनमें मेरे भलए वर्शुद्ध प्रेम है कक नही।ां'

क्कलाड फील्ड द्वारा वर्रधचत 'इस्लाम के सतां और सूकफयों' से उद्धत पृषूठ 154

 उसका ज्ञान प्रदान करेगा त्जसके वर्ऱ्य में तुममें मतभेद है।' (सुरा पचांम, 48)।[49] क़ुरान के अनुसार मुसलमान रे्

हैं, 'जो नैततक आचरण में वर्श्र्ास रखते ्हैं और अपनेजीर्न में नैततक आचरण का पालन करते ्हैं। रे् सब लोग मुसलमान है, 'जो ईश्र्र में आस्था रखते ्हैं और अच्छे काम करते ्हैं ।'[50] इसी दृत्ष्टकोण से अभी दहज हाइनेस दद आगा खा ्ांने कहा था कक महत्मा गाधी मुसलमान हैं। ईसा ने भी यह नहीांकहा था कक 'तुम उनकी पहचान उनके वर्श्र्ासों से कर सकोगे'् बत्ल्क यह कक 'तुम उनके कायों से उनकी पहचान कर सकोगे।' और पीटर ने भी ठीक ही कहा है- 'मुझे ्यह सत्य प्रतीत होता है कक ईश्र्र व्यत्क्कत वर्शेर् की चाह नही ्ांकरता, र्रन् ्प्रत्येक राष्र और जातत में जो उससे डरता है और आचरण शुद्ध रखता है, उसे ्ह स्र्ीकार करता है ।'[51]

सर अहमद हुसेन ठीक ही कहते ्हैं कक 'इस्लाम और ईसाई धम वअथर्ा ककसी दूसूरे सत्य धम वमें कोई र्ैर्म्य नहीांहै' क्कयोंकक सभी धमों का सार यही है कक हम सब ईश्र्र के पुि हैं और आपस में भाई-भाई हैं। केर्ल रूदढ़-प्रधान सम्प्रदाय ही एक-दूसूरे के वर्रोधी हैं। ईसा का धम वमुहम्मद के धम वसे समता रखता है; परन्तु जब सटें पॉल कहते ्हैं कक ईसा को मसीह और मनुष्यों के बीच में ईश्र्रर्त् ्मानो-जो एक ऐसी बात है त्जसका समथनव करते ्सभी वर्चारशील ईसाई दहचकते ्हैं-जो ईसाई धम वइस्लाम का वर्रोधी हो जाता है और मुसलमान की स्र्ाभावर्क इच्छा होती है कक र्ह ईसा के सम्बन्ध में कही जानेर्ाली बात को मुहम्मद के वर्ऱ्य में कहे। इस्लाम के पि में यह बात कहनी ही पडेगी कक उसमें मुहम्मद के वर्ऱ्य में जो कहा गया है, र्ह अधधक युत्क्कतसगांत प्रतीत होता है। र्ह उसे ्ईश्र्र का दूतू मानता है त्जसनेमनुष्यमाि के एक बडेभाग के धम वका सशांोधन ककया। इस सबके होते ्हुए भी र्े केर्ल मनुष्य के समान पाप कर सकते ्थेऔर अल्लाह की दया के इतनेही भूखे थे। 'यह न इस्लाम है और न ईमान कक मुहम्मद ईश्र्र थे ्अथर्ा ईश्र्र के समान थे। यद्यवप कुछ मौलवर्यों ने यह भसद्ध करने का प्रयत्न ककया है और कहा है कक अहमद के स्र्रूप में र्ही अहद (अथात्व ्एक) है। हमारे पैगम्बर ने खुद कभी अपने को मनुष्य सेबढ़ाकर नहीांबताया (पृषूठ 48)।' मुहम्मद ने कहा है- 'ईश्र्र ने मुझे चमत्कार ददखाने के

भलए नही ्ांभेजो है। उसनेमुझे ्तुम्हें धम वकी भशिा देनेके भलए भेजा है। मनेंैंह कभी नही ्ांकहा कक अल्लाह की देनें मेरे हाथ में है, अथर्ा म ्ैंगुप्त बातों को जानता हूां, या म ्ैंकोई फररश्ता हूां। म ्ैंतो एक ऐसा व्यत्क्कत हूां जो त्रबना अल्लाह की मजी के न अपनी मदद कर सकता है और न अपने ऊपर भरोसा कर सकता है।' (सुरा सिहर्ीं, ्ां 95-98, बहत्तरर्ीां21-24)। तो भी उनके प्रारत्म्भक अनुयातययों का उत्साह और भत्क्कत ऐसी थी कक मुहम्मद के सम्बन्ध में अनेक धाभमकव तथा चमत्कारक कहातनया ्ांप्रचभलत हो गईं। कहा जाता है कक त्जस ददन पैगम्बर का जन्म हुआ उस रात को ्िास रोज का महल भूचाल के कारण धगर गया, पारभसयों की पवर्ि् आग बुझ गई, सार्ा झील सूख गई, दजला नदी में बाढ़ आ गई और ससांार-भर की मूततयवाांमुहां के बल जमीन पर धगर पडी। सौभाग्यर्श इन कहातनयों ने कभी पवर्ि् धमकवथाओां का रूप ग्रहण नहीां ककया। उनके प्रारत्म्भक अरब-अनुयायी इतनेजागरूक और वर्चारशील थे ्कक उन्होंने मुहम्मद की रातोरात यरूशलम की यािा और ईश्र्र का मक्कका के तनकट उन्हें अपना पैगम्बर कहकर सम्बोधधत करना आदद कहातनयों को भी इस्लाम में र्ह महवर्् प्राप्त न करने ददया जो

---

[49] एकतीसर्ीां 46, ततीैसर्ीां 23-24, उनतालीसर्ीां 41, चालीसर्ीां 13 भी देखखए।

[50] प्राथनवा-सगीत ।

[51] कायव दशम34-35

 ईसाई धम वमें ईसा के पुनरुज्जीवर्त होनेऔर आकाश-माग वसे उडते ेचलेजानेको प्राप्त है। उनको मसीहा को

श्रद्धास्पद स्थान भी नहीं भमलता। इस सम्बन्ध में र्हाबी-आन्दोलन को देखखए त्जसका भसद्धान्त है कक ईश्र्र की उपासना के भलए केर्ल उसके सम्मुख भसजदा करना पयाप्वत है। उसके तनकट ककसी सहायक को बुलाने की भार्ना मूतत-वपूजा के समान है और सबसे अधधक पुण्य का काम यह होगा कक मुहम्मद की कब्र और इमामों की दरगाहों को पूणतवः नष्ट कर ददया जाय।

मुहम्मद-जैसे ेपडांडत के भलए बलपूर्कव मत-पररर्तनव कराने की भशिा देना असम्भर् है। हम मनुष्यों को अपनेवर्चार बदलनेके भलए वर्र्श नहींकर सकते। 'धम वके मामले ेमें कोई जबरदस्ती न करो।' (सुरा द्वर्तीय, 257)। 'यह जानते ेहुए कक ईमान ईश्र्र की कृपा से ही प्राप्त होता है, क्कया तू ककसी को ईमान लानेके भलए वर्र्श करेगा?"[52] यह सन्देहपूण वहै कक मुहम्मद का वर्चार अरब के अततररक्कत अन्य लोगों का धम-वपररर्तनव कराने का भी था। धाभमकव अत्याचार और बलपूर्कव मुसलमान बनाना इस्लाम की सच्ची भशिाओंके अनुकूल है यद्यवप इनके कारण इस्लाम के सुन्दर नाम पर बहुत बडा धब्बा लगाया गया है। इस्लाम पर अत्याचार करने र्ाले और बाद में उसके खलीफा बनानेर्ाले उमर ने पहले–पहल उनके वर्रुद्ध तलर्ार उठाई त्जन्होंने त्रबना समझे-बूझे े इस्लाम पर ईमान लानेसे इनकार ककया। मुहम्मद के अनुयातययों में से कुछ की भोंडी कृततयों से जनसाधारण में यह वर्श्र्ास फैल गया कक जो अपनेधम वकी सेर्ा में लडते ेहुए प्राण देते ेहैं, र्े उच्चतर शहीद हैं। भारतीय मुसलमान अपने दहन्दू ूभाई की भातांत धाभमकव वर्चारों की स्र्तांता में वर्श्र्ास करता है। अभी हाल में ही सर अब्दुरुवहीम ने कहा था- 'यह त्रबलकुल ही गलत ख्याल है कक इस्लाम के तनयम बलपूर्कव धम-वपररर्तनव की आज्ञा देते ेहैं।"[53] खखलाफत-आन्दोलन को राजनीततक महवर् चाहे जो हो; ककन्तु इसनेधाभमकव स्र्तांता के प्रश्न को अर्श्य सहायता दी है। कुत-अल उमरा के समथकव सर चाल्स वटाउनशेण्ड ने थोडे ही ददन पहले ेभलखा था- 'भारतर् वकी दहन्दू–ूजनता ने सम्पूण ववर्श्र् के लोगों को धाभमकव स्र्तांता के प्रश्न को अपनी समस्या माना है।"[54] भारतीय आत्मा इस्लाम को अपनी कततपय कट्टरताओं को ढीला करने की ओर प्रेररत कर रही है। इस्लाम और दहन्दू–ूधम वके पारस्पररक सम्पकव से, जो आजकल एक-दूसूरे पर दृत्ष्ट ककये हुए हैं, भारतीय भूभम पर प्रचाररत धमों में साम्य स्थावपत करने की भार्ना को बल भमलेगा।

### 3

अब हम इस्लाम के भसद्धान्तों पर वर्चार करके देखें कक क्कया ईश्र्र की कल्पना दहन्दू–ूदृत्ष्टकोण से मौभलकरूप में भभन्न है? यद्यवप सभी धम वईश्र्र की सत्ता में वर्श्र्ास करते ेहैं तो भी त्जस रूप में ईश्र्र की पूजा की जाती है उसी के आधार पर धमों में वर्भभन्नता आ जाती है। दहन्दुओु ांके अनुसार ईश्र्र की रहस्यमयी सत्ता का आभास ककन्हींशब्दों से व्यक्कत नहींककया जा सकता। ईश्र्र की कोई बौद्धधक पररभार्ा नहींदी जा सकती; हा,ां उसको आत्मा के सहारे अनुभर् ककया जा सकता है। यदद पररभार्ा देना ही पडेतो हम उन साधनों का उपयोग

52 'इस्लाम की अन्तरात्मा,' लेखक-अमीर अली , 212

53 कलकत्ता ररव्यू, मई, 1923

54 एभशया, ददसम्बर, 1922

 ककये त्रबना नही ांरह सकते ेजो हमें उपलब्ध हैं। हम अपनी चेतना-शत्क्कत से पररधचत हैं,

इसभलए हम ईश्र्र की

प्ररृ्वत्त की व्याख्या इसी की समानता के सहारे करते ेहैं। ईश्र्र दैर्ी सत्ता है त्जसमें सत्य, स्नेह और पूणतवा अथर्ा ज्ञान, सौन्दय वऔर शत्क्कत के तीनों गुण र्तमवान हैं। अथर्ा यों कदहये कक उसमें चेतन-जगत् ्की ज्ञान, भार्ना तथा चेष्ेटा से सम्बत्न्धत तनस्सीमता, सौन्दय वऔर राजसत्ता नामक गुण वर्द्यमान हैं। दहन्दुओ ुांके त्रिमूतत वकी कल्पना ईश्र्र की प्ररृ्वत्त के इन्ही ांतीनों पिों को व्यक्कत करती है। ब्रह्मा के स्र्रूप में ईश्र्र सृजन करता है, वर्ष्णु ु के रूप में पालता है और भशर् के रूप में न्याय करता है। सृत्ष्ट करने में; ब्रह्मा ईश्र्र के आदशस्र्वरूपों का सहारा लेता है। उसकी असीम बुद्धध का पररचय उस असीम ससांार से भमलता है जो है, था और भवर्ष्य में भी रहेगा। असीम शत्क्कत और वर्श्र्-शासक के हृदय में स्नेह का प्रतीक वर्ष्णु ुहै, र्ह हमें बुराइयों का सामना करने में सहायता देता है और ऊपर उठने में सहयोग करता है। भशर् न्यायाधीश के समान हैं त्जनकी शत्क्कत असीम है 'जो कुछ भी कर सकते हैंअथर्ा त्रबना ककये छोड दे सकते हैं अथर्ा त्जस प्रकार उसे ेकरना चादहए, उससे भभन्न ढांग से कर सकते हैं।"[55] दहन्द,ू ू ईश्र्र को चाहे त्जस नाम से पुकारे परन्तु र्ह उसमें ज्ञान, प्रेम और जीर्न की सामूदहक कल्पना अर्श्य करता है। सर अहमद हुसेन का वर्श्र्ास है कक सभी धम वएक ही सत्ता में वर्श्र्ास करते ेहैं- 'एक और केर्ल ईश्र्र जो असीम सर्ोपरर, अनादद, अनन्त और पूणतवः स्र्च्छन्द है। उसी असीम और सर्ोपरर सत्ता को वर्भभन्न भार्ाओांमें यज़्द, ईश्र्र, जेहोर्ा, गॉड, अल्लाह आदद कहा गया है।'

ईश्र्र की सर्ोपररता और सीभमत-मत्स्तष्क-अग्राह्यता कुरान के कई स्थलों में र्णणतव है। पहली ही पदार्ली में कहा गया है- 'कहो र्ही केर्ल अल्लाह है, अनादद ईश्र्र। र्ह न तो ककसी को जन्म देता है और न ककसी ने उसको जन्म ददया। उसके समान कोई दूसूरा नहीां है।' ससांार में सभी कुछ परररतनवशील और नाशर्ान् ुहै; केर्ल ईश्र्र इससे मुक्कत है। ईश्र्र ही एक ऐसी चट्टान है त्जसपर हम समय-चि की घटनाओांके तूफान में खडे े रह सकते हैं; र्ही एक ऐसी आशा है त्जसके सहारे हम ससांार के अन्धकार, इसके पापों और अन्यायों का सामना कर सकते हैं; परन्तु इस भौततक ससांार में ईश्र्र की सत्ता की पूरी व्याख्या करने का एक भी साधन उपलब्ध नही ां है। 'मनुष्य की आखों उसे ेदेख नहीांसकती;ां परन्तु र्ह मनुष्यों की आखांों का तनरीिण कर सकता है, क्कयोंकक र्ह रहस्यों का ज्ञाता, ज्ञानी है' (सुरा छठर्ी,ां 104)। हजरत अली ने ईश्र्र की ककसी जीर्वर्शेर् से समता करने की चेष्टा की भत्सनवा की है। 'ईश्र्र ककसी ऐसेपदाथ वके समान नहीांहै, त्जसकी मनुष्य कल्पना कर सके, न उसमें ककसी ऐसे गुण का प्रततपादन ककया जा सकता है जो ततनक भी उस गुण से भमलती हो त्जसका ज्ञान मनुष्य ने सासांाररक अनुभर् द्र्ारा प्राप्त ककया हो। धम वकी पूणतवा ईश्र्र को जाननेमें है, ज्ञान की पूणतवा उसकी सत्यता स्र्ीकार करने में है, सत्यता की पूणतवा तनश्छलता के साथ उसकी एकता में वर्श्र्ास करनेमें है और तनश्छलता की पूणतवा ईश्र्र में सब गुणों के इनकार करने में है और तनश्छलता की पूणतवा ईश्र्र में सब गुणों के इनकार करने में है। ईश्र्र का स्थान, काल अथर्ा पररणाम से कोई सम्बन्ध नहीांहै।'[56] मनुष्य केर्ल इस नकारात्मक आदश वसे सन्तुष्ट नहीांहो सकता इसभलए र्ह ईश्र्र की मनुष्यरूप में कल्पना करने पर आग्रह करता है। कुरान की पहली पदार्ली में कहा गया है- 'उस ईश्र्र की स्तुतत करनी चादहए जो समस्त ससांारों का पालक, दयालु, उदार और

---

[55] कतुम्वकत वअन्यथाकतुम्म् ्

[56] इस्लाम की अन्तरात्मा', पृष्ठ 416 में उद्धत

 अत्न्तम तनणयव के समय का न्यायाधीश है।' रै्षै्णर्-धम वऔर इसाई धम वईश्र्र की प्रेममयी कल्पना पर सबसे

अधधक बल देते ेहैं; परन्तु यहूदी और ईस्लाम धमों में ईश्र्र की शत्क्कत को बहुत महवर् ददया गया है। ईश्र्र सर्ोच्च शत्क्कत और सर्कवालीन न्यायाधीश है। मुहम्मद अतांतम तनणयव के ददन का बहुधा त्जि करते ेहैं जबकक आकाश और पृथ्र्ी मोड दी जाएगी, ईश्र्र के अततररक्कत कोई पास नहीांहोगा और प्रत्येक व्यत्क्कत के पाप-पुण्यों का लेखा-जोखा प्रधान न्यायाधीश ईश्र्र के सम्मुख होगा। ईश्र्र की दूसूरी वर्शेर्ताओां की अर्हेलना नहीांकी गई है। ईश्र्र केर्ल न्यायी ही नही ांर्रन् ्र्ह 'पापों को िमा करनेर्ाला और प्रायत्श्चत को स्र्ीकार करनेर्ाला भी है।' (सुरा चालीसर्ी,ां 1-2)। ई भूलेहुए लोगों का पथ-प्रदशकव और सभी सन्तापों से मुत्क्कत देनेर्ाला है त्जसका स्नेह 'पिी के अपने बच्चे के प्रतत स्नेह सेभी अधधक कोमल है।[57] ईश्र्र का स्नेह प्रकट करने र्ाले र्ाक्कय अनेक स्थलों पर आते ेहैं- 'हे ईश्र्र! मुझ पर दया कर, क्कयोंकक तू दया करने र्ालों में सबसे ेश्रेष्ठ है' (सुरा बाईसर्ीां, 118 ) ।

'क्कया

ई अधधक सम्मान के योग्य नहीांहै जो दुखुखयों की पुकार सुनता है, उनके दुःखों को दूरू करता है और तुम्हें तुम्हारे पूर्जवों का उत्तराधधकारी बनाता है?' (सुरा सत्ताईसर्ी,ां 62)। 'ईश्र्र से िमा मागाी और उसकी ओर आकृष्ट हो। सचमुच ईश्र्र दयालु और स्नेहशील है' (सुरा ग्यारहर्ी,ां 90)। 'कह दो कक ऐ मेरे बन्दो, तुमने तनयमों का उल्लघांन करके अपने को ही हातन पहुांचाई है; परन्तु तुम तनराश न हो, क्कयोंकक ईश्र्र सभी पापों को िमा करता है। ई कृपालु और दयालु है।' (सुरा उन्तालीसर्ी,ां 53)। अरवहमान शब्द, त्जससे ेकुरान का प्रत्येक पररच्छेद प्रारम्भ होता है, इस बात का द्योतक है कक दैर्ी प्रेम का अचांल सभी जगत् ्के ऊपर का परदा हट जाता है और ई ईश्र्र के तनकट पहुांच जाता है। ईश्र्र ससाांर का सृष्ट तथा पालक भी है। ई राग-द्र्ेर्हीन दूरूस्थ देर्ता से अधधक इततहास और प्रकृतत में व्याप्त सत्ता है। ईश्र्र पूरब और पत्श्चम दोनों ओर है। इसभलए तुम चाहे त्जस ओर मुख करो, तुम्हें ईश्र्र का स्र्रूप ददखाई पडेगा। (प्रथम, 115)। 'और ई तुम्हारे ही भीतर है, ई तुम्हें क्कयों नहीांददखाई पडता है?' (इक्कयार्नर्ी,ां 21)। 'हम शीघ्र ही सभी स्थानों में और उनकी आत्माओ ांमें ही अपनेप्रकाश को प्रकट करेंगे,े यहा ांतक कक उनको वर्ददत हो जाय कक यह सत्य है। (बारहर्ी,ां 53)। इस भातांत कता,व पालक और न्यायी के

गुण ईश्र्र में प्रततपाददत हैं और उसको त्रिमूतत वकी कल्पना से बचानेर्ाली बात केर्ल यही है कक उसकी एकता पर सभी स्थलों में बल ददया गया है।

जीर्ात्मा का तनमातवा ईश्र्र है और जब तक ई पुनः ईश्र्र में लीन नहीांहो जाती तब तक इसे ेवर्श्राम नहीांभमलता। उस जदटल प्रकृतत को ईश्र्र की भेंट कर देना चादहए। हमें अपनी बुद्धध को इस प्रकार उपयोग करना चादहए त्जससे ेहम सभी र्स्तुओ ांमें ईश्र्र की सत्ता का अनुभर् कर सकें। परमेश्र्र को वर्द्यमान मान लेने से ईश्र्र के भरोसे ेहो जाने की बात स्र्ाभावर्क रीतत से आ जाती है। हम ईश्र्र की प्राथनवा करते ेहैं और वर्नम्रतापूर्कव अपनी कृतज्ञता प्रकट करते ेहैं। सभी प्राथनवाओां का केन्द्रीय वर्र्य यही रहता है कक व्यत्क्कत वर्नम्र है, सभी अच्छे पदाथों के देने र्ाले ईश्र्र का यश महान् ्है और ईश्र्र की कृपा ही भक्कत का अर्लम्ब है। हम प्राथनवा के द्र्ारा अपनेहृदय की कृतज्ञता को प्रकट करते ेहैंऔर इसके भलए पृथ्र्ी का प्रत्येक स्थल उपयुक्कत है। हम दैतनक जीर्न में उसके पथ-प्रदशनव पर आधश्रत रहते ेहैं और उसके आदश वके अनुकूल अपनेजीर्न को बनाने

[57] इस्लाम की अन्तरात्मा,' पृष्ठ 150-157

के भलए सचेष्ट रहते ेहैं। चाहे हम ज्ञान-माग वका सहारा लें, चाहे भत्क्कत का और चाहे कम-वमाग वका; ककन्तु उद्देश्य और पररणाम एक ही रहता है।

इस्लाम में नैततकता का आदश वकाफी ऊांचा है। यदद हमें उन्नतत में रहनेर्ाले वपता के योग्य बनना है, तो हमें ऐसा कोई काय वनहींकरना चादहए त्जससे ेमनुष्य की दैर्ी उत्पवत्त पर शकांा उत्पन्न हो। सच्ची धाभमकवता के वर्कास के भलए मुहम्मद ने रोजा, नमाज, जकात (दान), हज्ज (मक्कका की धम-वयिाा) और आचरण की शुद्धता पर बल ददया है। दान देना सभी के भलए अतनर्ाय वहै। अततधथ-सेर्ा धम वका अांग बन गया है। अव्यभभचार को एक वर्शेर् गुण माना गया है। शराब के नशे ेमें मस्त हो जाना, जुआ खेलना तथा अन्य अनुधचत कायों की भत्सनवा की गई है। धम वका सार नैततक आचरण ही है। 'जो भोग-र्ासनाओां और ददखार्े से बचते ेहैं, दान देते ेहैं, प्राथनवा करते े हैं, अपने र्ादों और उत्तरदातयत्र् को तनभाते ेहैं, र्े सनातन सुख के अधधकारी होंगे।' (सुरा तेईसर्ी,ां 8) 'जो मुसलमान नगों को कपडे देता है, उसे ेईश्र्र जन्नत में हरे र्स्ि पहनायेगा।'[58] आदम के पुि इब्रादहम की कहानी, त्जसके आधार लेहण्ट ने, अबू त्रबन आघम' कवर्ता भलखी है, यही भशिा देती है कक मनुष्यों का दहतैर्ी ईश्र्र का दहतैर्ी है। साधारण मुसलमान चाहे जो कुछ करता हो परन्तुइस्लामधम वजीर्धाररयों की ओर से उदासीन नही ांहै, र्रन् ्बह उनके जीर्न की पवर्िता पर बल देता है। 'ससांार में सभी जानर्र और सभी पिी उसी प्रकार जीर्धारी ह ैं जैसे ेकक तुम और अन्त में र्े भी ईश्र्र में ही लीन होंगे े।'[59] जानर्रों की कुरबानी के सम्बन्ध में भारतीय मुसलमानों को कुरान की ये पत्ांक्कतयाांस्मरण रखनी चादहए- 'ईश्र्र उस जीर् के खून अथर्ा मासां से सन्तुष्ट नही ां होता त्जसकी तुम कुरबानी करतेहो, र्रन् ्र्ह तुम्हारी धम-वतनष्ठा से सन्तुष्ट होता है।' (सुरा बाईसर्ीां, 36)। िमा कर देना और वर्रोध न करना इस्लाम-धम वके अन्तगतव नहींसमझेजाते। इस सम्बन्ध में कुरान के तनम्नाकांकत अर्तरणों पर ध्यान देना उपयोगी होगा- 'बुराई का बदला उस र्स्तु से दो जो बेहतर है।' (सुरा इकतालीसर्ीां, 34 ) । स्र्ग वका र्णनव करते ेहुए मुहम्मद ने कहा- 'यह उन भलेलोगों के भलए है जो समृद्धध और तनधनवता की दशा में भी दान देते ेहैं जो िोध को र्श में रखतेहैं, मनुष्य के प्रतत िमा का व्यर्हार करते ेहैं; क्कयोंकक परमात्मा नेकी करनेर्ालों से ही स्नेह करता है।' (सुरा बयालीसर्ी,ां 7)। भोजन, तलाक आदद से सम्बन्ध रखनेर्ाली छोटी-छोटी बातों का इस्लाम-धम वसेकोई सीधा सम्बन्ध नहींहै। यद्यवप मुहम्मद ने अपनेसमय को ध्यान में रखते ेहुए उनके वर्र्य में भी कुछ आदेश ददये हैं लेककन उनमें कोई वर्शेर् धाभमकवता का पुट नही।ां जैसा कक माननीय श्री अमीर अली कहते ेहैं- 'खाने-पीने से सम्बन्ध रखनेर्ाली आज्ञाए,ां अथात्व ्वर्धध-तनर्ेध, मुहम्मद साहब ने प्रचाररत अर्श्य ककये हैं; ककन्तु इस बात का स्मरण रखना चादहए कक र्े उस समय की अस्थायी त्स्थतत के अनुकूल थे। उन पररत्स्थततयों के न रहने पर उन तनयमों की आर्श्यकतों भी नष्ट हो गई है। इसभलए यह धारणा बनाना कक इस्लाम की प्रत्येक भशिा अतनर्ायतव:, अपरर्तनवीय है, मनुष्य की बुद्धध के वर्कास और इततहास के साथ अन्याय करना है।' पैगम्बर साहब ने मनुष्य की बुद्धध को अधाांधुन्ध आदेशों की चेरी बनाने की भशिा नहींदी। जो धम वसाधारण बुद्धध के आधार पर सभी ददशाओ ांमें प्रभावर्त हुआ है, र्े आजकल की दुतनया में अमानुवर्क कृत्यों का समथनव नहींबनाया जा सकता। भारतीय मुसलमान आचायों के नेताओांको यह तनत्श्चत करना पडेगा

58 'इस्लाम की अन्तरात्मा', पृष्ठ 54।

59 र्ही, पृष्ठ 158

 कक यदद उनके जीर्न का आदश वपारस्पररक प्रेम, अन्याय का शात्न्तपूर्कव सहन, ककसी को कष्ट न पहुांचाना और
अखखल वर्श्र् की शातांत और सदाशयता की उन्नतत करना है, तो भारतीय मुसलमानों की ककन प्रथाओ ांमें पररर्तनव र्ाछांनीय है।

अत्न्तम तनणयव के ददन र्े लोग, त्जन्होंने कुरान की भशिाओांकी अर्हेलना की है, बडेसकांट का अनुभर् करेंगे ेऔर त्जन्होंनेउनके अनुरूप अपनेजीर्न को ढाला है, र्े ईश्र्र में लीन हो जायगें। मुहम्मद का बदहश्त में जाना इस बात का प्रतीक है कक ससीम और असीम का सयाेग होना सयाेग है। सूफी मत का कथन है कक मनुष्य-जीर्न का चरम उद्देश्य ईश्र्र में फना (लीन) हो जाना है, क्कयोंकक जो ईश्र्र का दशनव कर लेता है र्ह ईश्र्रर्त् ्हो जाता है। मनुष्य त्जन दशाओ ांमें होकर ईश्र्रवर् प्राप्त करता है उनको जलालुद्दीन रूमी द्र्ारा इस भातांत र्णनव ककया गया है-

'तनजीर् पदाथ वसे पहले ेहम र्नस्पतत-जगत् ्में प्रवर्ष्ट हुए, उससेउठकर हम जीर्धारी हुए और उसमें भी उन्नतत करने पर हम मनुष्य हुए। तब कफर क्कया भय है कक मृत्यु हमें तनम्नतर कोदट में धगरा देगी अगले ेजन्म में हम फररश्ते ेहोंगे ेऔर उस दशा से उन्नतत करके हम नामहीन परमेश्र्र में लीन होंगे। सभी सृत्ष्ट पुकारकर कह रही है-'हम लौटकर ईश्र्र में ही लीन होंगे।'

जीर्न का ध्येय ईश्र्र में लीन होना ही है। अल हजर्ीरी नामक सूफी कहता है- 'जब मनुष्य अपने गुणों से परे हो जाता है, तो र्ह पूणतवा को प्राप्त कर लेता है। उस समय र्ह न तो तनकट होता है और न दूरू, न भलप्त और न वर्लग, न उन्मत्त और न सुबोध, न घतनष्ठ और न अपररधचत; उस समय उसका न कोई नाम रहता है, न तनशान।'[60] यद्यवप सूकफयों के अनुसार जीर्न का रोचक और स्र्ाभावर्क र्णनव करती है जो मुक्कतात्माओ ांको प्राप्त होता है। इस जीर्न के र्णनव बहुत ही र्ास्तवर्क प्रतीत होते ेहैंऔर 'कुछ-कुछ श्रृगांारपूण वभी; परन्तु उनको शात्ब्दक अथ वमें सत्य मानना भूल होगी। 'ऐ शान्त जीर्! अपनेस्र्ामी के पास र्ापस जा, प्रसन्न हो और उसे े प्रसन्न कर। आ, मेरे सेर्कों में सत्म्मभलत हो और मेरे आनन्द कानन में वर्चर' (नर्ाभसर्ीां, 27-30)। यह दोनों मत र्ेदान्त के अद्र्ैत और आत्स्तक भाष्यकारों के मतों के समान हैं। व्यत्क्कतत्र् का वर्कास पूणतवा प्राप्त करने तक रुक नहीांसकता, अस्तु भवर्ष्य में चररि के उत्तरोत्तर वर्कास के भलए अर्सर भमलते रहेंगे।

भवर्ष्य हमारे र्तमवान जीर्न पर आधश्रत है। 'भवर्ष्य में प्रत्येक जीर् र्ही भोगेगा त्जसका उसनेसौदा ककया है' (दसर्ी, ां 30)। स्र्ग वअथर्ा नरक हमारे कमों का ही फल है। कभी-कभी यह भी कहा जाता है कक ईश्र्र की अज्ञेय इच्छा ही सबाके प्रेरणा देती रहती है। इस्लाम के परर्ती इततहास में ईश्र्र की सर्ोच्च सत्ता और मनुष्य के उत्तरदातयवर् में साम्य स्थावपत करने की अनेक चेष्टाए ांहुई हैं। कुरान में ऐसेस्थल हैं त्जनसे ेयह ध्र्तन तनकलती है कक ईश्र्र मनमानी करता है। चूकांक ईश्र्र सभी का स्र्ामी है इसभलए र्ह त्जसे ेचाहता है, िमा करता है और त्जसेचाहता है दण्ड देता है' (दूसूरी, 184; तीसरी, 22; पाचांर्ी, ां 18 और तेहरर्ी, ां 31 भी देखखए)। 'सचमुच ईश्र्र

---

60 'इस्लाम की अन्तरात्मा' पृषूठ 172-213

 त्जसेचाहता है भ्रम में डाल देता हैं और त्जसेचाहता है उसे ेप्रायत्श्चत करने पर अपनी ओर

आकृष्ट कर लेता है'

(तेरहर्ी,ां 27)। ऐसेभी र्ाक्कय हैं जो मनुष्य के उत्तरदातयत्र् पर जोर देते ेहैं- 'कोई भी जीर् अपनेअततररक्कत और ककसी के भलए पररश्रम नहीं करेगा और न कोई अपनेअततररक्कत ककसी दूसूरे का भार र्हन करेगा' (दूसूरी, 286)। 'जो ककसी पाप का भागी होता है, अपनेही कारण होता है' (चौथी, तीसरी)। 'जो कोई पथ-भ्रष्ट होता है र्ह स्र्यं ांही अपनेभटकने के भलए पूणतवः उत्तरदायी होता है' (दसर्ी,ां 108)। सर अहमद हुसेन का मत है कक भाग्य और प्रारब्ध इस्लाम धम वका अंांग नहीं है (पृषूठ 12, नोट 'द')। 'रसूल ने स्पष्ट भशिा दी है कक पहलेहमें अपनी शत्क्कत-भर उद्योग करना चादहए और तब शेर् ईश्र्र के सहारे छोड देना चादहए। हम, सम्भर् है, इस भशिा के पूर्ाद्वधव को भूल जायेंऔर केर्ल उसके उत्तराद्धव को याद रखें; क्कयोंकक र्ह उष्णकदटबन्ध-जन्य आलस्य से मेल खा जाता है।' (पृषूठ 62, नोट 'ह')। मनुष्य तनयतत का खखलर्ाड नहीं है। उसे ेउधचत अथर्ा अनुधचत माग वके अनुसरण की स्र्तांता प्राप्त है। ईश्र्र हमें भलाई अथर्ा बुराई करनेको बाध्य नहींकरता। र्ह केर्ल सत्य और पवर्िता का माग वददखाता है और तनयमों के पालन करने में हमारी सहायता करता है यद्यवप यदद हम उनकी अर्हेलना करते े हैं, तो र्ह हमें दण्ड देता है। खलीफा अली का कथन है- 'ऐ खुदा के बन्दो! जो कतव्वय तुम्हें सौंपा गया है उसे ेपूरा करो, क्कयोंकक उसकी उपेिा करनेमें पतन है। तुम्हारा सदाचरण ही मृतूयु का माग वसुगम बना सकेगा। स्मरण रखो कक प्रत्येक पाप तुम्हारे ऋण को बढ़ाता है और तुम्हारे पाश को दृढ़तर बनाता है। दया का सन्देह आ गया है, सत्य का माग वस्पष्ट है, तुम्हें जो आज्ञा दी गई है उसका पालन करो, पवर्िता के साथ रहो, धमरवत होकर काय व करो और ईश्र्र की अचनवा करो कक र्ह तुम्हें प्रत्येक उद्योग में सहायता दे और तुम्हारी वपछली भूलों को िमा करे।''[61] ईश्र्र की आज्ञाए ांअध्यात्म-जगत् ्के तनयममिा हैं। ईश्र्र उन्हींकी सहायता करता है जो उसकी अचनवा करते ेहैं और र्ह अपनी दया उसी को प्रदान करता है जो पापी प्रायत्श्चत करता और अपनी आत्मा को अपवर्ि र्ासनाओ ांसे मुक्कत करने की कामना करता है। खलीफा अली ने कहा है- 'यह न कहो कक मनुष्य बाध्य है क्कयोंकक इसका अथ वहै ईश्र्र में तनरांकुश अत्याचार का प्रततपादन करना; न यही कहो कक मनुष्य को पूण वस्र्तन्िता है। यह कहना अधधक उधचत होगा कक हम उसकी कृपा और सहायता से अच्छे काय वकरने के भलए अग्रसर होते ेहैं

और

हम भूल केर्ल इस कारण करते ेहैं कक हम उसके आदेशों का ध्यान नहींरखते।''[62]

इस्लाम रहस्यवर्हीन धम वहै। इसकी सादगी में ही इसकी शत्क्कत और सुन्दरता है। यहाांन तो र्े बारीककया ांहैंत्जनमें धम-वपापों को वर्शेर् रुधच होती है, न र्े उलटबाभसयाांहैंत्जनको दैवर्कता का लिण माना जाता है और न अध्यात्म की डीगें ही हैं। यह एक प्रकृतत के सहारे चलने र्ाला धम वहै त्जसका मूल भसद्धान्त यह है कक ईश्र्र सभी र्स्तुओ ांको बनाता, पालता, र्श में रखता और पूणतवा प्रदान करता है। यह उच्च ईश्र्रर्ादी धम व सरल धचत और सीधे-सादे व्यत्क्कतयों के भलए बहुत ही उपयुक्कत है। जहा ांतक सस्ांथाओ ांका सम्बन्ध है, यह पूणतवः युत्क्कतयुक्कत है। इसमें न जातत है न पुरोदहत, इसमें न बभलदान की आर्श्यकता है न ककसी पद्धतत वर्शेर् की और न ककसी रूदढ़प्राप्त उपासना-वर्धध की जो मन को एक ईश्र्र की कल्पना से वर्चभलत कर दे। मक्कका और काबा की यािा ही एक बाह्य साधन है त्जसपर मुहम्मद ने जोर ददया है और र्ह भी एक वर्शेर् सुवर्धा की दृत्ष्ट से। प्राथनवा

---

61 'इस्लाम की अन्तरात्मा', पृषूठ 409

62 र्ही पृषूठ 410

के समय मुसलमान मक्कका की ओर मुख करता है, क्कयोंकक र्ही र्ह ओजस्र्ी केन्द्र है जहा ांमुहम्मद की भशिा का पहले-्पहल प्रचार ककया गया था (सुरा दूसूरा, 139-144)। मक्कका की ओर ध्यान लगाने से मुसलमान को यह अनुभर् करने में सहायता भमलती है कक र्ह एक सम्प्रदाय का सदस्य है जो मुहम्मद को दूतू मानने में एक मत है और त्जसके सभी सदस्य समान आकिांाओांसे पूण,व समान र्स्तुओांके प्रतत श्रद्धालुऔर आदशों के उपासक हैं। व्यर्हारर्ि- में इस्लाम की वर्शेर्ता उसका प्रजातिांर्ाद है। यही उसके धम-वपरररर्तनव कराने के प्रचार में सफलता की कुञ्जी है। यह अपने वर्स्तृत प्रागांण में प्रत्येक रांग और जातत के व्यत्क्कत को आमत्न्त्ि करता है। उसका वर्श्र्ास है कक ईश्र्र के सेर्क बनने की िमता सभी में है।

'प्रत्येक मनुष्य की आत्मा में ईसा तछपे ेहुए हैं चाहे तुम उनकी सहायता करो चाहे उनका अर्रोध, चाहे तुम उनको कष्ट पहुांचाओ अथर्ा उनके घार्ों का उपचार करो। यदद तुम ककसी भी मनुष्य पर पडेहुए पदे को हटा दो तो तुम तनश्चय ही उसके नीचे ईसा को तछपा हुआ देखोगे।"[63]

मुसलमान 'तवर्मभस' के तनष्कर् वको तनभयव होकर स्र्ीकार करता है और कम-से-कम मत्स्जद में मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद-भार् नहीांरखता। ईश्र्र की दृत्ष्ट में मनुष्यमिा की समानता के भसद्धान्त की दुहाई देते ेरहने पर भी यह बात दहन्दू ूमत्न्दरों और ईसाई-धगरजाघरों के वर्र्य में नहीांकही जा सकती। हम सब ईश्र्र की सन्तान हैंऔर इसभलए आपस में भाई-भाई हैं-इन दो भसद्धातांों का ध्यान रखते ेहुए इस्लाम की सरल भशिा, ससांार के अनेक अन्धकारपूण वस्थानों से बबरव कियाओां को हटाने ेऔर करोडों व्यत्क्कतयों को उच्चतर जीर्न त्रबताने की प्रेरणा देनेकी शत्क्कत का प्रदशनव कर चुकी है। इसनेवपछडी हुई जाततयों को र्ासनात्मक अनेकेश्र्रर्ाद की भूल-भूलैया से तनकल आनेऔर शैतान की उपासना, बाल-हत्या, नर-बभल, जादू-टूतिां आदद से बचने ेमें सहायता दी है। इसका भवर्ष्य भी वर्शाल होगा परन्तु र्ह जब जब कक यह तनस्सकाीच और तनममव भार् से सभी नये वर्र्ैले पौधों को काट दे और दैतनक जीर्न में अपनेदोनों मौभलक भसद्धान्तों पर आचरण करे।

इस्लाम के सम्पकव सेदहन्दू-ूधम वने समुधचत लाभ नहीांउठाया। यह सत्य है कक चैतन्य, कबीर, नानक आदद द्र्ारा सचांाभलत सुधार आन्दोलन, इस्लाम की अन्तरात्मा से काफी प्रभावर्त हुए हैं। दहन्दू-ूधम वकी अद्र्ैतधारा इस्लाम के प्रचार के बाद और पुष्ट हो गई है; परन्तु दहन्दू-ूधम वसुगमता से काफी और सीख सकता था। दूसूरों के धम वको ज्ञान न होना अन्याय और भूल का स्रोत है। कततपय असभ्य मुसलमानों के कायों ने दहन्दुओु ांके भलए इस्लाम के आदशों को समझ सकना असम्भर् कर ददया है। जहा ांइस्लाम दहन्दू-ूधम वकी सहानुभूततपूण वजानकारी द्र्ारा बहुत सीख सकता है, र्हा ांदहन्दू-ूधम वको ईश्र्र-सम्बन्धी अपूण वधारणाओ ांएर् ां तनम्न कोदट की उपासना-वर्धधयों के प्रतत कम सहृदय होना चादहए और अधधक तनत्श्चत ढांग से उनको वर्रोध करना चादहए। दहन्दू-ूधम वने यह मानने की मूखतवा की कक सत्य धीरे-धीरे प्रकट होकर रहेगा और तनम्न कोदट की भशिाए ांअपने-आप छोड दी जायगीं। दहन्दू-ूधम वका वर्श्र्ास था कक त्जस प्रकार सूय वके प्रकाश के सामने अन्धकार वर्लीन हो जाता है, उसी प्रकार सत्य के सम्पकव में आकर असत्य स्र्यम् ्ही नष्ट हो जायेगा। यह आशा आशा ही रह गई है। र्े भी जो ईश्र्र के सम्बन्ध में उच्चतम वर्चारों से अर्गत हैं, बबरवता की जघन्यतम कियाओ ां

---

63 क्कलाड फील्ड द्र्ारा वर्रधचत 'इस्लाम के सूफी और सन्त', पृष्ठ 159

 में भलप्त देखे जाते ेहैं। जो बडी सफाई के साथ अदहसां की बात करते ेहैं, रे् ही बभल देनेको प्रोत्सादहत करते ेददखाई

पडते ेहैं। दहन्दू–धम वको अपनी उदारता छोड देने की आर्श्यकता नहींहै; परन्तु उसे ेइसका ध्यान अर्श्य रखना चादहए कक अच्छे-बुरे का अन्तर स्पष्ट बना रहे और उत्तरोत्तर उन्नतत होती रहे। हमें अपनी सस्थाओ ांको अधधक प्रजातिांात्मक बनाना चादहए और वर्रोधी मतों के झगडों, दुरूह भसद्धान्तों और उन अत्याचारपूण वससं्थाओंको, त्जनके कारण मनुष्य की आत्मा सचमुच वपसी जा रही है, नष्ट कर देना चादहए। इस्लाम और दहन्दू–धम वअपने उच्चतम रूरूप में यही भशिा देते ेहैं कक ईश्र्र की सत्य और पवरि्ता के साथ सेर्ा करना और जीर्न की सभी घटनाओ ांमें उसकी आज्ञाओं को श्रद्धा के साथ पालन करना ही यथाथ वधम वहै।

# दहन्दू–ूमत और ईसाई-मत

ऑक्कसफड वसभा में श्री ग्रीव्स ने जो दहन्दू–ूधम वपर तनबधां पढ़ा था, उसमें भलखा- 'स्थूलरूप से यह कहा जा सकता है कक दहन्दू ूलोग अपने प्रभसद्ध धम-वभसद्धान्त से प्रायः उतनेही आगे ेबढ़े हुए हैंत्जतने कक ईसाई कहे जानेर्ाले लोग ईसाई-भसद्धान्तों से पीछे हैं।"[64] जहा ांतक दहन्दुओु ांके आचरण का प्रश्न है यह तनष्कर् वबहुत उदार है; ककन्तु इसके मूल में जो यह भार्ना है कक दहन्दू–ूभसद्धान्त इस आर्रण से कम योग्यता के हैं, र्ह वर्ाद-ग्रस्त है। जो बात हमारी समझ में नहींआती उसे ेबुरा कर देनेको हम सदा तैयार रहते ेहैंऔर जो लोग दहन्दू–ूधम वको दूरू से देखकर उसपर अपना तनणयव देना चाहते हैं, र्े उसकी प्रबल सजीर्ता से अतनभभज्ञ हैं। 'स्र्ाभावर्क धम-वबुद्धध' के त्रबना हम उन महान् ्भसद्धान्तों को कैसे ेसमझ सकतेहैंत्जनके भलए अनेक लोगों ने प्राण तक न्योछार्र कर ददये तथा अब भी करते ेरहते ेहैं। यदद इसी दृत्ष्टकोण से हम दूसूरे धर्मों देखें तो हमें मालूम पडेगा कक सभी धर्मों में एक ही प्रकार के मूल भसद्धान्तों पर जोर ददया गया है कक ईश्र्र है, मनुष्य का ईश्र्र से कुछ सम्बन्ध है तथा जो व्यत्क्कत ईश्र्र के अनुकूल का अभभलार्ी है उसे ेककसी-न-ककसी प्रकार की ईश्र्रानुभूतत अर्श्य होती है। ससांार के प्रगततशील एर् ांसजीर् धर्मों में अन्तर इतना ही है कक एक ककसी बात पर बल देता है और दूसूरा ककसी दूसूरी बात पर और इसका कारण ऐततहाभसक एर् ांसामात्जक पररत्स्थततयों की भभन्नता है। यह जान कर परम सन्तोर् होता है कक उदार आलोचना, र्द्धवमान प्रकृतत-वर्ज्ञान, अध्यात्मशास्र्, तुलनात्मक धम-ववर्ज्ञान, धाभमकव चेतना का मनोर्ैज्ञातनक अध्ययन एर् ांरहस्यानुभूतत से प्रगाढ़तर पररचय के फलस्र्रूप ईसाई-पत्ण्डत धम-वपुनतनमवाणव में सलांग्न हैं त्जससे ेईसाई धम वदहन्दू–ूधम वके तनकट आ रहा है और ऐसा मालूम पडता है कक ईसाई धम वतथा अन्य धर्मों में जो भेदे-भार्ना है र्ह समाप्त हो जायेगी। इस तनबन्ध में बहुत सींप में-एक छोटे-से तनबन्ध में वर्शद र्ैज्ञातनक वर्र्ेचन सम्भर् नहीां-दहन्दू–ूधम वके कुछ मूल भसद्धान्तों का र्णनव करूांगा त्जससे दहन्दू–ूधम वके मूल भसद्धान्तों से हमारा अभभप्राय उन समान्य वर्चारों से है जो दहन्दू–ूधम वके लम्बे ेइततहास में उसके भभन्न-भभन्न रूपों में, ईश्र्र, मनुष्य तथा उसके भवर्ष्य के सम्बन्ध में बराबर पाये जाते ेरहे हैं।

## 1

दहन्दू–ूमत से ईश्र्र का रहस्य समझने में मनुष्य की बुद्धध अिम है। अनेक शास्र्-र्चनों में इस बात पर जोर ददया गया है कक मनुष्य की स्थलबुद्धध ईश्र्र के सूक्ष्म स्र्रूप को समझने में अशक्कत है। परमात्मा के अनन्त गुण तथा रूप हैंत्जनका ज्ञान हम मनुष्यों को नही ांहै; परन्तु कोई भी दहन्दू ूइस तनर्ेधात्मक तनणयव से सतुांष्ट नहींहोता। र्ह अपने स्र्रूप के उपमान के आधार पर जो ज्ञान, भार्ना एर्ां इच्छाओांका समुच्चय है, ईश्र्र की व्याख्या करना चाहता है। र्ह ईश्र्र को शरीरयुक्कत व्यत्क्कत पुरुर् कहता है और उससेवर्चारशत्क्कत एर् ां स्नेह आदद गुणों का सत्न्नर्ेश करता है। र्ह बराबर यह जानता रहता है कक ईश्र्र का शरीर केर्ल एक परदा है,

---

[64] माडन वचच वमैन, अक्कटूबर1922

इस रूप में ककसी उच्चतर र्स्तु की अभभव्यत्क्कत हो रही है। ईश्र्र का व्यत्क्कतत्र् मनुष्य के व्यत्क्कतत्र् की तरह सीभमत तथा बद्ध नहीांहै, क्कयोंकक हमारी गतत एर् ांजीर्न ईश्र्र में ही सम्भर् है।

चूकांक ईश्र्र के व्यत्क्कतत्र् में ज्ञान, स्नेह एर् ांश्रेष्ठता का समन्र्य होता है; अतः वर्श्र्-सम्बन्धी उसकी कियाएांसृजन, तनस्तार एर्ां न्याय की कियाएांहोती हैं; ब्रह्मा जो ईश्र्र के ज्ञानस्र्रूप का प्रतीक है, सृत्ष्ट-रचना करता है; वर्ष्णु, ु जो उसके स्नेह का द्योतक है, हमारा भरण-पोर्ण करता है, भशर्, जो सर् वशत्क्कतमान एर् ांपूण वहै 'हमारा न्याय करता है। वर्श्र् की व्यर्स्था ईश्र्र के मत्स्तष्क की सूचक है। ईश्र्र के तनत्य वर्चार देशकाल के रूप में िमशः अभभव्यक्कत होते ेहैं। प्रत्येक र्स्तु बराबर यह प्रयास करती है कक अपनी अपूणतवा को दूरू कर सके त्जससे ेर्ह उन तनत्य रूपों के समकि हो सके, अथातव ईश्र्र के उद्देश्य की पूतत वकर सके। सृत्ष्ट-व्यापार एक तनरन्तर वर्कास है त्जसमें द्रव्य नर्ीन तथा उच्चतर गुणों को प्राप्त करते ेएर् ांपुराने गुणों का पररत्याग करते ेहैं। ब्रह्मा की कल्पना ईश्र्र की अनन्तता एर् ांतनत्य-सृजन सलांग्नता को प्रकट करती है। ईश्र्र के सृजन का लक्ष्य यह है कक जीर्न अपने ददव्य मूल तथा ददव्य पररणाम की अभभव्यत्क्कत करे सकें। ईश्र्र की सृत्ष्ट-भर में मनुष्य ही केर्ल अपनेमूल स्र्रूप को पूणतवः व्यक्कत कर सकता है एर् ांर्स्तुओ ांकी यथाथ वको प्रदभशतव कर सकता है। जब ईश्र्र ने मनुष्य की रचना की तो उसने, उसे ेउन तनयमों को ज्ञान भी ददया त्जनका पालन उसे ेकरना चादहए यदद र्ह अपने ददव्य लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। भगर्द्गीता (3, 10) में भलखा है- 'ब्रह्म ने यज्ञसदहत प्रजा की सृत्ष्ट की।' यह यज्ञ, यह धम-वतनयम ही र्ह साधन है त्जसके द्र्ारा हम ईश्र्र-तनधारवरत अपनेआदश वकी प्रात्प्त करके ईश्र्रभार् को, ब्रह्म-स्र्रूप को प्राप्त कर सकते हैं। ककांतु हम अपने मूल को भूलकर, ईश्र्र की सृत्ष्ट में अपनेस्थान को भूलकर, यज्ञ-तनयम को भूलकर स्र्ाथ वसाधन में पडकर अपनेको नष्ट ककया करते ेहैं। तभी ईश्र्र के स्नेह अथर्ा करुणा की आर्श्यकता होती है। सबसे ेमहान ब्रह्मा ही सबको स्नेहे करने र्ाला वर्ष्णु भी है। देशकाल, भौततक जगत, प्राणी-जीर्न तथा मानर्-इततहास के पीछे रहकर अपनी करुणा एर् ांस्नेह को सर्त्र त्रबखेरकर सर्व्यापी वर्ष्णु मानर्ात्मा को पाप तथा अवर्द्या का सामना करने में सहायता देता है। र्ही हमारे जीर्न का मूल आधार है, र्ही हमारी र्ह अन्तज्योंतत है जो परम पवर्त्र होनेके कारण ककसी भी िण-भगुांर पदाथ व में अनुरक्कत नही ांहो सकती एर् ांजो परम स्नेहशीला होने के कारण ककसी को भी अनात्मीय नहीांसमझ सकती। र्ह कल्याणकारी ईश्र्र है तथा इस बात का प्रमाण है कक ससांार मगांल अथर्ा भशर् की ओर बढ़ रहा है। पर र्ह हमारी इच्छा के वर्रुद्ध कुछ नहीांकरता। उसका मगांलमय काय वब्रह्मा की सृत्ष्ट-व्यर्स्था के अनुकूल ही होता

है। ईश्र्र उन सृत्ष्ट-तनयमों की अर्हेलना करके, त्जनका उसनेस्र्य ांतनमाणव ककया है, अपनेमहत्र् को प्रदभशतव करने की इच्छा नहीांकरता। यद्यवप वर्ष्णु ुसदा ही हमारी सहायता करने को तैयार रहता है पर हमारे पाप तथा अज्ञान उसकी करुणा के महान् ्अर्रोधक हैं। यदद हम ईश्र्र पर वर्श्र्ास करके उसकी प्राथनवामिा करें, तो भी र्ह सकांट से हमारी रिा करता है। कृष्ण ने गीता में कहा है- 'यदद दुराचारी भी अनन्य गतत होकर हमारी उपासना करता है तो उसे ेसाधु समझना चादहए, क्कयोंकक उसका तनश्चय ठीक है। शीघ्र ही र्ह धमात्वमा बन जाएगा एर् ां अनन्त शात्न्त प्राप्त करेगा। तुम दृढ़तापूर्कव कह सकतेहो । के मेरे भक्कत का कभी वर्नाश नहीांहोता ।[65] अतएर्

---

65 गीता -9, 30-31

 महान् ्पापी के भलए भी उदार की आशा है। ईश्र्र केर्ल सत्य और प्रेम ही नही ंहै, र्ह न्याय भी है। र्ह शत्क्कत एर् ं
पूणतवा की मूतत,व भलाई एर्ां बुराई को तनणायवक तथा कम वका स्र्ामी कमाध्र्यि भी है। जब हम पाप करते ेहैं तो तनणायवक भशर् हमें दण्ड देता है।

ब्रह्मा, वर्ष्णु ुऔर भशर्, तीन भभन्न-भभन्न व्यत्क्कत नहीांहैं र्रन् ्रे् एक ही अद्वर्तीय ईश्र्र के कतव्वय-भेद से तीन रूप कर भलए गए हैं। ब्रह्मा कुछ शत्क्कतयों का पूण ववर्कास करने में वर्ष्णु ुहमारी सहायता करता है तथा भशर् मगांल की वर्जतयनी आत्मतनभरवता का द्योतक है। जैसे ेतैत्तरीय उपतनर्द में भलखा है- 'जो सब पदाथों का उद्भर् है, जो उन्हें धारण करता है तथा त्जसमें रे् लय को प्राप्त होते ेहैं, र्ह एक ही है।' ईश्र्र ही सत्य है, र्ही पथ एर् ांर्ही जीर्न है। र्ह एक होनेपर भी तीन बताया जाता है-एक एर् त्रिधा स्मुतः । सृतृष्ट, पालन एर् ांन्याय-वर्चार-ये रचनात्मक वर्कास के तीन मुख्य रूप हैं।

जब हम परमात्मा को सृतृष्टकता,व उसका रिक तथा न्याय-कता वकी दृत्ष्ट से ईश्र्रीय आत्म-चेतना के तीन रूपों को समुच्चय मानतेहैं तो हमें मानना पडेगा कक र्ह वर्श्र्, त्जसके सम्बन्ध से ही इन कमों का कोई अथ व हो सकता है, ईश्र्र से अवर्भक्कत रूप में सम्बत्न्धत है। कुछ उपतनर्दों, भगर्द्गीता तथा आत्स्तक रे्दान्त के मत से यह ससांार भगर्ान् ्का शरीर है। दहन्दू–ूशास्ि प्रत्येक पदाथ वमें ईश्र्र की सत्ता स्र्ीकार करने से डरता नही।ां र्ह ससांार से परे अपनेही अरुधचकर एकान्त में रहने र्ाले ककसी अलौककक परमात्मा में वर्श्र्ास नहीांकरता। गीता में कृष्ण ने कहा है कक ससांार का समस्त सौन्दय,व उसका सम्पूण वसत्य, उसका अखखल मगांल ईश्र्र की अभभव्यत्क्कत के वर्वर्ध रूप हैं। प्रकृतत उसकी महत्ता का आर्रण, उसके शब्द को व्यक्कतस्र्रूप एर् ांउसके वर्चारों की मूतत वहै। यह तनम्न कोदट का सर्र्वाद नहीांहै। यथाथ वऔर आदवश में, उत्कृष्ट और तनकृष्ट में भेदे ककया गया है। दहन्दू–ूधम वइस बात पर जोर देता है कक मनुष्य अपौरुरे्यता की उपलत्ब्ध करे। इसका अथ वहै कक र्स्तु-जगत् ्के परे भी कुछ है त्जस तक पहुांचने का प्रयास मनुष्य बराबर ककया करता है। मुक्कत का अथ वयह है कक ऐसा भी कुछ है त्जससे ेछुटकारा पाने की आर्श्यकता है। यदद सब ब्रह्म ही है तो मुत्क्कत की, ईश्र्र के अनुग्रह की आर्श्यकता ही कैसी? ईश्र्र प्रकृतत का प्राणमिा ही नही ांहै, र्ह तो उसके परे उसका सृष्टा, उसका स्र्ामी भी है। दहन्दू–ूधम वको हेगल-प्रततपाददत वर्श्र्-व्यापार तथा परमात्मा का ऐक्कय मान्य नहीांहै। ईश्र्र ससांार का मूल अर्श्र् है, पर सर्ोपरर है, र्ह सबमें व्याप्त है, सबका शासक है कफर भी स्र्य ांसबसेअतनभलप्वत, सबसे अलग बना रहता है।

नदी का जल उद्गम स्थान पर ही सबसे अधधक तनमलव होता है। यह लोकोत्क्कत ईसाई धम वपर सर्थवा चररताथ वहोती है। यदद हम ईसा के जीर्न तथा उनकी भशिा पर दृत्ष्टपात करें तो उस धम वके मुख्य भसद्धान्तों का हमें स्पष्ट ज्ञान हो जाएगा। 'प्राचीन धम वपुस्तक' का 'जहोर्ा' प्रधानतः जातीय देर्ता ही था। यद्यवप 'होशा' तथा 'इशाया' आदद कुछ महात्मा उसे ेसमस्त ससांार को ईश्र्र कहते ेथेपर रे् भी सकीर्ण वप्रान्तीय भार्ना से सर्थवा मुक्कत नही ांरह सके। उनकी दृत्ष्ट में भी यहूदी ही परमात्मा की वर्भशष्ट प्रजा थे तथा रे् गर-यहूदी जाततया;ां जो जहोर्ा की महत्ता को स्र्ीकार कर लेती थीां तथा त्जआन में खाकर उसकी उपासना करती थीां, हीन समझी जाती थी।ां ईसा ने ईश्र्र की कल्पना से सब प्रकार की पररत्च्छन्नता को दूरू कर ददया। उसे ेईश्र्र के तनपिे रूप में

 खास ददलचस्पी नहींथी; उसने बडेही स्तुत्य ढांग से उसके उस रूप को हमें दशनव कराया त्जसमें ई मनुष्य तथा

ससांार से जडडत है। यद्यवप उसनेईश्र्र के ज्ञान, स्नेह एर् ांशत्क्कत, तीनों रूपों की चचा वकी है पर पररत्स्थततयों के अनुरोध से ईश्र्र के प्रेम पर ही वर्शेर् बल देना पडा। यहूदी महात्माओ ांमें से जो अपेिाकृत श्रेष्ठ थे, उन्होंनेभी ईश्र्र के िोध एर् ांन्याय पर खास जोर ददया था। इशाया ने कहा था- 'जब ईश्र्र पृथ्र्ी को प्रबल र्ेग से दहला डालनेको उठेगा तो उसकी महत्ता तथा आिोश से भयभीत होकर मनुष्य धगरर-कन्दराओां तथा भू-तछद्रों में जा घुसगें। इसके वर्परीत ईसा ने ईश्र्र के वपतारूप तथा हमारे प्रतत उसके र्ात्सल्य स्नेह की कल्पना पर वर्शेर् बल ददया है। परमात्मा सबसे पहले ेप्रेम है; ई हमारा रिक है। ईसा ने ईश्र्र के दूसूरे रूपों की भी उपेिा नहींकी। ससांार की सुव्यर्स्र्ा उसका ज्ञान प्रकट करती है। त्रबना ककसी पिपात के न्यायी तथा अन्यायी सबको, ही सूय व का प्रकाश प्राप्त है और यही बात जल-र्ृत्ष्ट के सम्बन्ध में भी सच है। ईसा ईश्र्रकृत वर्भशष्ट वर्धान में वर्श्र्ास नहींकरता।'[66] ई उन िुद्र स्र्ाथपवरायणता को फटकारता है जो समझती है कक पावपयों का कठोर दण्ड देनेके भलए अथर्ा पुण्यात्माओ ांको भली भातांत पुरष्कृत करने के भलए ईश्र्र सृत्ष्ट के स्र्ाभावर्क तनयमों में उलट-फेर कर ददया करता है। पत्थरों को रोदटयों में पररणत करने के प्रलोभन में ई नहींफांसा। शारीररक रोगों को जो उसने दूरू ककया, ई सब तनयम सम्मत ही था एर् ांजहा ांवर्श्र्ास का अभार् था, ई स्र्ास्थ्य देनेमें असमथ वही रहा। ईश्र्र अचल सत्य है और उसका वर्श्र् कभी अराजक नही ांहो सकता। ईश्र्र न्यायकतावभी है। ईश्र्र का न्याय बाइत्रबल का प्रधान वर्र्य है। आदम तथा हौआ के शाप तथा केन के प्रात्याख्यान से आरम्भ करके सेन्ट जान के सदांदग्ध प्रमाण 'दशनव' तक ईश्र्र की प्रभुता तथा न्याय पर जोर ददया गया है। अन्त में ईश्र्र के उद्देश्य की ही वर्जय होगी। यहूदी-धमाचवायों के ही समान ईसाइयों ने भी पाप स्र्ीकृतत एर् ांईर्रीय करुणा की अपेिा परमात्मा के न्याय तथा िोध पर प्रायः बहुत जोर ददया है।

जब ईसा के अनुयातययों ने उसे ेईश्र्र की पदर्ी पर पहुांचा ददया तो ब्रह्मा, वर्ष्णु तथा भशर् के तीनों रूप, अनन्तता, करुणा तथा प्रभुता, ज्ञान, प्रेम तथा शत्क्कत का उसमें आरोप कर ददया गया। ई ईश्र्र का शब्द अथर्ा ज्ञान है जो इब्राहीम सेपहले ेभी था। ई रिक है त्जसने कलर्री की शूली पर अपना स्नेहभसक्कत हृदय खोला था। ई न्यायकता वहै जो उन सब लोगों को दण्ड देता है जो उसे ेरुष्ट कर देते ेहैं। बपततस्मा देनेर्ाले जान का कथन है- 'मेरे पश्चात् ्आनेर्ाला ई (ईसा) अपनेगेहूां को तो क्कटोरकर कोठरी में सुरक्षित रख छोडेगा परनतु भूसे को ई प्रज्र्भलत त्न्न में जला डालेगो।' ई 'भेडों को बकररयों से चुनकर अलग कर लेगा।'"[67]

'त्रिमूतत'व के भसद्धान्त ने केर्ल ईसा को ही ईश्र्रता नहींप्रदान की, प्रत्युत् ्'प्राचीन धम-वपुस्तक' में ईश्र्र का जो एकागीं रूप स्र्ीकृत ककया गया था, उसमें भी सुधार ककया। ईश्र्र स्र्ग वमें त्स्थत केर्ल अनन्त शत्क्कत (वपता) ही नहींहै र्रन् ्र्ह प्रेम-पूण वहृदय (पुि) भी है तथा अखखल वर्श्र्व्यापी ददव्य तवर् (पवरि् आत्मा) भी है। परमात्मा ससांार से परे की कोई ददव्य सत्ता नहींहै र्रन् ्र्ह अनन्त प्रेम है त्जसकी धारा वर्श्र्-कल्याण के भलए तनत्य प्रर्ादहत हो रही है। अर्ेलाड वएर् ांएक प्रकार से अक्कयूनस भी इस भसद्धान्त का समथनव करते ेहैं। कक

66 लक 13, 1-5.

67 मैथ्यू 25, 31-46

 न्याय-तनरत रूद्र्ध त्जहािेा-शत्क्कत का केन्द्र वपता (भशर्) है, एर् ांपवरि् आत्मा ही व्यापक प्रेम (वष्र्णु) ु है। इस
भसद्धान्त के अनुसार वपता, पुि तथा पवरि् आत्मा ही व्यापक प्रेम (वष्र्णु) ु हैं। इस भसद्धान्त के अनुसार वपता, पुि तथा पवरि् र्ेदोत्न्तक कल्पना के सत्, ् धचत् ्एर् ांआनन्दस्र्रूप ब्रह्मा के-सत्य, ज्ञान एर् ांआनन्द के अनुरूप ही है। एक बात त्रबल्कुल स्पष्ट है कक त्रिमूतत वका भसद्धान्त ईश्र्र के त्रिवर्ध स्र्रूप को व्यक्कत करने का प्रयास है। आधुतनक ईसाई-धम-ववज्ञान यह अनुभर् कर रहा है कक ईश्र्र के तीनों रूपों की एकता तभी सम्भर् है जब हम उन्हें उसकी किया के तीन प्रकार समझें, भभन्न-भभन्न तीन चेतनाकेन्द्र नही। ां

प्रायः कहा जाता है कक दहन्दू ूधम वमें ईश्र्र के न्याय पर जोर ददया जाता है एर्ां ईसाई धम वमें उसके प्रेमे पर, यह धारणा सर्ाशांतः ठीक नही ांहै। इस प्रश्न पर दोनों मतों में वर्शेर् अन्तर नहीं है। प्रेमदेर् वष्र्णु ुहमारी सहायता करने को सदा तैयार रहता है; र्ह तो केर्ल हमारे प्रयत्न की प्रतीिा ककया करता है। र्ह हमारी इच्छा के वर्रुद्ध हमारी सहायता नही ांकरता। हमारे पाप करनेपर भी र्ह हमारा उद्धार तभी करता है जब हम आत्मग्लातन का अनुभर् करते ेहैं। ईश्र्र हमारे भलए सब कुछ करने को तैयार रहता है पर यदद हम पापाचरण एर् ां स्र्ाथपवरायणता में ही रत रहें तथा उसे ेदया-याचना करें, तो न्यायानुमोददत दण्ड का वर्धान होगा ही। ईश्र्र स्र्य ां अपनी उपेिा नहीांकर सकता। र्ह सबको िमा कर देना चाहता है; परन्तु कुछ ऐसे भी दुष्कुम वहैं 'त्जनके भलए मिा न तो इस लोक में और न परलोक में ही भमल सकती है।' ईश्र्र के प्रेम की भी एक प्रणाली है त्जसके अनुसार उसका प्रकाशन होता है। यह कहना ठीक नहीांकक इससे उसकी सर्शवत्क्कतमत्ता पररसीभमत हो जाती है। सर्शवत्क्कतमत्ता वर्र्ेकहीनता नहीांहै। ईसा को भी मान्य है कक अध्यात्म-जगत् ्के भी तनयम हैं। तुच्छ तृण, चोर, गुप्त धन, मोती, पथ-भ्रष्ट भेडे, मुद्रा दश, कुमाररकाओ ांएर् ांर्ैर्ादहक सर्ािी की दृष्टान्त-कथाओ ांका यही सकोंत है कक हमारी मुत्क्कत अपनेही कमों सेहो सकती है।[68]' पाचां मूढ़ कुमाररयों ने अर्सर से लाभ नहीांउठाया; अतः र्े अपनेउद्देश्य-प्राप्त में असफल रही। ां यदद हम िमा चाहते हैं तो हमें स्र्य ांिमा करना होगा। अध्यात्म-जगत् ्के तनयम इतनेदृढ़ हैं कक ईश्र्र का प्रेम भी उनका अततिमण नहीांकर सकता। मुत्क्कत का उपाजनव करना होगा, उसे ेईश्र्र हमारे ऊपर जबरदस्ती लाद नही ांसकता। दूसूरों के पापों के भलए स्र्य ांदण्ड भोगने का स्पष्ट सकोंत है कक ईश्र्रीय प्रेम न्याय-सम्मत है। उससेभसद्ध होता है कक िमा करने से पहले ेदण्ड-वर्धान आर्श्यक है।

पाश्चात्य ईसाई धम वअनेक प्रभार्ों का पररणाम है। यूनान-वर्रोधी यहूदी धम वसे उद्भर् होनेके कारण उसका झुकार् ईश्र्र के ददव्य अलौककक स्र्रूप की कल्पना के समथनव की ओर है। अरब तथा यहूदी, दोनों को ही प्रकृतत शुष्क तथा नीरस प्रतीत होती थी; यूनानी एर् ांभारतीय को र्ह जीवर्त तथा ददव्य मालूम पडती थी। अतएर् इन लोगों ने आध्यात्त्मक तथा लौककक में, प्राकृततक तथा पारलौककक में, आत्म तथा शरीर में बहुत ज्यादा भेदे नहीांमाना। दहन्दू–ूकल्पना की पुत्ष्ट वर्धान करता है जो प्रकृतत की तात्वर्क एकता पर जोर देता है। सर्व्यापी तनयम-प्रधान्य अनस्र्था को पास नहीांफटकने देता। लोकोत्तर लोक के हृदय में ही है। जैसा आररस्टादटल ने कहा- 'प्रकृतत का शरीर ही आत्मा है। ईश्र्र ससांार का प्राण है।' इततहास के अथ वएर् ांउसके वर्कास के भसद्धान्त का अधधकाधधक ज्ञान, धाभमकव चेतना तथा उसकी प्रगतत का नूतन मनोर्ैज्ञातनक वर्श्लेर्ण

68 मैथ्यू 13, 24-30; 24, 43; 13, 44; 13, 45-46; 18, 12; 25, 14-30, 1-23; 22, 1-14

सामान्य में ही ददव्य देखना चाहता है, असाधारण में नही।ां ईश्वर की ई कल्पना जो उसे ेभभन्न बाह्य तनयामक समझा करती थी, रै्से ही जैसै ेकुम्हार घडा बनाता है, त्जसका प्रचार ईसा के बाद पाल आगस्टीन, लूथर तथा कॉलवर्न की परम्परा से ईसाई धम वके बराबर रहा है-ईसा स्र्य ांअपनेधाभमकव ्र्तार्रण से काफी जकडा था-अब धीरे-धीरे ततरस्कृत होकर एक अधधक व्यापक कल्पना स्र्ीकृत हो रही है। ईश्वर की सर्व्यापकता के भसद्धान्त को पूणतवः स्र्ीकृत करने में पयाप्वत सैद्धात्न्तक नर्गठन की आर्श्यकता होगी तथा प्राचीन कल्पना से जडडत अनेक धाभमकव भार्नाओ ांका पररत्याग करना होगा। यह नहींहो सकता कक हम ईश्वर की सर्व्यापक भी मानते े रहें तथा चमत्कार, वर्भशष्ट-कृपापिाता, एक की ही मध्यस्थता, मुत्क्कत की वर्कास पर नहीं, ईश्रीय करुणा पर तनभरवता एर् ांमृतूयु के अनन्तर अधधकाशां मनुष्यों के तनत्श्चत नरकर्ास की कल्पना से भी धचपटे रहें। ईसाई धमाचवाय वभी अब भभन्न-भभन्न मिाा में पूण वसर्व्यापकता के भसद्धान्त को अपना रहे हैं। यहूदी-र्शांननुम के फलस्र्रूप ईसा के माग वमें काफी अडचन थी ांतो भी ईश्वर की सर्व्यापकता में उसका दृढ़ वर्श्र्ास था। 'ईश्वर का राज्य तुम्हारे हृदय में है।' दहन्दुओ ांकी ही भातांत ईसा को भी मान्य था कक ससाांर में घदटत होनेर्ालेपररर्तनव दूरस्र्थ परमात्मा के आकत्स्मक हस्तेप का पररणाम नही ांहैं, प्रत्युत रे् उसकी तनयभमत प्रगतत का फल हैं। ईसा के जीर्न से दहन्दुओ ांको प्रधान उपदेश यह भमलता है कक ईश्वर तथा मनुष्य में भेद की कल्पना करना भमथ्या एर् ां तनरथकव है। ईसा स्र्य ांएक ऐसे ेमनुष्य का उदाहरण है जो ईश्वर बन गया है और कोई तनश्चयपूर्कव नहींकह सकता कक कहा ांपर उसकी मानर्ता की समात्प्त एर् ांईश्र्रता का प्रारम्भ है। ईश्वर तथा मनुष्य एक जातीय ही हैं। 'तवर्मभस' तुम यही हो।

## 2

जीर्न तथा इततहास में ईश्वर की व्यापकता तथा युग वर्शेर् में उसका अपूर् वप्रादुभार्व, इन दोनों भसद्धान्तों में पारस्पररक वर्रोध है। दहन्दू ूधम वमनुष्य के सम्पूण वआध्यात्त्मक वर्कास में ईश्वर को व्यापक मानता है। कफर भी इस तनरन्तर वर्कास के कुछ महवर्पूण वरूपों को ई ईश्वर की उपत्स्थतत के वर्शेर् पररचायक मानता है। यद्यवप ईश्वर जीर्न की प्रत्येक अर्स्था में व्यापक रहकर उसे ेतनयत्रांति करता है कफर भी रे् अर्स्थाए,ां त्जनमें उच्च रूपों का वर्कास हुआ है एर् ांश्रेेष्ठ रूपों को प्रौढ़ता भमली है, ईश्वर की व्यापकता को स्पष्टः प्रकट करती हैं। ये अर्स्थाएां, त्जनमें उच्च एर् ांश्रेेष्ठ रूपों का वर्कास हुआ है, उसकी व्यापकता का स्पष्ट तनदेश करती हैं। ऐसी दशा में मानरे्तर अर्तारों का प्रादुभार्व होता है। मानर्-सृतूष्ट के पश्चात् ्नैततक व्यर्स्था में िोभ उत्पन्न होनेपर अधधक स्पष्ट हो उठती है। तब नीतत के पुनः सस्ांथापन के भलए असाधारण शत्क्कत से युक्कत पुरुर्ों का प्रकट होना आर्श्यक हो जाता है।'[69] ये महान् ्आत्माएां, जो धम वका, नीतत का, अवर्चभलत 'भार् से समथनव करती हैं, अतनत्य में तनत्य का, भूसेमें अन्न का सामान्य पुरुर्ों की अपेिा अधधक स्पष्ट दशनव कराती ह।ैं आध्यात्त्मक महवर् की इन अभभव्यत्क्कतयों को चाहे ईश्वर का अर्तार कहो, चाहे मनुष्य की शत्क्कतयों का पूण व वर्कास, क्कयोंकक ये दोनों एक ही बात को प्रकट करने के दो ढांग हैं। उन्हें ईश्वर के सकांल्प से उत्पन्न समझते ेहैं त्जन्हें ई ददव्य ज्ञान से अपने उद्देश्य को सफल करनेके भलए ककया करता है; ककन्तु भारत के उच्च दशनव का

---

[69] भगर्द्गीता 4, 7-8, प्रोफेसर हाग की 'ससाांर से मुत्क्कत' नामक पुत्स्तका भी देखना चादहए।

तो यही दृढ़ मत है कक परमात्मा सदैर् कम वमें लगा रहता है तथा प्रेम उसका साररूप है, यदा-कदा प्रकट होनेर्ाला आकत्स्मक चमत्कार नही।ां ककसी-न-ककसी मिाा में सभी मनुष्य ईश्र्र के स्र्रूप के, उसकी शत्क्कत, प्रेम और सत्य के प्रततत्रबम्ब होते ेहैं; पर त्जन्हें अर्तार कहते ेहैं, र्े अधधक मिाा में वर्शेर्तः उसे ेप्रततत्रबत्म्बत कहते ेहैं। राम, कृष्ण तथा बुद्ध के सम्बन्ध में भी यही सच है। ईसा ही एक अर्तार है क्कयोंकक शूली पर लटके हुए भी उसने पावपयों के भलए जो प्राथनवा की थी- 'वपता, इन्हें िमा कर दो, क्कयोंकक इन्हें नहीांमालूम कक ये क्कया कर रहे हैं?' - र्ह अपनेबच्चों के भलए ईश्र्र के प्रेम का प्रतीक है; ककन्तुयह कहना कक उसका ईश्र्र से कोई वर्शेर् सम्बन्ध था त्जसकी प्रात्प्त दूसूरों के भलए असम्भर् है, एक ऐसी बात कहना है त्जसका समथनव करना कदठन है। और म ैंदारे् े के साथ कह सकता हूां कक सक्षांप्ति 'सुसमाचारों' में इसका कोई प्रामाखणक साक्ष्य भी नहीां। हाां, ईसा के पूर्वती तथा परर्ती युगों के अन्य लोगों की भाताांत उसके सम्बन्ध में भी कुछ कथायेंप्रचभलत हैं पर ऐसेमहवर् के वर्र्य में उनका मूल्य ही ककतना ! ईसा की पूर् वमनुष्य में एक अप्रमाखणक भेद के पोर्क हैंजो यहूददयों के द्रैतर्ाद का स्मरण ददलाते ेहैं। ईसा का जीर्न हमारे भलए तनरथकव होगा यदद उसमें कुछ ऐसेअपौरुर्ेय गुणों की सत्ता भी स्र्ीकार कर ली जाय त्जनकी सहायता से र्ह पूणतवा तक पहुांच सकता है। ईश्र्र के वपतृत्र् में वर्श्र्ास हमें यह स्र्ीकार करने पर वर्र्श करता कक जो काय वईसा के भलए सम्भर् हो सका है, र्ह दूसूरों के भलए भी सम्भर् है। ईश्र्र की जो शत्क्कत उसे ेप्राप्त थी, हमारे भलए भी सुलभ है और यदद उसी की तरह हम भी प्रयत्नशील बन सकें तो हम भी अपनेअन्ततनदवहत परमात्मा का वर्कास कर सकतेहैं। हम सभी ईश्र्रीय गुणों से युक्कत हैं तथा ईसा की ही भातत उसके प्रेम को त्रबत्म्बत कर सकते हैं, यदद हम भी उसकी-सी दृढ़ ईश्र्र-तनष्ठा अपने में भर सकें। अधधक-से-अधधक ईसा को अनेक, भाइयों में ज्येष्ठ'[70] समझा जा सकता है। ईसा में ईश्र्र की अभभव्यत्क्कत ठीक र्ैसी ही है जैसी ससाांर के अन्य महात्माओांमें। जो देर्त्र् उसमें प्रकट हुआ है, र्ह बीजरूप से हम सबमें वर्द्यमान है। यह समझना कक ईसा को छोडकर और ककसी ने भी ईश्र्र सेउस तादात्म्य-भार् की अनुभूतत नहीांकी, शुद्ध भ्रम है। दहन्दू–ूधम वके इततहास में अनेक उदाहरण ऐसे साधु पुरुर्ों के भरे पडेहैंजो स्र्य ांमुक्कत हो गये थे, त्जन्हने'म'ै तथा 'मेरे वपता' की एकता का अनुभर् कर भलया था, त्जन्होंने ददव्य चिुओांसे महान् ्ईश्र्र का दशनव ककया था, केर्ल इत्न्द्रय-जगत् ्के घोर अन्धकार के पटल को भेदकर कभी-कभी चमकने ेर्ाली िखणक ज्योतत-रेखाओ ांको ही नही;ां तथा र्ेसदा के भलए जाते ेहैं, उतना ही मनुष्य एर् ांईश्र्र के स्र्रूप में एकरूपता बढ़ती जाती है और जो व्यत्क्कत, यदा-कदा नहीां, तनरन्तर ब्रह्म में ही तनर्ास करता है, र्ह कह सकता है- 'म ैंर्ही हूां।' ऋवर्यों एर् ांउपतनर्दों के साक्ष्य की सत्यता को ईसा एर् ांससाांर के अन्य प्रततभाशाली साधु पुरुर्ों का अनुभर् प्रमाखणत करता है। धम वपर बभल हो जानेर्ाला अल हजाज कहता है- 'म ैंही सत्य हूां, म ैंही अपनी वप्रयतम हूां, अपना प्रेमी भी म ैंहूां। हम एक ही शरीर में तनर्ास करनेर्ाली दो आत्मायेंहैं। जब तुम मुझेदेखते ेहो तो तुम उसे ेदेखत हो; और जब तुम उसे ेदेखते े हो तो तुम मुझे देखते ेहो।' तल्लीनता की उस दशा में मनुष्य की आत्मा 'एर् ांईश्र्र में कोई भेद नही ांरह जाता। जामी कहता है- 'म ैंऔर तू के भलए यहाांअर्काश ही नहीांहै; र्े तो केर्ल भमथ्या एर् ांसारहीन कल्पनायेंहैं।"[71]

---

[70] रोमन्स 8, 92

[71] ब्राउन-फारस का सादहत्त्यक इततहास -1, पृष्ठ439 ।

ईसा की श्रद्धा और भत्क्कत में बहकर हम कह सकते हैं-ईसा में ईश्र्र पूणरूवप से व्यत्क्कत हुआ है तथा इततहास में उसका व्यत्क्कतवर् अद्वतीय है। कभी-कभी बडी अतनच्छापूर्कव इतना स्ीकार ककया जाता है कक कुछ अन्य महात्माओ ांमें भी ईश्र्र की ज्योतत का स्पष्ट दशनव हुआ है पर इतनी प्रभापूर्ण वज्योतत और कभी और कही ांनही ांददखाई पडी त्जतनी ईसा में हो सकता है कक यह सच हो, परन्तु यदद बुद्धध एर्ां कन्यूसस के अनुयायी अपने-अपने आदश वपुरुर्ों के सम्बन्ध में ऐसा ही दार्ा करें तो हमें आपवत्त करने का कोई न्याय अधधकार नही।ां यदद यह कहा जाय कक बहुत बडी आध्यात्त्मक अनुभूतत ईसा की ईश्र्रता तथा मध्यस्थता को प्रमाखणत करती है तो इस प्रकार की अनुभूतत का अभार् महान् ्मानर्ोद्धार-तत्पर महात्माओ ांमें भी नहीं है। दहन्दुओ ांका वर्श्र्ास है कक प्रत्येक गुरु उद्धारक होता है, क्कयोंकक र्ह अपनेभशष्यों में ईश्र्रीय जीर्न को उत्तेत्जत करता है तथा उनमें उस अध्यात्म-बीज को वर्कभसत करता है जो भवर्ष्य में सफल हो सकता है। कोई भी पुरुर्, जो हमारा उद्धारक हो सकता है। 'शैर् भसद्धान्त' आददक कुछ सम्प्रदायों में तो गुरु को ईश्र्र ही समझा जाता है जो दया-परर्श होकर मनुष्य को उन्नतत-माग वमें सहायता देनेके भलए अर्तररत हो जाता है। यह कहना गलत है कक मध्यस्थता के त्रबना स्र्ग वनहींपहुांचा जा सकता। यह भी स्ीकार ककया जा चुका है कक ईसा के जन्म से शतात्ब्दयों पहले े इब्राहीम स्र्ग वपहुांच चुका था।[72]

यह बात आसानी से समझ में नहींआती कक पूण वमानर्ता के समस्त आदश वगुण-सब दशाओ ांएर् ांसब कालों के भलए उपयुक्कत-ईसा में एक साथ व्यक्कत हो चुके हैंतथा र्ही अत्न्तम हैं। पृथ्र्ी पर कोई अभभव्यत्क्कत अत्न्तम नहींकहला सकती। ईश्र्र ने कभी ककसी वर्र्य में भी अपना अत्न्तम हैं। फैसला नहींददया। उसे ेसदा ही इतनी अधधक बातें बताना शेर् रह जाती हैं कक हम उन सबका भार सभाांल ही नहींसकते।[73]

पत्श्चम के ईसाई धमाचवायों में अब तक अधधक वर्र्ेचनात्मक दृत्ष्ट कोण जाग्रत हो रहा है और ईसा की मानर्ता पर अधधक जोर देने लगेहैं। उसकी सर्ज्ञव ता तथा सृत्ष्ट-रचना-चेतना पर अब अधधक जोर नहींददया जाता। दूसरी ओर इस प्रकार के र्ाक्कयों पर वर्शेर् ध्यान ददया जा रहा है कक उसका 'ज्ञान बढ़ा', 'कष्ट झेलकर ईश्र्र की आज्ञा का पालन करना सीखा', 'सकांटों के द्र्ारा ही पूण वबना' और 'हमारी ही भाततां के प्रलोभनों में डाला गया।' र्न-जीर्न के घोर कष्ट ने उसे ेहमारा भाई बना ददया। र्ह भी हमारी ही भाततां ईश्र्र के समीप अपनी दीनता का अनुभर् करके कहता था- 'तुम मुझे अच्छा क्कयों कहते ेहो? अच्छा तो अकेला भगर्ान् ्है।' 'मेरा वपता मुझसे बडा है।"[74] उसके देर्त्र् के प्रमाण में चमत्कारों का उल्लेख नही ांककया जाता। वर्ज्ञान उसमें से बहुतों को अवर्श्र्ास की दृत्ष्ट सेदेखता है। मानभसक धचककत्सा नेकुछ की व्याख्या भी की है। ईसा ने स्र्य ांअपना देर्त्र् प्रमाखणत करने के भलए कभी चमत्कार नहींददखाये। उसका तो कथन है कक दूसरे लोग भी ऐसेचमत्कार कर सकते हैं। 'यदद म ैंशैतान की सहायता से प्रेम-बाधा से मुत्क्कत देता हूां तो तुम्हारे बच्चे ककसकी सहायता से यह काम

[72] लुक 16, 24।

[73] जान 16, 12।

[74] माकव14 - 28

भारत की अन्तरात्मा 59 करते ेहैं?"[75] ईसा के साक्ष्य, दाशतवनक सत्य एर् ांधाभमकव अनुभूतत, सबका एक स्र से अनुरोध है कक अन्य
भगर्द्भक्कत साधुओ ांके ही समान उसे ेभी समझना चादहए, क्कयोंकक ईश्र्र ने प्रत्येक देश और युग में अपने साक्षियों को भेजा है।

## 3

मनुष्य ईश्र्र के अनुरूप बनाया गया है; अतः र्ह स्र्भार्तः दुष्ट नहींहोता। जैसा हम उसे ेपाते हैं र्ह तनस्सन्देह अनेक बाधाओां से तघरा हुआ है। उसकी दुबुलवतायेंस्र्भार्भसद्ध नहींहैंर्रन् ्स्र्तांता के दुरुपयोग का
पररणाम है। यहूदी कहानी कक मनुष्य ने ककस प्रकार सर्प्रवथम परमात्मा की आज्ञा का उल्लघांन करके ज्ञानर्ृ का फल चखा त्जसके फलस्र्रूप ससाांर में सकांट एर् ांमृत्यु का आवर्भार्व हुआ, इस दहन्दू-मत को पुष्ट करती है कक मूढ़ता तथा पापाचरण के कारण उत्पन्न होनेर्ाले दुःख, कष्ट मनुष्य स्र्य ांरचता है यद्यवप हमें स्र्तांता देते ेसमय ईश्र्र ने उनकी भी आयोजना कर दी थी। ईश्र्र का सम्बन्ध हमारे साथ ठीक र्ैसा ही नहींहै, जैसा कुम्हार का भमट्टी के साथ होता है। उसनेतो हमें अपनेभाग्य का तनमाणव करने के भलए पूण वस्र्तांता दे रखी है;
परन्तु मनुष्य ने अपनेझूठे, अतनत्य रूप को ही चाहा और र्ह अपनेसच्चे स्र्रूप ईश्र्र से दूर भागता रहा।
फलतः पाप का उदय हुआ। कफर भी यह पापाचरण हमारे अमरत्र् को, त्जसपर हमारा र्ांशानुगत स्र्त्र् है, छीन नहींसकता, र्ह उसे ेकेर्ल कुछ समय के भलए टाल सकता है।

र्ह भसद्धान्त, जो मनुष्य को स्र्भार्तः पापी समझता है, मुझे ेभय है, सत्य नहींभसद्ध ककया जा
सकता। हमारी प्रकृतत तो दैर्ी है। जो पुरुर् भी ससाांर में आता है, र्ह ईश्र्रीय ज्योतत से युक्कत रहता है। 'यदद म ैं तुममें न होता तो तुम हमारी खोज नहींकर सकते थे।' गेटे का कहना है- 'यदद आखों स्र्य ांसूय वन होती ांतो उन्हें सूय-वप्रकाश का ज्ञान ही कभी न होता। यदद हमारा हृदय ददव्य न होता तो ककसी भी ददव्य र्स्तु की ओर उनकी
प्रर्ृत्त नही ांहो सकती थी।'

इस दृत्ष्ट सेपाप-र्ृत्त-त्याग ककसी नर्ीन र्ृत्त का अवर्भार्व नहींहै। यद्यवप यह पूर् वजीर्न-पद्धतत में आकत्स्मक वर्पययव अर्श्य है। मुत्क्कत अपनेभीतर के देर्त्र् के ि भमक वर्कास का पररणाम है, ईश्र्रीय करुणा का फल नही।ां मुत्क्कत-किया के आधुतनक मनोर्ैज्ञातनक वर्श्लेर्ण से स्पष्ट हो जाता है कक ककसी भी आत्मा के वर्कास में परमात्मा बाहर की अपेिा उसके भीतर से ही अधधक काम करता है। दया एर्ां वर्कास एक ही किया के दो पि हैं, यद्यवप पहले ेमें एक प्रकार के आध्यात्त्मक चमत्कार अथर्ा शात्न्त का-सा सकोंत भमलता है और दूसरे में ईश्र्र तथा मनुष्य की अवर्त्च्छन्न एकता की सूचना तनदहत है।

अपनेपैतृक देर्त्र् की प्रात्प्त के भलए मनुष्य के भलए तीन प्रकार की साधना का तनदेश ककया गया है जो चेतन-जीर्न के तीनों अगों के अनुरूप है। उपतनर्त्काल में ईश्र्र को प्रधानतः तनत्य, सत्य अथर्ा प्रकाश समझा जाता था और मनुष्यों को बताया गया था कक ईश्र्र-सािात्कार के भलए उन्हें श्रद्धा एर् ांज्ञान का माग वही

[75] लूक 9, 19

 अपनाना चादहए। भगर्द्गीता के युग में ईश्र्र का प्रेम-रूप प्रबल हो जाता है और मुत्क्कत ईश्र्र की शाश्र्त
न्यायाधीश समझनेलगेऔर तप अथर्ा कठोर सरलता एर् ांआत्म-वर्सजनव का जीर्न प्रमुख बन गया। ज्ञान, भत्क्कत तथा तप में सेकोई भी हमारे सम्पूण वजीर्न को शुद्ध कर देनेमें समथ वहै।

इस प्रकार जब हम मन, हृदय एर् ांइच्छा को आभ्यन्तररक नूतनता प्रदान करते ेहैं जब हम स्र्ाथ-वभार्ना का पररत्याग कर देते ेहैंतो हमें उस आत्मा का दशनव होता है त्जसका स्र् अर्ैयत्क्कतक सार्भवौभमक कल्याण के स्र् से भमला रहता है। यही 'मुक्कत होना' है। मुत्क्कत धम-वपररर्तनव से नहीां, आत्म-शुद्धध से प्राप्त होती है। स्र्ग व तो मानर्-दृत्ष्टकोण का नाम है। मुत्क्कत उस आमूल पररर्तनव का नाम है जो आत्मा को ददव्यगुणों से पूण वकर दे। उसके र्ास्तवर्क स्र्रूप का अनुर्ाद हम अपनेशब्दों में नही ांकर सकते क्कयोंकक र्े मानर्ी अनुभूतत के आधार पर ही बनाए गये हैं। भार्ी ऐश्र्य वको हम पूणतवः नही ांजान सकते। यदद इस अमर जीर्न के स्र्रूप का काल तथा न्याय की भार्ा में र्णनव करना आर्श्यक हो जाय तो हम कह सकते हैं कक व्यत्क्कतगत आत्मा का परमात्मा में पयार्वसान हो जाना है; स्थूलरूप में र्ह ब्रह्मलोक की नागररकता है जहा ांसे भौततक जगत् ्में कफर पतन होनेकी कोई सम्भार्ना नही।ां शकांराचाय वने ब्रह्म के साथ व्यत्क्कत की इस ऐक्कयानुभूतत का र्णनव करना असम्भर् बताया है और कहा है कक यदद उसको ब्रह्मनगर में तनर्ास करना है। पर रामानुज का वर्श्र्ास है कक उससेउच्चतर कुछ भी सत्य अथर्ा बुद्धधग्राह्य नहीांहै।

स्र्ग वमें पहुांचकर ईसा ने कहा है- 'अपनेदेर्-मत्न्दर में म ैंउसे ेस्तम्भ बना दूांगा और उसका कफर आर्ागमन नहीांहोगा।" 'उसका कफर आर्ागमन नहीांहोगा'[76]- ये शब्द दहन्दू–धम वके उस भसद्धान्त से त्रबलकुल भमलते हैं त्जसका कहना है कक मुक्कत आत्मा कफर ससाांर में कष्ट उठानेनहीांआती-न पुनरार्रृत्त । मुक्कत आत्मा के लिण दहन्दू ूएर् ांईसाई मत में समान ही हैं। मुत्क्कत का फल ज्ञान, प्रेम तथा आनदां है। मुक्कत पुरुर् को ससाांर के मगांलमय होनेमें दृढ़ वर्श्र्ास होता है; अतः र्ह दुराग्रहों अथर्ा भसद्धान्तों के झझांार्ात से िुब्ध नही ांहोता । उसमें र्ह सच्चा प्रेम अथर्ा आन्तररक भ्रातृभार् जग जाता है जो केर्ल शिुओांको ही िमा नहीांकरता प्रत्युत् ् मानर्ता की तनत्श्चत सेर्ा भी करता है। ऐसा कोई महान् ्धाभमकव नेता नहीांहुआ त्जसने प्रेम के भसद्धान्त की महत्ता को स्र्ीकार न ककया हो। उपतनर्दों का मुख्य भसद्धान्त अदहसांा है। बुद्ध का आदेश है कक जो तुमसे घृणा करे, तुम्हें उसका कल्याण करना चादहए। बाइत्रबल की 'बदहगमवन' (एक्कसोडस) नामक पुत्स्तका में भलखा है- 'यदद तुम्हें शिु ुका बैल अथर्ा गधा भमले,े तो तुम्हें अर्श्य उसेर्ापस लाकर उसके स्र्ामी के पास पहुांचा देना चादहए।' 'शर्ां र्णनव' के पतैंालीसर्ें अध्याय से हमें इस बात का ज्ञान होता है कक प्राचीन लोग उदार पुरुर् की ककतनी श्रद्धा करते ेथे। उस परमोत्कृष्ट स्थल को देखखए त्जसमें जोजेफे अपने भाइयों को िमा करता है। रोमान्स को पि भलखते ेसमय 'पाल', 'लोकोत्क्कतयों की पुस्तक' का उल्लेखे करता है- 'यदद तुम्हारा शिु भूखा हो तो उसे ेखाना खखलाओ; अगर र्ह प्यासा हो तो उसे ेपानी वपलाओ।' ईसा के वर्र्य में भलखा है- 'जब लोगों ने उसे ेगाभलया ांदीां तो उसनेगाभलया ांनहीांदी;ां जब उसे ेकष्ट ददया गया तो उसने बदला नहीांभलया।"[77] मुक्कत पुरुर् के पास केर्ल ज्ञान

[76] ददव्य दशनव (रर्ेलेशन)3, 12।

[77] पीटर 2, 23

भारत की अन्तरात्मा 61 तथा प्रेम ही नहींहोता र्न् ् उसके पास तो र्ह शातांत भी होती है जो मनुष्यों एर्

ांपररत्स्थततयों की शत्क्कत से परे
होती है और त्जसका र्णनव दहन्दू ूककया करते ेहैं। यही र्ह आनन्द है त्जसकी ओर ईसा ने सकेंात ककया था, जब उन्होंनेकहा था- 'अपना आनन्द म ैंतुम्हें देता हूां और तुम्हारा आनन्द तुमसे कोई नहींछीनता।'

यदद अपनेत्याग से दूसूरों के पापों का प्रायत्श्चत करने के भसद्धान्त को हम न मानें, यदद हम इस बात में वर्श्र्ास न करें कक ईसा के बभलदान के फलस्र्रूप ईश्र्र ने मनुष्यों को कफर से अपना भलया तो दहन्दू–ूधम वएर् ां ईसाई धम वमें मुत्क्कत के स्र्रूप तथा साधन के सम्बन्ध में आपाततः महवर् का भेद नहींरह जाता। यह बात तो तनवर्र्वाद है कक सभी साधुओ ांकी तरह ईसा भी ककसी हद तक हमें पापों से बचाकर ईश्र्र की ओर ले जाता है; ककन्तु ईसा का बभलदान लोगों के पापों का प्रायत्श्चत करे यह अनगलव बात है। ईसा हमारा उद्धारक है, क्कयोंकक अपनेजीर्न में र्ह हमें ईश्र्र-प्रेम का प्रमाण देता है जो सभी सकांटों एर् ांदुघुटवनाओां में हमारा उत्साहर्द्धवन करेगा। र्ह हमें इस बात का तनत्श्चय करा देता है कक ससाांर, शारीररक र्ासना एर् ांशैतान पर वर्जय प्राप्त करके हम पूण वबन सकते हैं। ररट्शी ने ठीक ही कहा है- 'उसके जीर्न का र्ास्तवर्क सत्य, जो हमपर प्रकट होता है, यही है कक त्जस माग वका दशनव उसनेहमें कराया तथा जो उत्साह उसनेहममें भर ददया है, उससे यह सम्भर् हो गया है कक उसी की तरह हम भी ईश्र्र तथा ससाांर सेअपना सम्बन्ध स्थावपत कर सकें ।[78]

## 4

कम वतथा पुनजन्वम का भसद्धान्त, जो दहन्दू–ूधम वकी वर्शेर्ता है, स्पष्टतः अधधकाशां ईसाई-वर्द्र्ानों को नापसन्द है। मुझे ेभय है कक इस सम्बन्ध में उन्हें भमथ्या-प्रचार का भशकार होना पडा है। मोि अथर्ा तल्लीनता तब तक सम्भर् नहींजब तक र्े अपनेसकीणा वव्यत्क्कतवर् से धचपटे हैं। जब तक इस भेद-प्रर्ृवृत्त का आमूल वर्नाश नहींहोता, ब्रह्मात्मैक्कय की अनुभूतत नही ांहो सकती। जब तक हम समय पर वर्जय प्राप्त करके पूण वनहींबन जाते,े हम इसी ससाांर के, आर्ागमन के, चक्ककर में पडे रहेंगे।े यह मत उतना उपाहासास्पद नहींहै, त्जतना इसे े सामान्यतः बताया जाता है। यदद मोि ससाांर से परे की त्स्थतत है तो जब तक हम ससाांर से धचपटे रहेंगे,े काल में ही सीभमत रहेंगे,े तब तक हम उस अमरता को नहींप्राप्त कर सकेंगे। जब तक हम र्ैयत्क्कतक दृत्ष्टकोण से ऊपर उठकर सार्लवौककक दृत्ष्टकोण को नहींअपनाते ेतब तक हम सत्य तक नहींपहुांच सकते। र्ैयत्क्कतक दृत्ष्ट बनाये रखकर सार्लवौककक दृत्ष्टकोण को प्राप्त कर लेनेका प्रयास कभी सफल नहींहो सकता। नैततक वर्कास का यही लिण है। उसका आधार व्यत्क्कत होता है त्जसकी अपनी योजनाए,ां अपनेउद्देश्य एर् ांअपनी रुधच होती है तथा जो इसी प्रकार के अन्य लोगों से तघरा होता है। नैततक प्रयास के द्र्ारा व्यत्क्कत अपनेलक्ष्य के समीप र्ैयत्क्कतक नैततकता का लोक है त्जसका भसद्धान्त अनन्त वर्कास है, पूण वसफलता की सच्ची अनुभूतत नही।ां काण्ट के नीततशास्ि में एक बडी ही उपदेशपूण वउपमा दी गई है। धम वतनयम का अनुरोध है कक मानर्-प्रकृतत के भार्ना-मूलक अ ांश का पूण वतनरोध कर ददया जाय। हमारे र्तमवान अनुभर् में ऐसा होना असम्भर् है; अतः इसकी पूतत वके भलए र्ह अनन्त भवर्ष्य की कल्पना करता है; परन्तु कान्ट भूल जाता है कक असम्भर् काय वके भलए अनन्त काल

---

[78] समथनव तथा सत्न्ध (जस्टीकफकेशन तथा ररकन्सीभलयेशन), पृष्ठ 387

भी अपयाप्वत ही भसद्ध होगा। पररत्च्छन्नकता वअनवत्च्छेन्न पूणतवा की उपलत्ब्ध कभी नहीांकर सकता, भले ही ई अनन्त काल तक मरता-खपता रहे। काण्ट का अनुरोध असगांत है। पररत्च्छन्नता और ससीमता की भार्ना को भमटा देना ही एक उपाय है। तभी हम पररत्च्छन्नता के अनन्त वर्कास से, त्जससे ेकोई सन्तोर् नहीांभमल

सक्को,क्अपनीररिरा कर सकते हैं। जब तक हम सासांाररक दृत्ष्टकोण का पररत्याग नहीां करते,े शृखां इत्न्द्रयजगत् ्से ऊपर अपने को नहीांउठाते, देश-काल के व्यत्क्कतत्र् से ऊपर नहीांउठ जाते,े मुत्क्कत की कोई सम्भार्ना नही।ां यदद हम केर्ल नैततकता की भेदे-बुद्धध के ऊपर उठकर धाभमकव स्तर पर पहुांच सकें तो यहीांपर, इसी समय, अनन्त जीर्न को प्राप्त कर सकते ेहैं।

ससांार में सर्वि कम-वतनयम पाया जाता है। यह धम वके सभी नाश न होनेका तनयम है, त्जसके होनेसे श्रम तथा कष्ट उठाकर हम जो कुछ प्राप्त करते ेहैं, ई हमारे भलए सुरक्षित रहता है तथा हम त्जस चररि का तनमाणव करते ेहैं, ई सधांचत रहता है त्जससे ेहमें पुराना रास्ता कफर न चलना पडेऔर हम सदा आगे ेकी ओर, ऊपर की ओर, अपनी दृत्ष्ट रख सकें। कमतवनयम यह है कक प्रत्येक व्यत्क्कत को, जब तक ई अपनेतनत्श्चत लक्ष्य तक नही ांपहुांचता, बराबर अर्सर भमलेगा। यदद ईश्र्र प्रेम है तो कोई भी सदा के भलए पथ-भ्रष्ट नहीांरह सकता। ईश्र्र इस रि के कम वमें तब तक बराबर लगा रहेगा जब तक प्रत्येक व्यत्क्कत के भलए ईश्र्र द्र्ारा तनधारवरत उद्देश्य की समात्प्त नहीं होती। मनुष्यकृत पाप उसके अमरवर् को ढक सकता है, उसका वर्नाश नहीांकर सकता। ईश्र्र का प्रेम नीच-से-नीच पापी को भी उससे त्रबलकुल पराङमुख नहीांहोने देता। यदद मृत्यु ही हमारा अर्सान होता तो त्जस उद्देश्य ने हमारी सृत्ष्ट की है, ई वर्फल हो जाता, क्कयोंकक हममें से अधधकतर लोग पापी दशा में ही त्रबना पश्चात्ताप ककये ही मर जाते ेहैं। यदद हम ईश्र्र के उद्देश्य से ईश्र्र की वर्फलता नहीांस्र्ीकार करते–त्जसके मान लेने से ईश्र्र के स्र्रूप में बहुत बडी पररत्च्छन्नता को स्र्ीकार करना होगा-तो मृत्यु के पश्चात् ्प्रत्येक आत्मा को, आत्मवर्कास के भलए तथा अपने में ही ईश्र्र को अभभव्यत्क्कत करने के भलए उधचत अर्सर भमलना चादहए। उस दूसरे भसद्धान्त की अपेिा, त्जसनेअधधकतर मनुष्यों के भलए नरक की रचना कर रखी है एर्ांत्जसका ईसाई-जगत् ्में बडा मान है, यह मत ईश्र्र के प्रेम तथा न्याय को ध्यान में रखते ेहुए अधधक सुसगांत प्रतीत होता है। ईश्र्र के प्रेमरूप की सत्यता को अधधक अनुभर् करने पर ईसाई-वर्द्र्ान् ्भी मृत्यु के पश्चात् ्र्ाले वर्कास को मान लेंगे।

यह मानकर कक ईश्र्र अपने दुराचारी पुिों का वर्नाश कर देता है, हम ईश्र्र में उस बबरव प्रर्ृत्त का आरोप कर देते ेहैं त्जसका शोध सभ्य मनुष्यों ने भी कर भलया है। यदद ईसा छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लेकर अपने श्रोताओ ांसेकहता था कक ईश्र्र को प्रसन्न करने का एक ही उपाय है कक तुम भी इन्हीांकी तरह बन जाओ, तो हमारा यह व्यर्हार ककतना िूर होगा कक स्र्ग वके इन नागररकों को हम नरक की ज्र्ाला में फेंक दें?

सन्त पाल के कथनानुसार- 'ईश्र्र के पुिों की अभभव्यत्क्कत की प्रतीिा में.... समस्त सृत्ष्ट र्ेदना-वर्ह्र्ल होकर दुःखभरी भससककया ांले रही है।' अगर कुछ पुरुर् अपने को ईश्र्र के पुिरूप में अभभव्यत्क्कत करने से सदा के भलए र्धांचत करे ददयेगये हैं तो ईश्र्र-तनधारवरत ससांार की आदश वपररणतत भगां हो चुकी है। ईश्र्र की

सर्व्वयापकता का अनुरोध है कक हम यह वर्श्र्ास करें कक कोई भी अनन्त काल तक नरक में ही सडते ेरहने के योग्य नही ांहै। ई ककतना ही क्कयों न भटक जाय, ऐसा नही ांहो सकता कक उसका उद्धार एकान्त असम्भर् हो जाय। अपने पाप, मूखतवा एर् ांस्र्ाथपवरायणता से कोई अपने देर्त्र् को ककतना ही क्कयों न ढक ले, उसे ेसर्थवा दूरू कर लेने की शत्क्कत उसमें नहीांहै। केर्ल तनस्सहाय शान्त जीर्न, ई व्यत्क्कत त्जसका आधार अनन्त परमात्मा नहीांहै, दूसूरे शब्दों में केर्ल ई मनुष्य ही त्जसकी रचना ईश्र्र ने न की हो, ऐसा कूडा हो सकता है जो नरक की ज्र्ाला में फेंके जाने के योग्य है, ई व्यत्क्कत नहीांजो मनुष्य की ददव्य आकृतत से सम्पन्न है। जीर्न में ई ककतना ही घोर पाप क्कयों न करें, उसकी अमरता नष्ट नहीां हो सकती। जूडस के घृखृणत आर्रण के नीचे बीजरूप में ददव्य शत्क्कत को धारण ककये ककसी ईसा की मुद्रा तछपी है। सन्त पाल का कहना है- 'लोगों के हृदय पर एक पदा व पडा; ककन्तु जैसे ेही कोई पुरुर् ईश्र्र की ओर बढ़ेगा।' इन शब्दों पर ध्यान दीत्जए। इसका अथ वहै कक व्यत्क्कत के इततहास में ककसी-न-ककसी समय इस जीर्न में अथर्ा इसके बाद र्ाले जीर्न में, जभी ई आत्मग्लातन का अनुभर् करेगा, उसे ेउद्धार का मौका अर्श्य भमलेगा। दहन्दुओु ांकी दृत्ष्ट में 'डाइर्ज्' ् को दृष्टान्त पराकाष्ठा के दु:ख की कथा है।'[79] आत्मग्लातन से भरकर ई एक छोटे-से अनुग्रह की, सो भी अपने भलए नहीां, याचना करता है पर ईश्र्र उसकी प्राथनवा पर ध्यान ही नहीांदेता, क्कयोंकक नरक में पडेहुुए व्यत्क्कत के भलए मुत्क्कत की कोई सम्भार्ना नही।ां मर चुकुने के बाद, ऐसा प्रतीत होता है, मनुष्य के भाग्य का तनणयव सदा के भलए हो जाता है। यदद हम यह भी मान लें कक ईश्र्र प्रेम नहीांहै, ई कठोर न्याय ही है तथा अन्याय पर उसे घोर िोध आता है तो भी डाइर्जू ूके साथ जो व्यर्हार ककया गया है ई न्याययुक्कत नहीांहै। यदद इस जीर्न में ककसी ने अपनी िुदटयों के भलए पश्चात्ताप नहीांककया तो इसके भलए हम उसे ेअनन्त काल तक तो दण्ड नहीांदे सकते। 'पुरानी धम वपुस्तक' भी ईश्र्र के केर्ल न्याय-रूप के ऊपर उठ गई है। कुछ महात्माओ ांएर् ांभजन-लेखकों के वर्चार अधधक वर्शाल हैं।' परमात्मा दयालु एर् ांिमाशील है; ई देर में िुद्ध होता है पर कृपा करने में बडा उदार रहता है।"[80] ऐसेईश्र्र से, जो िमा करने को सदा तैयैार रहता है तथा पापी को भी कफर से शरण में ले सकता है, डाइर्ज् ्का भला हो सकता है। ईसा के ईश्र्र से ई ककतनी अधधक आशा कर सकता है जो अपव्ययी पुि के स्र्ागत की प्रतीिा में बैठा वपता ही नहीांहै र्रन् ्र्ह गडररया भी है जो पहाडों में भटकी हुुई भेडों की खोज भी करता है। यदद ईश्र्र पावपयों को खोजकर सीधे माग वपर लाता है तो डाइर्ज् ्का पश्चात्ताप उसी प्रसन्नता का वर्र्य होगा। यदद ईश्र्र में कल्पनातीत दया है, यदद ई हमारे वर्चारों से बढ़कर, हमारी इच्छा से अधधक, कृपालु है, तो क्कया ऐसे भवर्ष्य की आशा करना, त्जसमें डाइर्ज्–्जैसे ेआत्माएांअपना वर्कास कर सकें, इतनी बडी दुराशा है कक ई सत्य न हो सके? यदद पापी होकर भी तुम अपने बच्चों को सुन्दर उपहार देना जानते ेहो तो स्र्ग वमें रहनेर्ाले तुम्हारा वपता मागांने पर तुम्हें ककतना अधधक नहीांदे सकता।'[81] यदद यह यदद यह सत्य है कक त्जतनी िमा हमनेपाई है, उतनी िमा हम स्र्य ांदूसूरों को दे नहीांसकते तो क्कया यह मानना ठीक होगा कक परमात्मा त्रबना बदला भलए नहीांमान सकता? वर्कास के भलए अनन्त भवर्ष्य तनबाधव पडा है।

---

[79] लूक 16, 19-31

[80] भजन 103, 81

[81] मैथ्यू 7, 11।

यह कहने के अलार्ा कक परमात्मा त्जदां लोगों का ईश्र्र है मुरदों का नहीं, ईसा ने और कोई र्णनव भवर्ष्य-जीर्न का नहींककया। भेडों तथा बकररयों, डाइर्ज् ्तथा लेजरस आददक दृष्टान्त-कथाओंमें जो सकेंत पाये जाते ेहैं रे् उस युग के स्र्ग वएर् ंनरक-सम्बन्धी उन वर्चारों से प्रभावर्त है जो उन्हें देश वर्शेर् समझकर आनन्द तथा दुःख से भरा मानते ेथे, अतएर् रे् र्तमवान प्रश्न से असम्बद्ध हैं। इतना स्पष्ट है कक मृत्यु और न्याय में बहुत अधधक काल का अन्तर ई नहींमानता था, क्योंकक धनी अततभिक तथा लेजरस को प्रायः मृत्यु के अनन्तर ही दण्ड भमल गया था। पश्चात्ताप करने र्ाले चोर को ईसा धोखा नहींदे रहा था, जब उसनेकहा था- 'आज तुम हमारे साथ स्र्ग वचलोगे े।'[82] 'ईसा के इन कथनों से इस शास्मित का समथनव नहींहोता कक मरने के बाद मृत पुरुर् अपनेभौततक शरीर के साथ न्याय के भलए उठेंगे। उस साम्प्रदातयक मत को मानने पर यह जानना कदठन है कक मृत्यु एर् ंन्याय के बीच के माल में असख्ंय मृत पुरुर्ों पर कैसी बीतती है। ईसा के चररि एर् ंभशिा के अनुकूल स्र्ग वतथा नरक की केर्ल यही व्याख्या हो सकती है कक उनका सकेंत मानभसक पररर्तनव की ओर है। स्र्ग वआत्मा की उन्नतत का प्रतीक है और नरक उसके वर्परीत। और स्र्ग वमें नरक की ही भातांत कई स्तर हैं, भगर्ान् ्का राज्य में अनेक राजप्रासाद हैंऔर प्रत्येक व्यत्क्कत अपनेवर्श्र्ास की दृढ़ता एर् ंर्धाचत पुण्य के अनुसार उपयुक्कत स्थान पर पहुांचेगा। यही ई पद्धतत है त्जसमें भगर्ान् ्का न्याय चलता है-यही कम-वतनयम का भसद्धान्त है। त्जस भातांत कोई व्यत्क्कत प्राप्त अर्सर का उपयोग करेगा र्ैसी ही उसकी गतत होगी एर् ंउसके उपयोग के प्रकार एर् ंवर्स्तार पर उसकी उन्नतत का स्तर तनभरव होगा। उसके कथनों से इस बात का साफ पता चलता है कक ईसा को आध्यात्त्मक जीर्न की तनरन्तरता का, मृत्यु के पश्चात् ्भी उसकी सत्ता का, ज्ञान था। उसे े पता है कक न्याय के ददन लोगों को प्रत्येक असाधानी अथर्ा लापरर्ाही के साथ कहे हुए शब्द का उत्तर देना होगा। स्नेह एर् ंकरुणा से प्रेररत हमारे सब िुदर कर्मों का -'म ैंभूखा था और तुमने मुझे ेखाने को ददया था'- काफी महवर्पूण वपररणाम होगा।

मनुष्य के व्यत्क्कतवर्-वर्कास को त्जतना कुछ ज्ञान हो सका है, यह भसद्धान्त उसके अनुकूल है। पूणतवः अथर्ा पवर्िता की प्रात्प्त एक िभमक नैततक किया का पररणाम है, आकत्स्मक घटना नही।ां साधारणतः आत्मवर्कास ही किया बराबर जारी रहती है; उसकी सीमा कहा ंहोगी, इसकी कल्पना भी नहींकी जा सकती है। प्रगतत एर्ांवर्कास ही व्यत्क्कतवर् का तनयम है और इसके भलए समय तथा अर्सर दोनों ही आर्श्यक है। कम-व तनयम एक वर्शाल िि है, त्जनमें आत्म-वर्कास के भलए पयाप्वत अर्काश होगा।

यह तनयम इस बात पर ठीक ही जोर देता है कक हमारा समस्त आचरण ही हमारे भवर्ष्य का तनणयव करता है। बपततस्मा-जैसी एक अकेली घटना मनुष्य के भाग्य का तनणयव नहीं कर सकती। यदद अन्य पररत्स्थततयांसमान हैं तो बपततस्मा लेकेर शीघ्र ही मर जानेर्ाला बच्चा तथा त्रबना बपततस्मा के ही चल बसनेर्ाला भशशु प्रायः एक समान ही भवर्ष्य के अधधकारी होंगे। यह जानकर ईसा को महान् ्खेद होगा कक उसके प्रेम-सन्देश के अनुसार श्रद्धा में प्रमाद के कारण, दूसूरे धम वमें उत्पन्न हो जाने की दुघुटवना के कारण अथर्ा ककसी चमत्कारपूण वसस्ांकार के अभार् के कारण ककसी को भी अनन्तकाल तक नरक-यातना भोगनी होगी।

---

82 लूक 23, 1,43।

उसका भाग्य तो उस आध्यात्मिक वर्कास पर तनभरव होगा, त्जसके प्रयास में उसे ेसफलता अथर्ा असफलता भमली है।

कम-वतनयम के वर्रुद्ध यह कहा गया है कक कुछ अचेतन यिां से भमलता-जुलता है और ईश्र्र के प्रेम के साथ उसका ठीक मेल नहीां खाता। दहन्दू–शास्ि्ईश्र्र की उस कल्पना को त्रबलकुल पसन्द नहीांकरता जो उसे े तनरांकुश बताती है और यह मानती है कक ई जब चाहता है तो ककसी को पापी तथा ककसी को साधु ुबनाकर तनसगतवनयम में हस्तिेप ककया करता है। यह कहना कक ईश्र्र का प्रेम नैततक आचरण से वर्रुद्ध नही ांहोता, कालवर्न के भसद्धान्त को मान लेना है जो मनमाने अवर्चारपूण वधम-वतनयमों का उपदेश ककया करता था और कहता था कक ईसा के भक्कत कुछ भी क्कयों न करें, सद्गतत पायगें ेतथा जो उसके भक्कत नहीांहैं रे् कुछ भी क्कयों न करें, नरक में पडगें ेही। लोगों के आचरण की उपेिा करना ईश्र्र के भलए सम्भर् नहीां है, यद्यवप उसका प्रेमे इतना वर्शाल है कक जो व्यत्क्कत भी ठीक कदम उठाता है, उसकी सहायता ककये त्रबना ई नहीांरह सकता। अध्यात्म-जगत् ्के तनयमों का अनुरोध है कक पश्चात्ताप के बाद पापों के भलए िमा भमल जाना चादहए। धम-व तनयम तो ईश्र्र का प्राण ही है; अतः यह आश्यक है कक हमारे भार्ी अनुभर् हमारे कमों की नैततकता पर आधाररत रहें। ईश्र्र की दृढ़ता और उसके प्रेम में कोई वर्रोध नहीांहै। ईश्र्र की सर्व्यापकता का भसद्धान्त यह है कक ईश्र्र का न्याय कही ांबाहर से नही ांआता; ई तो भीतर से ही प्रेररत होता है। हम अपने कमों के ही द्र्ारा उठते ेअथर्ा धगरते ेहैं। ईश्र्र के तनयमों से छूटना सम्भर् नहीां; रे् हमारे हाथ और पैरों से भी अधधक समीप हैं और र्ास्तर् में हम सबका मूल है। कम-वतनयम का अथ वयह है कक जो ईश्र्रप्रणीत तनयमों का उल्लघांन करेंगे,े रे् उस उल्लघांन के फलस्र्रूप अर्श्य दुुःख भोगेंगेयद्यवप पश्चात्ताप एर् ांसुधार की सम्भार्ना प्रत्येक त्स्थतत में रहेगी।

दहन्दुओु ांके इस कम-वतनयम को यात्रांकि मानकर-क्कयोंकक इसके अनुसार प्रत्येक व्यत्क्कत को अपने कमों को पूरा फल भोगना पडता है-जो लोग इसकी तनदाां करते ेहैं, रे् एक अनोखे ढांग से उससे ेबुरे इस तनयम को स्र्ीकार कर लेतेहैंकक पापी के अततररक्कत ककसी दूसूरे के उन पापों का फल भोग लेनेसे काम चल जाता है। ठीक हो चाहे गलत, यह बात तो समझ में आती है कक कोई मनुष्य ककसी दूसूरे के पाप का फल भोगे पर क्कया तब त्स्थतत यदद घृखृणत नहीांतो कम-से-कम लोक-वर्रुद्ध नही ांहो जाती जब पापी परम सतोार् के साथ यह तनश्चय कर लेता है कक उसके पापों का दण्ड दूसूरा भोगे; यह भसद्धान्त वर्चारहीन पुरुर्ों को इस धोखे में डाले ेरहता है कक रे् त्जतना चाहें पाप करते ेरहें, क्कयोंकक ककसी-न-ककसी ददन ईश्र्र एक दूतू अथर्ा अपने पुि को अर्श्य भेज देगा, जो सबके पापों का दण्ड भोग लेगा। रूदढ़र्ादी ईसाई-मत ईसा के कष्ट एर् ांमृतूयु को त्जस रूप में देखता है, ई तभी सम्भर् हो सकता है जब हम ईश्र्र को एक सुन्दर तराजू ूमान लें। दहन्दू–ूमत में ईश्र्र का प्रेम तथा मनुष्य का यत्न, दोनों ही आध्यात्मिक उन्नतत के भलए आर्श्यक मानेगये हैं। यह प्रभसदांध ही है कक कम-वतनयम की उद्भार्ना मनुष्यों की वर्र्मता को समझानेके भलए की गई है। अनुभर् से ज्ञात होता है कक सब मनुष्य बुद्धध अथर्ा बाह्य पररत्स्थततयों में समान नहीांहोते। मानर्ात्मा के तनमाणव में र्शां-परम्परा तथा र्ातार्ण का पयाप्वत प्रभार् पडता है। यदद कालवर्न की ही भाताांत हम भी वर्श्र्ास करते ेहैं कक ससाांर का तनयन्ता कोई स्नेहशील, वर्चारर्ान् ्व्यत्क्कत है तो हमें मानना ही पडेगा कक यह वर्र्मता आकत्स्मक, केर्ल घटनाजात, नहीांहै,

 यहांतक तो दहन्दू ूसमझ सकता है; ककन्तु जब कालवर्न इस तनर्ाचवन अथर्ायन के भसद्धान्त को सामनेरखता
है कक ईश्र्र की स्र्च्छन्द इच्छा ने ककसी को स्र्ग वतथा ककसी को नरक के भलए चुन रखा है तो दहन्दू ूउसके नेतृतूर् को सन्देह की दृत्ष्ट से देखता है और यह जानना चाहता है कक क्कया इससे अधधक सयुांत्क्कतक समाधान नही
ां
हो सकता। ईश्र्र तथा मनुष्य के बीच ऐसेजड-सम्बन्ध को मान लेनेकी कोई आर्श्यकता नही।ां कम वका भसद्धान्त इस गुणर्ैधचत्र्य को परमात्मा की सयांत इच्छा पर आधाररत मानता है। ईश्र्र के स्र्रूप में ककसी सर्थवा वर्चारहीन तवर् का समार्ेश करने के भलए दहन्दू ूतैयार नही।ां उसका वर्श्र्ास है कक एक ही द्धवमान उद्देश्य वर्श्र्-भर के वर्कास में अभभव्यक्कत हो रहा है और यदद कुछ लोग दूसूरों की अपेिा अधधक सुगमतापूर्कव ईश्र्र के कृपापाि बन सकते हैं तो केर्ल इसीभलए कक पहले ेजन्म में र्े काफी प्रयास कर चुके हैं। सन्त पाल का कथन है- 'आदमी जो बोता है, र्ही काटता भी है।' कम-वतनयम इस बात को मान लेता है तथा थोडा और आगे े बढ़कर कहता है- 'जो कुछ भी आदमी काटता है उसे ेउसने अर्श्य बोया होगा।' मेरा ख्याल है कक ईसा को इस व्यापक सकोंत का ज्ञान था। पिघात के रोगी से जब उसने कहा था- 'पुि, - दहम्मत बाधों, तुम्हारे पाप िमा कर ददये गये हैं,' तो उसका यही अभभप्राय था कक उसकी पीडा उसके पूर्वपापों का पररणाम थी। हो सकता है कक पापी उन्हें भूल गया हो पर ईश्र्र नहींभूला। आधुतनक मनोवर्ज्ञान का कहना है कक हमारे पूर्वकम वअचेतन मन में सगृांहीत रहते ेहैं। ईसा ने कम-वतनयम जैसे ेभसद्धान्त की कल्पना करके रोगी से कहा था-(सन्त जान 5, 14)। हमारी वर्पवत्तयांककसी न्यायाधीश की मनमानी आज्ञा नहींहै जो हम पर लाद दी जाय,ां भले ही हम उसके अधधकारी न हों। हमारी इच्छा के वर्रुद्ध भी जो वर्पवत्त हमारे गले मढ़ दी जाती है, र्ह हमारे ही पूर्वपापों का पाररश्रभमक है। हम उसे ेसम्मान अथर्ा गर्वका वर्ंय नहींसमझ सकते। यदद ऐसा होता तो नरक-यातना भोगनेर्ालों के भलए लजाने की बात ही कौन-सी थी। ईसा वर्पवत्त की यही उपयोधगता समझता था कक र्ह हमें पाप से रोके तथा धम वमें प्रोत्सादहत करे।

स्र्ेच्छापूर्कव जो कष्ट उठाया जाता है उस पर उपयुक्कवत कथन नहींघदटत होता। र्ह कष्ट तो आत्मा-शुद्धध के भलए तब तक उठाया जाता है जब तक हमें अमर जीर्न की प्रात्प्त न हो जाय। जब हम पूण वहो जाते ेहैं तो हम भी ईश्र्र के तनरपेि भार्ों के सृजन एर्ंरिण में सहायक हो जाते ेहैं। उसके उपरान्त कभी कष्ट स्र्ेच्छापूर्कव स्र्ीकार ककया जाता है यद्यवप र्ह कष्ट सामान्य कष्ट से सर्थवा भभन्न होता है। मानर्जातत की रिा के भलए भशर्ने वर्षपान ककया। महायान सम्प्रदाय के अनुसार बुद्ध ने मनुष्यों के कल्याण के भलए तनर्ाणवपद को त्याग ददया था। पूर्वपाप के दण्डस्र्रूप तथा उसी प्रकार के प्रतीत होने र्ाले,े महात्माओ ांद्र्ारा स्र्ेच्छा से अगीकृत कष्ट के अलार्ा एक तीसरे प्रकार का कष्ट भी होता है त्जसे ेदहन्दू–ूशास्िों में तप कहा गया है। तप उस कष्ट को कहते ेहैं जो मुत्क्कत पथ के पधथक आत्म-वर्कास अथर्ा वर्श्र्-कल्याण के भलए स्र्तः अपने ऊपर ले लेते हैं। यह बडा ही कदठन काम है और ससांार के बडे-से-बडेमहात्मा उससे ेघबरा गये हैं। जेथेसी मीन का स्थल देखखए। मुत्क्कत पाने के भलए सबसे अधधक उपयुक्कत माग वयही लोक-दहत के भलए कष्ट उठाना है। सन्ांयासी सम्राट् भशर्अपनेभक्कतों से कठोर सन्ांयास एर्ंआत्म-वर्सजनव की आशा करते ेहैं, र्ैसे ही जैसे ेब्रह्मा ध्यान और वर्ष्णुुभत्क्कत चाहते हैं। यदद कोई पापमुक्कत होकर ईश्र्र का पुि बनना चाहता है तो स्नेह से प्रेररत होकर वर्श्र्के भलए कष्ट उठाने का मूल्य उसे ेचुकाना ही होगा। ईसाई त्जस स्र्त्स्तक-धचन्ह को इतना महवर्देते ेहैं उससेदहन्दू ू

जरा भी नहींधचढ़ते ेऔर न उसे ेरे् ककसी प्रकार की अडचन ही मानते ेहैं। ई तो ईश्र्र की र्ास्तवर्क करुणा का प्रतीक है। ई प्रकट करता है कक ककस प्रकार प्रेम का आधार आत्म-वर्सजनव ही है। दहन्दी-धम वके इततहास में अनेक ऋवर्यों तथा बुद्धों के दृष्टान्त हैं त्जन्होंनेतपस्या को भी पवरि् कर ददया है और त्जन्होंनेलोक-दहत के भलए आर्श्यकता सेअधधक कष्ट सहन ककया है। यह स्र्ेच्छापूर्कव अगीकृत ककया कष्ट पूर् वपापों का पररणाम नहींहै। बहुत ददनों से ईसाई धमाचवाय वइस अनन्त दांड-वर्धान के प्रश्न से परेशान हैंतथा उन्होंनेभारी् वर्कास के भलए कई योजनाए ांप्रस्तुत की हैं। 1429 में लो्रेन्स में जो सभा हुई थी, उसने'परगेटरी' का समाधान तनकाला। 'परगेटरी' न तो स्र्ग वहै और न नरक। पुजारी फेरार नेएक बीच की परीक्ष्यमाण त्स्थतत का तनदेश ककया है त्जसमें जीर्ों को पश्चात्ताप करनेका अर्सर भमलेगा। कुछ धम-वशास्रीी पीटर (3, 19; 4, 6 ) के अस्पष्ट र्चनों के आधार पर मृत्यु तथा अत्न्तम न्याय के बीच में एक मध्यमा त्स्थतत को स्र्ीकार करते ेहैं। यद्यवप र्तमवान तथा भारी् जीर्न में अवत्च्छन्न सम्बन्ध माननेर्ाले अनेक हैं पर पूर्जवन्म का समथनव करने र्ाले नहींके बराबर हैं। कुछ समय के बाद पाश्चात्य वर्द्रान् ्भी दहन्दू–धम वके उन मूल्यर्ान् ्अशों को समझेंगे जो अब अनेक अनगलव पौराखणक कथाओ ांमें दब-से गये हैं और त्जनके र्ास्तर्िशः सत्य होनेमें ककसी भी दहन्दू ूका वर्श्र्ास नहींहै।

## 5

भारतीय ईसाई, जो उसी र्ातार्रण में रहते ेहैं त्जसमें दहन्दू ूरहते ेहैं तथा जो भारत के अतीत से सुर्ाभसत हैं, ईश्र्र की सर्व्यापकता सेभरे हैं। उनके भलए इस सदांदग्ध भसद्धान्त को मानना ददन-ददन कदठन होता जा रहा है कक ईश्र्र बडा कठोर है तथा उसमें अलौककक शत्क्त है त्जससे ई अपनी अर्ज्ञा करनेर्ालों को घोर दण्ड देता है, त्जस भसद्धान्त के अनुसार ईसा परमात्मा का भी परमात्मा है जो मनुष्य-जातत की पाप-शात्न्त के भलए शूली पर चढ़ा एर्ांजो मरकर जी उठनेकी चमत्कारी घटना को एक बहुत बडेपैमाने पर दोहरानेर्ाला है, जब ई कफर शान के साथ उस ससांार में अर्तररत होगा त्जसनेपहली बार उसकी अर्हेलना की थी। वर्चारशील, वर्शेर्तः नई पीढ़ी के, भारतीय ईसाई मानते ेहैं कक ईश्र्र सब मनुष्यों में तथा समस्त ससांार में मौजूद है। यद्यवप ईसा ने अपने को इतना पूण वकर भलया था कक अन्य पुरुर्ों की अपेिा उसमें ईश्र्र की अभभव्यत्क्त अधधक सुस्पष्ट हो उठी थी। उनका मत है कक ईसा को जीर्न, त्जसने भगर्ान् ्के उस मगांलमय प्रेम को स्पष्ट कर ददया त्जसे ेपुरानी धम-व पुस्तक में भुला ददया गया था यद्यवप इशाया आददक कुछ महात्मा उससेअनभभज्ञ न थे, ससांार की र्तमवान पररत्स्थतत में वर्शेर् उपयोगी है। रे् वर्श्र्ासपूर्कव आशा करतेहैं कक भद्रता तथा ईसाई धम वसम्मत प्रेम-ईसाई-धम-वभसद्धान्त नहीं-के िभमक प्रसार से पृथ्र्ी पर सत्युग अर्श्य आर्ेगा। उन्हें बहुत बुरा मालूम पडता है जब उनके वर्देशी सहधमी, त्जन्हें परम्परा-प्राप्त तनयमों vec 7 भशधथलता आ जानेके दुष्पररणामों का कोई ज्ञान नहीं, दहन्दुओ ांके अमूल्य भसद्धान्तों, जैसे ेईश्र्र की सर्व्यापकता, अदहसांा, कम वतथा पुनजन्वम के सम्बन्ध में झूठा प्रचार करके उनका उपहास करते ेहैं। आज भारत का ईसाई धम वदहन्दू–भसद्धान्तों से प्रभावर्त हो रहा है। ई दहन्दू–भसद्धान्तों को सुन तथा समझकर उनका अनुकरण कर सकता है अथर्ा उसकी बातों को अनसुनी करके उससेदूरू रह सकता है; परन्तु लिणों सेतो यही प्रतीत होता है कक ई ठीक ही पथ चुन रहा है। ई यह प्रयास कर रहा है कक दहन्दू–धम वके उत्तम भसद्धान्त तथा ईसाई धम avec b अच्छे तवर्ों को भमला ददया जाय और यदद ई

 इसमें सफल होता है तो दहन्दू ूप्रभावर्त ईसाई धम वसे केर्ल भारतर् वका ही लाभ नहींहोगा र्न्

्ससांार का
आध्यात्त्मक जीर्न अधधक समृद्ृध हो जाएगा।

# बौद्ध-धम व

बौद्ध-धम वके सस्ांथापक गौतम बुद्ध की गणना ससांार के महापुरुर्ों में की जाती है। उनके सम्बन्ध में स्र्भार्तः अनेक दन्त-कथाए ांप्रचभलत हो गई हैं और ऐसे लोग भी हैं त्जनका दार्ा है कक उनका समस्त जीर्न जन्म से लेकर मृतूयु तक कल्पना ही है; परन्तु यह तो मानना ही पडेगा कक बुद्ध भोग-वर्लास के र्ातार्रण में जन्म लेनेर्ाले एक राजकुमार थेत्जन्होंने यौर्न में ही ससांार छोडकर एकान्तर्ास अपना भलया था तथा ध्यान एर् ांधचन्तन के द्र्ारा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास ककया था।

ई बौद्धधक सिाीभ का युग था । प्रचारकों की बौद्धधक वर्लिणता एर् ांप्रर्ृवृत्त से उत्पन्न अनेक भसद्धान्तों तथा कल्पनाओ ांसे र्ातार्रण पूण वथा। कुछ उन्हें स्र्ीकार करते ेथे, कुछ उनका प्रततर्ाद करते ेथे।[83]' इस सघांर्ूवण वउत्साह एर्ां वर्रोधी दशनवों को देखकर बुद्ध ने तनश्चय कर भलया कक दाशतवनक गर्ेर्णा व्यथ वहै। उन्होंनेदेखा कक आचरणर्ि्र्ि में कम-वकाांड की सस्ांकार-पद्धतत ने नैततक कतव्वय-पालन का स्थान ले भलया है। धाभमकव िि्े में भी असभ्यता-युग के अन्ध-वर्श्र्ास कफर सेसर उठा रहे थेएर् ांस्र्ाथ-वपरायण पुरुर् अपने दहतसाधन में उनका उपयोग कर रहे थे। बुद्ध ने बताया कक त्रबना पुजाररयों की मध्यस्थता अथर्ा ईश्र्र की चचा व के भी हम मुत्क्कत प्राप्त कर सकते हैं। लोक-कल्याण-साधन अथर्ा शुद्ध आचरण से मिो भमलता है, तनत्श्चत फल पानेर्ाले दुरुग्रहों को माननेअथर्ा िुद्ध देर्ताओां की रोर्-शात्न्त के उद्देश्य से रहस्यपूण वकियाओांके सम्पादन से नही।ां दाशतवनक धचन्तन की ओर से वर्रत्क्कत, धमशवास्ि्में अनास्था तथा नैततक आचरण में अनुरत्क्कत ही बुद्ध के उपदेशों की वर्शेर्ता है।

त्जन चार आयसवत्यों का बुद्ध ने उपदेश ददया है, र्े हैं-दुुःख है, दुुःख का कारण है, दुुःख का तनरोध ककया जा सकता है, दुुःख-तनरृवृत्त का माग वहै। दुुःख का कारण यह है कक ससांार िणभगुांर है। सब पदाथ वअपनेको व्यक्कत करने के प्रयल में सदा लगे रहते ेहैं। इसी उद्भर् एर् ांलय का नाम ससांार है। पदाथ वकी प्रत्येक दशा, ई चाहे एक णि तक रहे और चाहे एक हजार र्,व उद्भर् कहलाती है। बुद्ध न मनोव्यापार को िखणक एर् ांमनभभन्न स्र्ु-जगत् ्को अतनत्य बताकर उसमें भेद ककया है परन्तु परर्ती बौद्ध दाशतवनक समस्त सृतूष्ट को िखणक ही मानते े

[83] ब्रह्मजाल सुत्त देखों

हैं। प्रत्येक व्यापार-श्रृखांला की एक कडी है, वर्कास-प्रर्ाह की एक िखणक दशा है और इस प्रकार की सब कडडया ां भमलकर ही जगत् ्बनता है (धम-वधातु) । र्स्तुए ांतथा आत्माएं पररणाम एर् ांव्यापार कहलाती हैं।

यदद हम व्यापार के स्थान में र्स्तुओ ांअथर्ा पदाथों की चचाव करते ेहैं तो हम अत्स्तवर्हीन पदाथों की चचावकरते ेहैं। द्रव्य तथा गुण, सम्पूण वतथा अर्यर्, कारण तथा पररणाम आददक न्याय-सम्बन्धों के द्र्ारा हम त्स्थर प्रतीत होनेर्ाले वर्श्र् की रचना कर लेतेहैं। ये सम्बन्ध वर्चारजगत के भलए सत्य हैं, र्स्तु जगत् ्के भलए नही।ां रुभार्तः हम र्स्तुओां के आधाररुरूप ककसी तनत्य द्रव्य की कल्पना का गढ़ हुआ होता है। हम कहते ेहैं- रृतूष्ट हो रही है, ककन्तु 'रृतूष्ट' पदाथ वकी सत्ता कहा ांहै? गतत को छोडकर और कुछ भी तो नहीांहै। किया है, परकता व
कही ांनही ांहै। हम तनरन्तर प्रर्ाह को र्स्तुओ ांकी पररर्तनवरदहत एकरूपता समझते ेहैं। भशशु, बालक, युर्क, प्रौढ़
तथा रृ्द्ध एक ही हैं। बीज और रृ्क्ष एक हैं। एक के बाद दूसूरी त्स्थतत इतनी शीघ्रतापूर्कव आ जाती है कक हम उसे े अखडां एकता समझते ेहैं, उसी तरह जैसे ेजलती हुए लकडी को घुमाने से हमें एक अखडां रृतूत का भ्रम होनेलगता है। एक बडी उपयोगी प्रथा के अनुरोध सेहम भभन्न-भभन्न समुदायों को वर्भशष्ट नामों से पुकारने लगतेहैं। नाम की अखडांता के कारण हमें उस नाम से युक्त पदाथ वकी ही अखडता एक समझने का भ्रम होता है। [illegible] के भसद्धान्त के द्र्ारा प्रततपाददत ककया जाता है। र्स्तु तो केर्ल ककसी धम वका नाम है, ककसी कारण अथर्ा दशा की सज्ञांा है। 'उसकी उपत्स्थतत में यह होता है, उसके उत्पन्न होनेपर इसकी उत्पवत्त होती है, उसके अभार् में यह नहीांउत्पन्न हो सकता, उसका अन्त होनेपर इसका भी अन्त हो जाता है।' (मत्ज्झक तनकाय 11, 32) यह 'प्रतीत्य समुत्पाद' को भसद्धान्त अथर्ा सापेि-कारणतार्ाद कहलाता है। पररर्तनव होनेर्ाली ककसी र्स्तु की सत्ता नही ांहै, केर्ल [illegible] श्रृखांला नहीांहै। एक दशा अपनी 'पच्छायशत्क्कत' - सृतूष्ट-शत्क्कत-अपनेपश्चात् ्आनेर्ाली दशा को दे जाती है। अतीत तथा र्तमवान एक सत्न्ध में आबद्ध हो जातेहैं और जब हम प्रकृतत का बदहरांग वर्र्ेचन करते ेहैं तो उसे े'पूर्'व तथा 'पर' की वर्भभन्न त्स्थततयों की एक तनरन्तर परम्परा के नाम से अभभदहत करते ेहैं।

यह प्राण तथा गतत के जीर्न का ससांार एक तनयम के अधीन है। जगत्–व्यापार में इस तनयम की उपत्स्थतत ही सकांट के समय मनुष्य को आशा बधांाती है। इस जगत्–व्यापार का वर्भशष्टरूप कैसा है, इस सम्बन्ध में अनेक मत हैं। अधधकतर लोग उसकी सत्ता से तो नहीांइनकार करते ेपर उसे ेशत्क्कत मानते ेहैं कभी-कभी ऐसेसकोंत भी भमलते हैं, त्जसमें यह र्स्तु-जगत् ्धचत्त का वर्कारमिा बताया गया है। 'चेतना का वर्नाश कर देनेसे इस अशेर् वर्श्र् का अर्सान हो जाता है।' यह जगत् ्अवर्द्याजतनत है, ज्ञानी के भलए उसकी सत्ता नही।ां ससांार के नाना पदाथ वकभी-कभी तनगुणव की अभभव्यत्क्कत समझेजाते ेहैं। जब र्ास्तवर्क ज्ञान उत्पन्न हो जाता है तो सतांश्लष्ट पदाथ वसामप्त हो जाता है, केर्ल मूल तवर् शेर् यह जाते ेहैं। इस अभभव्यत्क्कत के ससांार का वर्र्णन करना बुद्ध को अभीष्ट नहीांथा। उनका उद्देश्य इसके जाल से मुक्कत होने में सहायता देना था। 'जो लोग

 धधकती आग में जल रह हों, उन्हें आग की मीमासांा करनेकी आर्श्यकता नहीां, उन्हें तो येन-केन-प्रकारेण उससे े बच तनकलना है।'

प्रत्येक जीर् एक भमधश्रत द्रव्य है त्जसके घटकार्यन, नाम एर् ांरूप तनत्य बदलते रहते ेहैं। रे्दना, सज्ञां ा, सस्ांकार तथा वज्ञान मन के अांग हैं। रे्दना रागात्मक अांश है, सज्ञां तथा बुद्धध ज्ञान से सम्बत्न्धत हैं एर् ांसस्ांकार चेष्टा से। बुद्धध कभी-कभी जीर् का काम करती है। ककसी तनत्य जीर्न अथर्ा आत्मा का कोई प्रमाण नही ां भमलता। 'जब कोई मनुष्य कहता है 'म'ैं तो उसका सकेंात या तो अर्यर्-समत्ष्ट की ओर होता है या उसमें से ककसी एक की ओर, और इस भातांत उसे ेर्ह 'म'ैं समझकर अपने को धोखा ददया करता है।' (सयुांक्कत तन. 3, 130)। बुद्ध व्यार्हाररक आत्मा के घटकार्यरों की बात करके ही चुप हो जाते ेहैं, रे् तनत्य आत्मा का स्पष्ट वरोध नहीांकरते। नागसेन तनत्य आत्मा को न्याय-वरुद्ध कल्पना कहता है तथा मानर्ात्मा को मनकी एकी करण शत्क्कत के द्र्ारा कत्ल्पत एर् ांजदटल भार् बताता है। त्जस प्रकार अनेक गुणों के सग्रांह का नाम शरीर है उसी प्रकार हमारी समस्त मानभसक दशाओ ांका समुच्चय ही आत्मा कहलाता है।

आत्मा की कल्पना में पुनजन्वम को साथकव बनानेके भलए पयाप्वत स्थान है। व्यत्क्कत असम्बद्ध घटनाओ ां की सर्ांहैर्नर्तुा श्रृह्खलाएक सजीर् तनरन्तरता है। दुबुारा जन्म लेनेर्ाला मनुष्य र्ही मृत मनुष्य नहीांहोता पर र्ह उससेसर्थवा भभन्न भी होता है। न तो रे् पूणतवः एक ही हैं एर् ांन सर्थवा भभन्न । तनरन्तरता भी है तथा उसके साथ ही तनत्य पररर्तनव भी है। हमारा प्रत्येक अनुभर् उस दूसूरे अनुभर् िय अथर्ा दशा की ओर ले जाता है, उससे पररणतत अथर्ा समाप्त हो जाता है, त्जसमें सम्पूण वअजीत सत्न्नदहत रहता है।

## आचरण-र्ास्त्ि था धर् श

जीर्न का लक्ष्य तनर्ाणव प्राप्त करना है। जो कम वइसमें सहायक हैं रे् अच्छे समझे ेजाते ेहैं। बौद्धों का आचरण-शास्िआय वअष्टाधांगक माग वकहलाता है त्जसके आठ अांग ये हैं-सम्यक् दृत्ष्ट, सम्यक् सकांल्प, सम्यक् र्चन, सम्यक् कमान्वत, सम्यक् आजीर्, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृवृत्त एर् ांसम्यक् समाधध । यह मध्यम प्रततपदा अथर्ा मध्यमागीय धम वकहलाता है। इसमें अत्यधधक तप तथा अत्यधधक भोग दोनों का ही पररत्याग करके बीच का रास्ता-मध्य माग-वस्र्ीकृत हुआ है। इसका उद्देश्य मनुष्य के सम्पूण वमानभसक जीर्न को रूपान्तररत कर देना है, बौद्धधक भार्नात्मक एर् ांकियात्यक सभी िोंं को नर्ीनता प्रदान कर देना है।

बुद्ध के समय में र्ग-वव्यर्स्था में काफी अनर्स्था उत्पन्न हो गई थी। उन्होंने ब्राह्मणत्र् को जातत के स्थान में कम वपर-आचरण पर-तनभरव बताकर इस सस्ांथा को काफी दुबुलव बनाया; परन्तु रे् समाज सुधारक नही ां थे। उनका मुख्य उद्देश्य धम वथा। यद्यवप तनयमतः सभी उसमें सत्म्मभलत हो सकते थे ेपरन्तु यथाथतवः उच्च र्णों तक ही उनका धम वसीभमत था। उन्होंने गृह्य-सस्ांकार-पद्धतत में कोई हस्तिेप नहीांककया और रे् र्ैददक पद्धतत के अनुसार बराबर चलते रहे। बुद्ध को आनन्दोपलत्ब्ध के रहस्य का उद्घाटन नहीांकरना था प्रत्युत् र्े लोगों को उस अनुभर् में लगा देना था। तनर्ाणव शब्द का अथ व'बुझना' अथर्ा 'शान्त' होना है। अतः उष्ण र्ासना

के बुझने को, र्ासना, घृणा़ एर् ंअवर्द्या की अत्ग्न के शातां होनेको तनर्ाणव प्राप्त करना कहते ेहैं। 'हमे ेतनर्ाणव को शून्य नैश अन्धकार नहींसमझना चादहए। 'ई तो वर्श्र्ास, शात्न्त, उद्रेगाभार्, आनन्द, सुख, मृदुतुा, पवरि्ता तथा उत्साह से पूण वएक तनत्य जीर्न का नाम है' (भमभलन्द 2, 29)। यमक ने तनर्ाणव को जो वर्नाश बताया था उसे ेअधम वबताकर उसका प्रततर्ाद ककया गया है। (सयुंक्कत तनकाय 3, 103) ज्ञानातीत होनेके कारण तनर्ाणव के स्र्रूप का र्णनव करते ेसमय तनर्ेध-र्ाक्कयों का प्रयोग ककया जाता है।

हमें बुद्ध-धम वको त्रबलकुल नर्ीन, अतीत-आधार-रदहत, मानने की आर्श्यकता नही।ं यह तो उसी वर्चारधारा का बाद का रूप है त्जसका पूर्रूवप उपतनर्दों में प्रततपाददत हुआ है। चरम सत्य, मिो का स्र्रूप तथा आत्मा की तनत्यता आदद प्रश्नों का उत्तर बुद्ध ने नहींददया है। र्े ऐसेवर्र्य हैं त्जन्हें स्थधगत कर ददया गया है तथा त्जन पर वर्चार करने की अनुमतत बुद्ध नहींदेते। मालुक्कय के प्रश्नों का उत्तर देनेसे उन्होंनेयह कहकर इनकार कर ददया कक र्े हम व्यार्हाररक जीर्न में कोई सहायता नहींदेते े(र्च्व प्रश्न भी देखो)। दाशतवनक प्रश्नों पर उनके मौन-साधन के भातांत-भातांत के अथ वलगाये जाते ेहैं। कुछ उनके प्राचीन अनुयायी एर् ंआधुतुनक व्याख्याकार इसे ेतनर्ेधसूचक मानते ेहैं। उनका कहना है कक बुद्ध ककसी भी भौततक अथर्ा समत्ष्ट वर्र्यक चरम सत्ता का अत्स्तवर् नहीं मानते ेथे। इस वर्चार के अनुसार तनर्ाणव शून्य है। कभी-कभी कहा जाता है कक बुद्ध ने इस वर्चार को पल्लवर्त करके इसीभलए लोगों के समि नहींरखा कक इससे कही ंर्े भडक जाय।ें यह वर्चार बुद्ध के दशनव को असम्बद्ध तथा उनके चररि को सन्देहजनक बना देता है। बुद्ध के वर्धध-सूचक कुछ ऐसे े र्चन भी हैं त्जनकी सगांतत इस तनर्ेद मूलक बुद्धधर्ाद से नहींबैठती। शुष्क मत बुद्ध के समकालीन देर्ोपासक मनुष्यों को कैसे ेपसदां आता। दूसूरों का कहना है कक उनका कौन उनके अज्ञान को तछपाये रखने ेका आर्रण है। र्स्तुओ ंकी यथाथतवा का ज्ञान उन्हें नहींथा। यह मत इसभलए असगांत प्रतीत होता है कक बुद्ध का अपना ऐसा दृढ़ वर्श्र्ास था कक मुझे ेसत्य का पता है और उसे ेम ैंदूसूरों तक पहुांचा भी सकता हूां। यह मानना कदठन है कक बुद्ध स्र्य ंअज्ञान में थेऔर अपने अनुयातययों को भी र्े अज्ञान में बनाये रखना चाहते ेथे। कोई भी वर्चारशील व्यत्क्कत चरम प्रश्नों के सम्बन्ध में त्रबना ककसी तनष्कर् वपर पहुांचे नहींरह सकता। यह कहना अधधक युत्क्कतपूण वप्रतीत होता है कक बुद्ध उपतनर्दों से भमलते-जुलते ककसी भार्ात्मक आदश वको मानते ेथेत्जसका प्रचार उन्होंनेकेर्ल इसभलए नहींककया, क्कयोंकक र्े चाहते थे ेकक प्रत्येक पुरुर् उसका आवर्ष्कार अपने अनुभर् से करे। उन्होंने दाशतवनक प्रश्नों को उपेिा की दृत्ष्ट से देखा, क्कयोंकक दाशतवनक वर्तडाां जीर्न के प्रधान लक्ष्य नैततक आचरण में अडचन डालती है। पवरि्ता-प्रात्प्त से उसका कोई सम्बन्ध नहींक्कयोंकक पवरि्ता नैयातयक अथर्ा बौद्धधक न होकर आध्यात्त्मक तथा आभ्यन्तररक होती है। यदद हम इस मत को नहींमानतेतो बुद्धकृत तनर्ाणव के भार्ात्मक र्णनवों तथा पररणामी जगत् ्से परे की तनत्य सत्ता को तनर्ेध करने से दृढ़तापूर्कव इनकार करने की सगांतत नहींबैठ सकती । उनके काशी के उपदेश में एक तनरपेि सत्ता के अत्स्तवर् का स्पष्ट आभास भमलता है। उपतनर्द्-सम्मत मानर्-मत्स्तष्क की पररभमत िमता को ध्यान में रखकर ही बुद्ध ने उसका स्पष्ट भार्ात्मक र्णनव नही ंककया है, परन्तु न्याय की सीमा के भीतर त्जतना सम्भर् है, उन्होंनेउस चरम तवर् को धम वकहकर र्खणतव ककया है। उपतनर्दों में धम वएर् ंसत्य को एक ही माना गया है। चूकांक बुद्ध नैततक आचरण को ही मुख्य

भारत की अन्तरात्मा 72 मानते ेथेअतएर् उन्होंनेउस तनरपेि सत्ता के नैततक स्वरूप पर ही वर्शेर् बल ददया है। उनके उपदेशों में ब्रह्म का
स्थान धम वने ही लेभलया है। (इस प्रश्न पर देखो 'माइांड', 1926, पुष्ठ 158-174)।

# भारतीय दशनव

भारतीय दशनव के समस्त इततहास में मनुष्य के कमिेवि इस सामान्य ससाांर के परे एक अधधक र्ास्तवर्क परम सूक्ष्म ससाांर की-सच्चे आत्मलोक की-कल्पना भारत र्भसयों के मत्स्तष्क में बराबर रही है। जीर्न-समस्या के रहस्योद्घाटन में तथा पशुता से ऊपर उठकर नैततक एर् ांआध्यात्त्मक भशखर पर जा चढ़नेमें मनुष्य त्जस प्रकार सतत प्रयत्नशील रहा है, उसका सुन्दर दृष्टान्त हमें भारतर् वमें भमलता है। हाांचार हजार र् वके-और यदद भसन्ध एर्ां पजांाब की नर्ीनतम खोजों को भी सत्म्मभलत कर लें तो और भी अधधक काल के-मानर्-प्रयास का तनरीिण भली भाताांत ककया जा सकता है। यह अबोध सरल वर्श्र्ास कक ससाांर का शासन सूय व तथा अन्य आकाश-त्स्थत देर्ता करते ेहैं जो ऊपर बैठे-बैठे देखा करते ेहैं कक मनुष्य का आचरण सरल है अथर्ा कुदटल; यह तनत्श्चत भसद्धान्त कक त्जसका ज्ञानमिा मिोदायक है, ई तनवर्कवार, तनत्य शुद्ध परमात्मा तथा मनुष्य-हृदय के अन्तरतम प्रदेश में त्स्थत जीर्ात्मा एक ही है, जडर्ाद, नात्स्तक दशनव, भाग्यर्ाद आदद का प्रादुभार्व; तत्पश्चात् ्जैन तथा बौद्ध नैततक सम्प्रदाय त्जनका भसद्धान्त है कक ईश्र्र की सत्ता मानो चाहे न मानो केर्ल मनसा र्ाचा कमणवा शुद्ध रहकर तनर्ाणव-लाभ ककया जा सकता है; श्रीमद्भगर्द्गीता का उदार ईश्र्रर्ाद जो ब्रह्म में दाशतवनक पूणतवा के साथ-साथ पूण वनैततकता का भी समार्ेश करता है; नैयातयकों की तकव-वर्द्या त्जसके द्र्ारा शेर् जगत के उन मुख्य 'पदाथों' का ज्ञान होता है त्जनका व्यर्हार शास्त्रीयि वर्र्ेचन में अब तक होता है। र्ैशेवर्कों का प्रकृतत-वर्र्ेचेन; साख्यांय का र्ैज्ञैातनक एर् ांमनोर्ैज्ञातनक वर्चार-वर्मश;व योग का वर्भूतत-सम्पादन-माग;व मीमासांा के नैततक तथा सामात्जक वर्धध-तनर्ेध; शकांर, रामानुज, माधर्, तनम्बाकव, र्ल्लभ एर् ांजीर् गोस्र्ामी के धाभमकव- व्याख्यान-ये सब मानर् इततहास में दाशतवनक वर्कास के सधांचत उत्कृष्ट उपकरण हैं। मत के बाद मत, सम्प्रदाय के बाद सम्प्रदाय न्यायिम से आता गया। भारतीय जीर्न तनरन्तर गततशील रहा; जैसे–जैसेउसमें वर्कास होता गया उसका स्र्रूप भौततक, सामात्जक एर् ांसास्ांकृततक पररत्स्थततयों के अनुसार बराबर पररर्ततवत होता रहा। शुरू-शुरू में प्राचीन भारतर्ासी प्रत्येक ििे में सर्प्रवथम प्रयास कर रहे थे। उन्हें अतीतोपात्जतव ज्ञान का सहारा प्रायः त्रबलकुल ही नहीांथा। उनको कुछ घोर कदठनाइयों का सामना भी करना था जो आज हमारे सामनेहैं ही नही।ां इतना होनेपर भी वर्चार एर्ां व्यर्हार के ििे में उन्होंने बहुत कुछ ककया है। पर चि पूरा नहीांहुआ, सभी सम्भावर्त रूप समाप्त नहीांहो सके, समस्या उलझी-की उलझी ही बनी है। दशनव अभी तक अपने शैशर् में ही पडा है, उसेपार नहीांकर पाया।

अन्य दशनवों की भाताांत भारतीय दशनव की आलोचना से वर्श्र् की रहस्यमयता एर् ांअनन्तता का तथा उसका सम्यक् ज्ञान प्राप्त करनेके भलए मनुष्य के आग्रहपूण वमनोरम प्रयत्न का पररचय भमलता है। अगखणत

तवर्दशी पडांडतों ने मानर्-ज्ञान-मत्न्दर के थोडे ेबहुत भाग को, सतत अपूण वमानर्-ज्ञान के ककसी नूतन खण्ड को, तनभमतव ककया है; ककन्तु मनुष्य की गम्भीर मीमासांा उस लक्ष्य तक न पहुांच सकी त्जसे ई न तो पूणतवः प्राप्त ही कर सकता है और न छोड ही सकता है। उत्तराधधकारी में अतीत से पाई दटमदटमाती हुई ज्ञान-ज्योतत की तमोतनर्ारणशत्क्कत की रै्सी तीव्र अनुभूतत हमें नहीांहै जैसी चतुददवक् प्रसररत घोर अन्धकार की गहनता की है। दाशतवनकों के इतनेप्रयत्नों के पश्चात् ्भी चरम लक्ष्य से आज हम उतनी ही दूरू हैं त्जतनी दूरू युगों पहले ेथे-त्जतनी दूरू जब तक हम मनुष्य हैं प्रामीधधस की भातांत रहस्य-पर्तव में शान्त-मत्स्तष्क की सुदृढ़ डोरी से बधें ा े रहकर सदा ही रहेंगे।'[84] दाशतवनक मीमासांा, कफर भी व्यथ वनहीांहै। उसकी सहायता से हम अपनेबन्धनों को महसूस कर सकते हैं, बाधांनेर्ाली जजीरों की झनकार सुन सकते हैं। उससे हमें मानर्-दुबुलवताओ ांका बडा तीव्र ज्ञान हो जाता है और इस प्रकार अपनी पूणतवा का अनुभर् होता है तथा इस नश्र्र जीर्न की अपूणतवा सर्तवोभारे्न स्पष्ट हो जाती है। यदद यह ससाांर हमारी बुद्धध के भलए उतना ही सरल तथा स्पष्ट नहीांहै त्जतना हम चाहते हैं तो इसमें आश्चय वही क्कया है! दाशतवनक तो ज्ञान का प्रेमीमिा होता है, स्र्ामी नही।ां यिाा के अन्त का वर्शेर् महवर् नही ांहै, यिाा ही सब कुछ है। पररभ्रमण में जो आनन्द है ई यिाा समाप्त हो जाने पर कहा ांभमल सकता है?

क्र्कतव्य तनश्शेर् हो जानेपर अब हम त्जज्ञासा कर सकते ेहैं कक क्कया इततहास का ज्ञान वर्कास का, उन्नतत का, समथनव करता है? मानर् वर्चारधारा आगे ेकी ओर, वर्कास की ओर बढ़ रही है अथर्ा पीछे की ओर जा रही है। पररणाम चचांल अथर्ा अथहवीन नहीांहै। भारतर् ववर्कास में वर्श्र्ास रखता है क्कयोंकक, जैसा हम पहले े कह चुके हैं, भभन्न-भभन्न युगों में नैसधगकव सम्बन्ध है। अवत्च्छेन्नता का आभ्यन्तररक सूि कभी टूटा नहीांहै। रे्तिांतया ांभी जो अतीत भी काल प्रतीत होती हैं, उसमें पुनः प्राण-प्रततष्ठा ही करती है, उसे ेऔर भी गतत देती है। त्जन्हें हम अर्नतत के युग कहा करते ेहैं र्े स्र्तुतः इस देश के तनकट अतीत की भातांत पुराने जीर्न से नर्ीन की ओर आनेके पररर्तनव काल होते ेहैं। अर्नतत तथा उन्नतत की युगल धाराए ांएक ही में भमल जाती हैं। कभी तो उन्नतत की ओर ले जाने र्ाली शत्क्कतया ांबडेरे्ग से आगेको बढ़ती नजर आती हैं, कभी गतत अतनत्श्चत दशा में अर्रुद्ध-सी प्रतीत होती है और कभी परार्तनव की शत्क्कतयाांवर्कास शत्क्कतयों को परात्जत करके पीछे ही ओर जाती ददखाई देती हैं, पर सब भमलाकर देखने ेसे मालूम होगा कक गतत आगे ेकी की ओर हुई हैं इससे इनकार करना ठीक नही ांहोगा कक इस पद्धतत में बहुत कुछ वर्नष्ट हो गया, ककांतु अतीत के इततहास ने त्जस माग वको चुन भलया उस पर त्रबगडनेअथर्ा आसूां बहानेके समान व्यथतवा कदाधचत् ्ही कही ांभमले। कुछ हो दूसूरा पररणाम यदद होता तो बुरा होता। अधधक महवर् की स्र्तु तो भवर्ष्य है। हम अपनेपूर्जवों से ज्यादा दूरू तक देख सकते ह;ैं क्कयोंकक हम उनके कांधों पर चढ़ सकते हैं। अतीत में जो श्रेष्ठ नीर्ां डाल दी गई है, उससे हमें सन्तुष्ट नहीांहो जाना

[84] जेनो फेनस का कथन है-'देर्ताओां तथा त्जसेहम सार्लवौककक प्रकृतत कहते ेहैं, उसके सम्बन्ध में पूण वतनश्चय के साथ कोई कुछ नहीांजान सका है और न आगेही जान सकेगा। यदद दैर्ात् ्कोई सत्य तक पहुांच भी गया तो उसे ेतथ्य का ज्ञान नहीां होगा; क्कयोंकक सब कुछ माया से ेआच्छाददत है।' (Gomperiz Greek : Thinkers, Vol. I. page 164)

चादहए र्रन् ्हमें तो उससे अधधक भव्य प्रासाद को तनमाणव करना चादहए जो अतीत प्रयास तथा नूतन दृत्ष्टकोण, दोनों में सामजांस्य स्थावपत कर सके।

## सब दर्नशों की एकिा

परम्परा-भत्क्कत तथा सत्य-प्रेम, ये दो बातें भारतीय दाशतवनकों के समस्त प्रयत्नों में ककसी-न-ककसी रूप में अर्श्य पाई जाती है। प्रत्येक दाशतवनक यह समझता है कक उसके पूर्जवों के भसद्धान्त ही ई भशलाय ेहैं त्जनसे े आध्यात्त्मक प्रासाद तनभमतव हुआ है, उनकी तनन्दा अपनी ही ससं्कृतत की तनन्दा है। एक उन्नततशील जातत, त्जसकी अपनी सम्पन्न ससं्कृतत है, उस ससं्कृतत की अर्हेलना कभी नही ांकर सकती, भले ही उस ससं्कृतत के कुछ अ ांग ऐसे ेहों जो श्लाघ्य न कह जा सकें। ये दाशतवनक बडे पररश्रम से प्राचीन सम्प्रदाय को समझाने का प्रयास करते ेहैं, उसमें लिाखणकता खोज तनकालते ेहैं, उसेपरर्ततव एर् ांपररशोधधत भी करते ेहैं; क्कयोंकक ई लोकभार्नाओ ांका केन्द्र बन चुका है। परर्ती भारतीय आचाय वपूर्गवामी दाशतवनकों के वर्र्् के सम्बन्ध में तनत्श्चत ककए हुए वर्वर्ध भसद्धान्तों का समथनव करते ेहैं और उन सबको सत्य का भभन्न-भभन्न मिाा में ददग्दशकव मानते ेहैं। यह नहीं माना जाता कक वर्भभन्न सम्प्रदाय यथाथतवः एक अज्ञात प्रदेश में मानर्-मत्स्तष्क के असम्बद्ध अभभयान अथर्ा दाशतवनक वर्धचिताओ ांका सग्रांह है। र्े सब उस एक ही मत्स्तष्क से तनकले माने जाते ेहैं त्जसनेइस महान् ्मदांदर का तनमाणव ककया है, यद्यवप उस मत्न्दर में अनेक दीर्ालें, अनेक देहभलयाां, अनेक माग वऔर खम्भे ेहैं।

न्याय तथा वर्ज्ञान में, दशनव तथा धम वमें प्राकृततक सम्बन्ध है। वर्चारों की उन्नतत का प्रत्येक नूतन युग न्याय के सुधार सेही प्रारम्भ होता है। पद्धतत की समस्या का वर्शेर् मूल्य है क्कयोंकक इसमें मानर्-वर्चारों की प्रकृतत का खास ज्ञान सत्न्नदहत है। न्याय-दशनव हमें यह बताता है कक कोई भी धचरस्थायी दशनव त्रबना तकव-शास्् के आधार के नहींबन सकता। र्ैशेवर्क चेतार्नी देता है कक प्रत्येक सफल दशनव के भलए भौततक प्रकृतत की रचना-प्रणाली का ज्ञान तनतान्त अपेक्षित है। हम हर्ाई ककला नहींबना सकते। यद्यवप दशनव तथा भौततक वर्ज्ञान दो भभन्न-भभन्न शास्् हैं जो कभी एक नहींहो सकते,े कफर भी दाशतवनक योजना को प्रकृतत-वर्ज्ञान के तनष्कर्ों से सामजांस्यता रखनी होगी। ककन्तु जो बातें भौततक जगत् ्के सम्बन्ध में सत्य हैं, उन्हें यदद हम अधधक व्यापक मानकर सम्पूण ववर्श्् पर आरोवपत कर दें तो हम र्ैज्ञातनक दशनव का प्रचार करने के दोर्ी ठहराये जायगें। साख्ांया-शास्् इस खतरे से बचनेके भलए हमें सार्धान करता है। प्रकृतत की समस्त शत्क्कतयाांचेतना के उत्पादन में असमथ वहैं। र्ैज्ञातनक तथा मनोर्ैज्ञातनक दाशतवनक की भाततां प्रकृतत अथर्ा चेतनता को हम एक-दूसूरे के रूप से परर्ततव नहींकर सकते। सत्य का दशनव हमें वर्ज्ञान तथा मानर्-जीर्न में ही नहींभमलता र्रन् ् धाभमकव अनुभूतत में भी भमलता है और यह अनुभूतत ही योग-दशनव का वर्र्य है। पूर् वमीमासाां और र्ेदाताां आचरण तथा धम वपर वर्शेर् जोर देते ेहैं। बाह्य प्रकृतत तथा मानर्-मत्स्तष्क का सम्बन्ध-ज्ञान ही र्ेदान्त-दशनव का महवर्पूण ववर्र्य है। जो कहा गया था कक ऋवर् लोग एक-दूसूरे का वर्रोध नहींकरते,े ई दशनवों के सम्बन्ध में भी सच है। न्याय-र्ैशेवर्क यथाथर्वाद, साख्ांय-योग द्र्ैतर्ाद तथा र्ेदान्त के अद्र्ैतर्ाद में सत्य एर् ांअसत्य का

नहीं, कम सत्य एर् ांअधधक सत्य का अन्तर है।'[85] रे् तो िमशः मन्दाधधकारी, मध्यमाधधकारी एर् ांउत्तमाधधकारी की आर्श्यकताओ ांकी पूतत वके उद्देश्य से तनभमतव हुए ह।ैं एक ही मूल पार्ाण को काटां-छाांट कर वर्भभन्न

सम्प्रदायों का है,तनमावण मूलाधार एक, भेदरदहत, पूण वएर्ां अन्य अपिेा-रदहत है।

वश्र्र्सम्बन्धी कोई भी ज्ञान तब तक पूण वनहीांहो सकता जब तक उसमें न्याय तथा भौततक वर्ज्ञान, मनोवर्ज्ञान तथा नीततशास्ि दशनव तथा धम वके वर्भभन्न पहलू नहीांहैं। त्जतने दाशतवनक सम्प्रदायों का जन्म भारत में हुआ है, उनमें से प्रत्येक अपना स्र्ताांि तवर्-मीमाांसा-शास्ि, प्रकृतत तथा आत्मा का सम्बन्ध-तनदेश एर् ांनीतत धम-वशास्ि का वर्धान ककया है। प्राकृततक वर्ज्ञान की सराांतत में जगत्–सम्बन्धी हमारा ज्ञान बहुत उन्नतत कर चुका है और अब हम जीर्न के ककसी सीभमत दृत्ष्टकोण से ही सन्तुष्ट नहीांहो सकते। भवर्ष्य में जो दाशतवनक प्रयास ककये जायगें; े उनको मनोवर्ज्ञान एर् ांप्रकृतत वर्ज्ञान के नर्ीनतम अनुसन्धानों से सम्बन्ध स्थावपत करनेकी जरूरत होगी।

## जीर्न िथा दर्नश

दशनव का काम जीर्न को व्यर्त्स्थत करना तथा उसे ेमागप्रवदभशतव करना है। दशनव जीर्न के नेतृत्र् को ग्रहण कर सांसार के अनेक परर्तनवों एर् ांपररत्स्थततयों में से होकर रास्ता ददखाता है। जब तक दशनव जीवर्त रहता है, र्ह लोक-जीर्न सेदूर नहीांजाता। दाशतवनकों के वर्चार उनकी व्यत्क्तगत जीर्न-चया वसे ही वर्कभसत होते ेहैं हमें उसके प्रतत केर्ल श्रद्धा ही नहीांरखना है प्रत्युत उस भार्ना की प्रात्प्त भी करनी है। र्भशष्ठ तथा वर्श्र्ाभमि, याज्ञर्ल्क्य तथा गागी, बुद्ध तथा महार्ीर, गौतम तथा कणाद, कवपल तथा पतञ्जभल, र्ादरायण और जैभमतन केर्ल इततहासकारों के वर्र्यमाि- ('जब हम दो वर्द्र्ानों के वर्चारों में समन्र्य करके सत्य का दशनव कर लेते हैं-और एक-दूसरे का प्रत्याख्यान करते ेरहनेपर भी ऐसा कभी नही ांहोता कक भभन्न-भभन्न वर्चारों के भीतर प्रच्छन्न एक ही सत्य का दशनव रे् न कर सके-तो हम मानर्-बुद्धध के गौरर्पूण वपद की रिा करतेहैं।' र्ाड-व'काण्ट का अध्ययन' में उद्धृत, पृष्ठ 11, नोट 1) नहीां हैं, रे् व्यत्क्तत्र् के भभन्न-भभन्न प्रकार भी हैं। उनके भलए दशनव, वर्चारों तथा अनुभर् पर आधाररत सांसार-सम्बन्धी एक दृत्ष्टकोण है। भली भाांतत मनन ककए हुए वर्चार ही जीर्नरूपी सर्ोच्च परीिा में व्यर्हृत एर्ांपरीक्षित होकर धम वबन जाते ेहैं। दशनव का अभ्यास धमाचवरण की पूतत वकरना भी तो है।

## ननकट िर्ी रे् दर्नश की अर्नति

इस पुस्तक में त्जस साक्ष्य का सांग्रह ककया गया है, उससेतो इस बात की पुत्ष्ट नही ांहोती कक भारतीय मत्स्तष्क वर्चार करने सेघबराता है। भारतीय वर्चारों की सम्पूण वउन्नतत को केर्ल यह कहकर नहीांउडाया जा

---

[85] माधर्ा  - 'सर्दवशनव सांग्रह', मधुसूदन सरस्र्ती '  प्रस्थानभेद', वर्ज्ञान भभिु - 'साांख्य प्रर्चन भाष्य' । काण्ट से तुलना कीत्जये।

सकता कक भारतीय मत्स्तष्क इतना तकव-प्रेमी अथर्‌ा सशक्कत नहीांहै कक ई भद्दी कल्पना तथा मूखतवापूण वदेर्‌-कथाओांसे ऊपर उठ सके; ककन्तु कफर भी वपछली तीन-चार शतात्ब्दयों के दाशतवनक इततहास में प्रचुर मिाा में ऐसी सामग्री पाई जाती है त्जससे यह अिौप बहुुत कुछ भसद्ध होता-सा प्रतीत होता है। अब भारत ने एभशया'[86] खडां में उच्च ज्ञान के नेतृतूर्‌ का महवर्पूण वकाय वकरना छोड ददया है। कुछ लोग यह सोचनेलगे हैं कक जो ज्ञानसररता शतात्ब्दयों से वर्चाररूपी जल सेभरी पूण वरे्ग के साथ प्रर्‌ादहत हो रही थी, कदाधचत्‌ ्अरुद्ध होकर अशुद्ध गन्दे जल में ही अब समाप्त होने को है। दाशतवनक अथर्‌ा कहना चादहए कक इस अर्नतत-काल के दशनवलेखक अपने को सत्य का भक्कत त्तो कहते ेहैं पर सत्य से उनका तात्पय वकेर्ल भमथ्या र्‌ाक्कछल अथर्‌ा ककसी वर्भशष्ट सम्प्रदाय के अबाध्य भसद्धान्तों में बाल की खाल तनकालने मिा से है। इन तकवव्यर्सातययों का वर्श्र्‌ास है कक उनके पाश्र्‌ वमें त्स्थतत छोटा-सा झरना ही बालुका िि में लुप्त हो जाने र्‌ाली अथर्‌ा कुहासे के रूप में उड जानेर्‌ाली हस्र्‌-काय कुल्या ही-भारतीय दशनव की वर्शाल सररता है।

इस तनष्कर्‌ वपर पहुुांचने के अनेक कारण हैं। मुसलमानों का साम्राज्य स्थावपत हो जानेसे जो राजनीततक पररर्तनव हुुए, उनके फलस्र्रूप लोग कुछ रूदढ़र्‌ादी तथा अनुदार हो गये उस युग में, जब व्यत्क्कतगत गौरर्‌ तथा भसद्धान्तों के प्रचार से प्राचीन समाज-व्यर्स्था तथा स्थायी वर्चार धारा में अराजकता फैल रही थी, ककसी सर्मवान्य प्रमाखणक तनयिांण की वर्शेर्‌ आर्श्यकता थी। मुत्स्लम वर्जय तथा इस्लाम के प्रचार और तदुपुरातां ईसाई धम वके प्रचार ने दहन्दू–ूसमाज की नीर्‌ां ही दहला दी और अत्स्थरता की इस गम्भीर चेतना से युक्कत युग में स्र्भार्तः तनयामक सत्ता ही ई सुदृढ़ भशला बनी, त्जसपर समाज के रर्ण तथा आचरण की पवरि्ता का तनमाणव ककया जा सकता था। इस सास्ांकृततक सघांर्‌ वमें रूदढ़यों की शरण में जाकर दहन्दुओुां ने अपनेको सबल बनाया तथा आिमण करनेर्‌ालेवर्चारों को उन्होंनेअपने पास ही नहीांफटकनेददया। उसके समाज ने तकव से वर्श्र्‌ास खोकर तथा बहस से ऊबकर अपने को पूणरूवप सेउस तनयामक सत्ता के अधीन कर ददया त्जसने शकाां को ही पाप घोवर्त कर ददया। तभी से ई अपनेआदश वका सच्चा भक्कत नहीांरहा। उसमें सच्चे दाशतवनकों का अभार्‌ हो गया, बच रहे केर्ल कुछ पडांडत जो नर्ीनता का ततरस्कार करके पुराने राग अलापने में लग गये। कुछ शतात्ब्दयों तक र्‌े इस कत्ल्पत चरम भसद्धान्त में अपने को धोखा देते ेरहे। रचनात्मक शत्क्कत का हास हो जानेसे लोग दशनव के इततहास को ही दशनव समझने लगे। भारतीय दशनव स्र्कतव्वय पराङमुख होकर प्रर्ांना में ही पडा

---

[86] प्रोफेसर लागां काई चो नेचीन के प्रतत भारत के ऋण को इस प्रकार व्यक्कत ककया है- 'भारत ने हमें पूण वस्र्‌ाधीनता का पाठ पढ़ाया है, उस आधारभूत मानभसक स्र्तांिता का पाठ पढ़ाया है त्जससे हमारा मत्स्तष्क परम्परा, आदत तथा र्तमवान युग की रीततयों में दासता-पाश को तोडने में सफल हो सकता है-ई आध्यात्त्मक स्र्तांिता जो भौततक जीर्न के समस्त बन्धनों को काट देती है।.... भारत नेहमें तनरपिे प्रेम भी भसखाया है, प्राणी-मिा के भलए ई पवरि्‌ स्नेह त्जसके कारण ईष्याव, द्र्ेर्‌, घृणा़, अधैय वतथा स्पधाव की नीच र्‌ृत्त्तयों का वर्नाश होता है, जो मूख,व दुष्ुट तथा पावपयों के प्रतत भी दया एर्‌ ांसमर्‌ेदना जागृत्‌ ् करता है-ई तनरपिे प्रेम जो प्राखणमिा में अद्रैत दृत्ष्ट रखनेकी भशिा देता है।' इसके बाद उन्होंने समझाया है कक चीन के सादहत्य एर्‌ ांकला को, सगीत एर्‌ ांभशल्प को, धचिकला तथा मूततवद्या को, नाटक, कवर्ता आख्यातयका को, ज्योततर्‌ तथा आयुर्‌ेद शास्ि को भशिा-पद्धतत एर्‌ ांसमाज-व्यर्स्था को क्कया-क्कया भमला है। देखो िैमाभसक वर्श्र्‌ भारती, अक्कटूबर, 1924।

ब्रह्मा तथा लकां ा पर, जापान तथा कोररया पर जो भारत का प्रभार्‌ पडा ई तो सर्वर्ददत ही है।

 रहा। जनसाधारण के वर्चारों की अभभभार्कता तथा पथ-प्रदशनव से दूरू हटकर उसने अपनेऊपर बहुत बडा
अत्याचार ककया। बहुतों का वर्श्र्ास हो गया कक उनकी जातत ने त्जस लक्ष्य की प्रात्प्त के भलए एक दीघकवालीन लम्बी यािा की थी, र्ह उन्हें आखखर प्राप्त हो गया है। रे्थक-से गये और उनकी इच्छा होनेलगी कक अब वर्श्राम ककया जाय। रे् लोग भी, जो समझते ेथेकक रे् लक्ष्य तक अभी नहींपहुांच पाये हैं और त्जन्हें भवर्ष्य में काफी वर्स्तृत िेि अब भी चलने को बाकी ददखाई पडता था, अज्ञात पथ से तथा उसकी कदठनाइयों से भयभीत थे।े दुबुलव हृदय के व्यत्क्कतयों की चुप्पी तथा अनन्तता के सम्बन्ध में शकांा करना खतरे से खाली नहींहै। अनन्त की गर्ेर्णा एक ऐसा चक्ककर है त्जससे ेबचनेका प्रयास बडे- बडेशत्क्कत-सम्पन्न व्यत्क्कत भी यथासम्भर् ककया करते े हैं। मनुष्य की बडी-से- बडी शत्क्कत में भी उत्साहहीनता के िण आते ेहैंऔर इन तीन-चार शताब्दयों में दाशतवनक प्रेरणा पर भी उत्साहहीनता अथर्ा अकमण्वयता का आिमण हो गया था।

## र्र्तमान स्स्थनत

आज ससांार के बडे-बडेधमों तथा वर्चार-धाराओां को भारतर्र् वमें सत्म्मलन हो गया है। पाश्चात्य वर्चारों के सम्पकव सेवपछले ेयुग के आत्मसतीर् में कुछ िोभ उत्पन्न हो गया है। एक भभन्न ससां्कृतत को स्र्ीकार कर लेनेका एक फल यह हुआ है कक लोगों की यह धारणा बन गई है कक चरम प्रश्नों का कोई आधधकाररक समाधान नहीं हो सकता। परम्परा-प्राप्त समाधानों में वर्श्र्ास नहींरहा और ककसी हद तक वर्चारों में कुछ अधधक स्र्तांिता एर् ांअधधक पररर्तनवशीलता को प्रश्रय भमल गया है। प्रथाए ांकफर तरल हो गई हैं और यद्यवप कुछ लोग प्राचीन नीर्ां पर ही पुनतनमवाणव करना चाहते ेहैं पर कुछ ऐसेहैं जो उस नीर्ां को ही हटा देने के पि में हैं। यह पररर्तनवकालीन युग काफी मनोरांजन तथा धचन्तापूण वहै।

तनकट अतीत में भारतर्र् ववर्श्र् की वर्चारधाराओां के मुख्य प्रर्ाह से दूरू एक सुरक्षित कोनेमें पडा था, पर आज तो शेर् ससांार के साथ सम्बन्धहीनता की र्ह दशा नहींरही है। आज के तीन-चार सौ र्र् वबाद के इततहासकार को भारत तथा योरोप के पारस्पररक आदान-प्रदान के सम्बन्ध में बहुत कुछ भलखना होगा, पर अभी तो र्ह सब अप्रकट ही है। जहा ांतक भारतर्र् वका सम्बन्ध है, हमें लोगों की प्रर्ृवत्त जाग उठी है तथा अकेली सैद्धात्न्तक धचन्तन से लोगों को अरुधच उत्पन्न हो गई है।

ककन्तु इस धचि का एक दूसूरा पि भी है। किया की ही तरह वर्चारों के िेि में भी अत्यधधक बन्धन एर् ां पूण वअनर्स्था, दोनों ही मनुष्य की आत्मा को पतन की ओर ले जाती है। जहा ांतक ससां्कृतत तथा सभ्यता का सम्बन्ध है, दोनों समान ही ह।ैं हो सकता है कक अराजकता में भौततक कष्ट, आधथकव त्स्थरता तथा सामात्जक खतरा हो और बन्धन में भौततक कष्ट, आधथकव बरबादी तथा सामात्जक शात्न्त हो, पर सभ्यता को आधथकव सम्पन्नता अथर्ा सामात्जक अर्स्था की र्रि समझ लेना भारी भूल होगी। कई पीदढ़यों तक सार्जवतनक कलह तथा व्यत्क्कतगत कष्ट झेलकर भारतर्र् वने अग्रोंजों के आगमन को जो स्र्ण-वयुग समझकर स्र्ागत ककया था, उसका समझना कुछ कदठन नहींहै, पर भारत की र्तमवान भार्ना को सहानुभूततपूर्कव समझना भी उतना ही

सरल है। मनुष्य की आत्मा सुख ही नहीं, आनन्द की भूखी है; उसे ेशात्न्त एर् ांसुव्यस्र्था नहीं, जीर्न तथा स्र्ाधीनता चादहए; उसे ेआधथकव त्स्थरता अथर्ा न्यायपूण वशासन की चाह नहींप्रत्युत् ्असख्ांय दुःख-कष्ट उठाकर भी अपनी मुत्क्कत के माग वको स्र्य ांप्रशस्त करनेका अधधकार चादहए। राजनीतत स्र्तांता के अभार् में गैरराजनीततक गुणों का भी उधचत वर्कास नहींहो पाता। अग्रोंजी के शासन hat 7 भारत को शात्न्त एर् ांसुरिा अर्श्य प्रदान की है पर ई तो कोई चरम साध्य नहींहै। यदद हम र्स्तुओांका ठीक-ठीक मूल्य आकांना चाहते हैं तो हमें मानना ही पडेगा कक आधथकव त्स्थरता तथा राजनीततक सुरिा मूल्यर्ान् ्एर् ांआर्श्यक होनेपर भी आध्यात्मक स्र्तांता है। आध्यात्त्मक उद्देश्य की त्रबलकुल धचन्ता न करने र्ाला तनरांकुश शासन, ई ककतना ही भला एर्ांउदार क्कयों न हो, शाभसत प्रजा में स्फूतत वका सचाांर नहींकर सकता और इसभलए उस प्रजा से ककसी प्रबल प्रततकिया की आशा नही ांकी जा सकती। जब जीर्न-तनझरव सूख रहा हो, जब सहस्रों र् वसे चलेआनेर्ाले आदश,व चेतना का प्रकाश, शत्क्कत का स्र्तांत्र उपयोग, जीर्नर्िीडा, जीर्न का सुख तथा शात्न्त की पूणतवा (प्राणारामम्,् मनानन्दम्,् शात्न्त समृद्धम) आदद नष्ट हो रहे हों तो कोई आश्चय वनहीं यदद भारतर्ासी अपना बोझ और भी बढ़ा हुआ अनुभर् करें, उसे ेहलका होते ेन पाय।ें उससेत्रब्रटेन के काय वकी महत्ता की चचा वकरना व्यथ व है क्कयोंकक उस काय वके आध्यात्त्मक महर्त्र् पर इततहास अपना तनणयव दे चुका है। यदद आधुतनक नेता अतीत की प्रततध्र्तनमिा बनकर ही सन्तुष्ट हो गये हैं, अपनी ओर से कुछ कहने का प्रयास उन्होंनेनहींककया, यदद र्े बौद्धधक मध्यस्थ ही बने रहे मौभलक दाशतवनक नहींबन सके तो इस तनष्फलता अथर्ा ध्र्ांयवर् में पाश्चात्य सभ्यता की ठेस तथा गुलामी की लज्जा का भी कुछ कम हाथ नहींहै। भारत की र्तमवान मनोर्ृत्त के गम्भीर कारणों से उसे ेआप हलचल, वर्द्रोह अथर्ा ललकार आदद ककसी भी नाम से क्कयों न पुकारें, अग्रोंज भली भाततां पररधचत है। उन्होंनेप्रयास ककया कक अपनी सभ्यता को स्र्भार्तः र्े उच्चतर समझतेहैं, भारतीयों तक पहुांचा दें और र्े चाहते थे ेकक भशिा एर् ांज्ञान-प्रचार के इस काय वमें, जो अच्छा ही है, र्े त्रबना ककसी सकाोच अथर्ा बाधा के लगेरहें। पर भारत को इस सास्ांकृततक शासन से कोई सहानुभूतत नही।ां ई अपनी सम्पूण वशत्क्कत से उन प्राचीन प्रथाओ ांसे धचपटा हुआ है, त्जन्होंने उसे ेकाम, िोध तथा र्ासनाओांके र्ेग को दमन करने में सहायता दी है। जो उसके अतीत से पररधचत है, र्ही उसके इस अध्यात्म-मत्न्दर में रहने की ममता को समझ सकेगा क्कयोंकक 'सभी अपने-अपने घर के स्र्ामी हैं' (सर्:व स्र्े-स्र्े ेगृहे राजा)। इस आभ्यन्तररक स्र्तांता में अडचन डालने र्ाली राजनीततक पराधीनता उसे घोर अपमान प्रतीत होती है। स्र्राज्य की मागां तो इस अध्यात्म-देश की रिा-सम्बन्धी धचन्ता का ही केर्ल बाह्य प्रकाशन है।

कफर भी भवर्ष्य आशापूण वहै। यदद भारतर् वआन्तररक स्र्राज्य पा जाय तो पाश्चात्य वर्चारधारा से भारतीय मत्स्तष्क को बहुत सहायता भमल सकती है। भारतीय शास्त्रिों नै सस्ांकृतत के सम्बन्ध में ककसी 'मनरोभसद्धान्त को जन्म नहींददया। उस प्राचीन काल में भी, जब भारत अपनेसमाज की आर्श्यकता-पूतत वके भलए पयाप्वत आध्यात्त्मक सोजन उत्पन्न करता था, ऐसा कोई युग नहींपाया जाता जब ई दूसूरों के कल्पना-र्ैभर्ि की उत्पवत्त को उत्सुकतापूर्कव ग्रहण करने को तैयार न रहा हो। अपनेसमृद्ध युग में भारत उन एथेन्स-तनर्ाभसयों के ज्ञान को मानकर चलता रहा, त्जनके वर्र्य में पेरीक्कलीज का कथन है- 'हम अन्य लोगों के मतों को बडी प्रसन्नता के साथ सुनते हैंऔर त्जनका मत हमसे नहीं भमलता, हम उनसे ेदूरू नहीं भागते ।' बाह्य प्रभार्ों का

भय हमें उसी अनुपात में होता है त्जस अनुपात में हममें आत्म-वर्श्र्ासहीनता अथर्ा दुबुलवता होती है। यह सच है कक आज हमारे चेहरे पर शोक-रेखाएं हैं तथा बुढ़ापे के कारण हमारे बाल कुछ पक गये-से ददखाई देते ेहैं। हममें जो वर्चारशील हैं रे् कुछ धचन्ताग्रस्त हैं, कुछ तो तनराशार्ादी हो गये हैं और इसभलए वर्चार िि में रे् एकान्तर्ासी सन्ांयासी बन गये हैं। पाश्चात्य सस्ांकृतत से जो असहयोग चल रहा है र्ह तो अस्र्ाभावर्क पररत्स्थततयों के कारण उत्पन्न हो जानेर्ाली एक ऐसी त्स्थतत है जो अधधक समय तक दटकने र्ाली नही।ां उसके रहते ेभी पाश्चात्य-भार्ना को समझनेतथा उसे प्रशसांा की दृत्ष्ट से देखनेका प्रयास हो ही रहा है। यदद भारत ने पाश्चात्य सस्ांकृतत के बहुमूल्य अांश को ग्रहण कर भलया तो र्ह अतीत में की गई उसी प्रकार की अनेक कियाओां की पुनरार्ृत्त-मिा होगी।

त्जन लोगों को पाश्चात्य प्रभार् ने स्पश वनहीांककया है, रे् अधधकाशां में ऐसेलोग हैं त्जन्हें अपनी बौद्धधक अथर्ा चाररत्रिक वर्भशष्टता का गर् वहै, जो राजनीतत सेत्रबलकुल उदासीन हैं तथा वर्श्र्ासपूण वआशा के नहीां, भवर्तव्यतार्लम्बन तथा ममवर्वर्सजनव के भक्कत हैं। उनका ख्याल है कक उन्हें न कुछ सीखना है और न कुछ भूलना है; रे् तो अतीत के शाश्र्त धम वकी ओर ही अपनी दृत्ष्ट रखकर कतव्वय का पालन करते ेजा रहे हैं। उन्हें मालूम है कक दूसूरी शत्क्कतयाां भी काम कर रही हैं त्जन्हें रोकने अथर्ा तनयत्रांति करने की शत्क्कत उनमें नहीांहै और उनकी सम्मतत है कक हमें जीर्न की कदठनाइयों एर्ां भ्रात्न्त तनमोचन का मुकाबला शात्न्तपूर्कव तथा आत्मगौरर् के साथ करना चादहए। यह र्ग वअपनेउन्नतत-काल में अधधक गततशील था और बराबर प्रयास ककया करता था कक बुद्धधर्ाद तथा धम वका सामजां स्य स्थावपत कर लेना चादहए। इसनेसदा ही धम वकी सयुांत्क्कतक व्याख्या करके नात्स्तकों से उसकी रिा की है तथा धाभमकव वर्र्ेचना में इसनेरूपक पद्धतत को ही अपना साधन बनाया है। इस र्ग वके भलए धम वका वर्र्य मनुष्य की सम्पूण वप्रकृतत है, उसमें बुद्धध के साथ ही मनुष्य की व्यार्हाररक तथा रागात्मक र्ृवृत्तयों का भी समार्ेश होता है। यदद प्राचीन वर्द्या के र्तमवान प्रततततनधधयों में अतीत की स्फूतत वभी होती तो अन्य शत्क्कतयों के साथ असहयोग करनेकी अपेिा उन्होंने स्र्तन्िता तथा मौभलकता के साथ प्राचीन वर्द्या से उत्तराधधकारी में पाई शत्क्कत के द्र्ारा एक नर्ीन योजना की सृत्ष्ट की होती। पर उनकी तो वर्चारों अथर्ा किया के सम्बन्ध में, लौककक अथर्ा आध्यात्त्मक सम्बन्ध में, प्रमाण में, तनयम में अत्यधधक श्रद्धा है और इसभलए रे् प्रगततवर्रोध तथा मानभसक दासता के दोर्ी बन गए हैं। मुसलमानों के आनेसे पहले ेभी हम प्रमाण चाहते जरूर थे; ककन्तु उस मयादवानुसरण में बौद्धधक स्र्तन्िता का अपहरण नहीांथा और यद्यवप लोग अपनेमनोनुकूल शास्ि की आज्ञा के पालन के समथनव में युत्क्कतया ांदेनेको सदा तैयार रहते ेथे, र्ह शास्ि चाहे र्ेद हो चाहे आगम और यद्यवप युत्क्कतपूण वकाट-छाांट तथा दाशतवनक वर्र्ेचना के द्र्ारा रे् शास्ि को सदा ही तकवयुक्कत भसद्ध कर ददया करते ेथे, पर आज की शास्िभत्क्कत तो मानर्ात्मा के भलए कारागार बन गई है। धमशवास्ि की ककसी बात पर भी शकां ा करने का यह अथ वभलया जाता है कक हम अपनेमहान् ्पूर्जवों के अर्ाध्य हो रहे हैं। उन्हें चुपचाप मान लेना उसमें अपनी भत्क्कत का पररचय देना समझा जाता है। त्जज्ञासा तथा शकांा को प्राचीन ग्रन्थों का उद्धरण देकर दबा ददया जाता है, र्ैज्ञातनक सत्य को असम्मान की दृत्ष्ट से देखा जाता है यदद र्ह येन केन प्रकारेण प्रचभलत वर्र्ास को ही अांग नहीांबनाया जा सकता। अकमण्वयता, वर्रोधहीनता तथा शासन स्र्ीकृतत ही बौद्धधक सद्गुण समझी जाती है। अतः कोई आश्चय वकी बात नहीांयदद आज का दाशतवनक सादहत्य अतीत के

 श्रे्रेष्ठ काय वकी तुलना में बहुुत हीन श्रे्रेणी को है। यदद वर्चार को इतना अधधक श्रम न करना पडता तो तनश्चय ही
ई कही ांअधधक वर्शद होता है।

बुद्धध अथऱ्ा वर्रे्क में श्रद्धा भारतीय दाशतवनकों की पैतृक सम्पवत्त है। प्राचीन ऋवर् अनुकरण नहीं, सृजृन पसन्द करते ेथे। सत्य के भलए तनत्य नर्ीन वर्जय प्राप्त करने को रे् सदा उत्सुक रहते ेथेतथा सतत पररर्तनवशील अतएर् धचर नर्ीन जीर्न-रहस्यों के उद्घाटन में रे् तनत्य तत्पर रहतेथे। उत्तराधधकारी में प्राप्त की हुुई वर्चार-राभश की वर्पुलता ने कभी उन्हें मानभसक दासता में नहींबाधां पाया। हम पुराने समाधानों की सीधी-सीधी नकल कभी नहीं कर सकते, क्कयोंकक इततहास कभी पुनरारूवृत्त नहींकरता। अपनेयुग में उन्होंनेजो ककया था, आज उसके दुहुराने की कोई आर्श्यकता नही।ां हमें अपनी आखों खोल रखने की जरूरत है, अपनी समस्याओ ांका पता लगाना है और उनके हल करने में अतीत से उते्तेजना अथऱ्ा प्रेरणा प्राप्त करनी है। सत्य की भार्ना ककसी बाह्य रूप से धचपटी नहींरहती र्न् ्रह तो उसे ेबराबर बदलती रहती है। पुराने शब्दों का भी प्रयोग नये ढांग से ककया जाता है। र्तमवान युग के ही भलए उपयुक्कत भसद्ध हो सकता है, अतीत के भलए नही।ां उनका रूप तथा वर्र्य उतना ही मौभलक होगा त्जतना कक ई जीर्न त्जसकी वर्रे्चना में यह सलांग्न है। चूकांक र्तमवान अतीत से सम्बद्ध है; अतः अतीत सेसम्बन्ध-वच्छेदन कभी नहींहोगा।

रूदढ़र्ाददयों की एक युत्क्कत यह भी है कक सत्य पर युग का प्रभार् नहींपडता। सत्य का स्थान कभी दूसूरा नहींग्रहण कर सकता, रै्से ही जैसे ेअस्तोन्मुख सूय वअथर्ा माता के र्ात्सल्य प्रेम की पूतत वककसी दूसूरी र्स्तु से नहींकी जा सकती। सत्य शाश्र्त हो सकता है पर उसकी अभभव्यत्क्कत त्जस रूप में होती है, उसमें पररर्तनव सम्भर् है। हम आत्मा तो अतीत सेलेसकते हैं, क्कयोंकक आरत्म्भक भसद्धान्त अब भी तनतान्त आर्श्यक है, पर शरीर तथा प्राण र्तमवान से ही लेनेहोंगे। हम भूल जाते ेहैं कक त्जस रूप में धम वआज हमारे सामनेहै, ई स्र्य ां अनेक पररर्तनवों से युक्कत युगों का पररणाम है; और कोई र्जह नहींकक उसके रूपों में आर्श्यकता पडनेपर भवर्ष्य में पररर्तनव न हो। यह सम्भर् है कक हम शब्द को मानकर चलते ेरहें और कफर उसकी समस्त भार्ना को त्रबगाड दें। यदद दो हजार र्् वपहले ेके दहन्दू–्नेता, त्जनमें पात्ण्डत्य आज के नेताओांसे कम होनेपर भी उनसे ेज्ञान अधधक था, आज भी हमारे बीच आ जाए ांतो रे् उन पत्ण्डतों को कभी अपना अनुयायी न स्र्ीकार करेंगे,े उनके जो कथनों के विराथ वसे रत्ती भर भी नहींडगेहैं'[87] आज बहुुत कांकड-पत्थर इकट्ठा हो गए हैं जो आत्म-सररता के स्र्तन्् जीर्न में बाधा बनकर उसे ेसुखाये दे रहे हैं। यही कहना कक सत्यरदहत, प्राणहीन रूदढ़यों को भी उनकी प्राचीनता तथा श्रद्धास्पदता के कारण हम स्पश वनहींकर सकते, उस रोगी की कष्ट की अर्धध को बढ़ाना मिा है जो अतीत के कलुवर्त वर्् से पीडडत हैं। अनुदार व्यत्क्कतयों को पररर्तनविम बनना होगा। चूकांक अभी तक लोग

---

87 'यदद उपतनर्द् बुद्ध अथर्ा महाकाव्य काल का प्राचीन भारतर्ासी आधुतनक भारत में • आ पडे तो ई यह अनुभर् करेगा कक उसके जातत के लोग अतीत के बाह्य रूपों, तछलकों तथा चीथडों से तो धचपटे हैं पर उनके उच्च आदश वके 90 प्रततशत को भुला बैठे हैं। ...... ई हमारे बौद्धधक दाररद्रय को, हमारी गततहीनता को, पररर्तनवहीन लीक पीटने को, वर्ज्ञान के गततरोध को, कला के न्र्ध्यत्र् को; अपिेाकृत ांरचनात्मक स्फूतत वकी दुबुलवता को. देखकर आश्चयचवककत हो जाएगा। ,

-अरवर्न्द घोर्, आय,व 5 प्रा . 424

 इतनेउदार नहीांहो पाये हैं, अतएर् हमें दशनव के ि‍ि मेें तीक्ष्ण प्रततभा एर् ांअतात्वर्क अस्त-व्यस्तता का
वर्लिण भमश्रण ददखाई पडता है। वर्चारशील भारतर्ाभसयों को अपना पूण वशत्क्कत का उपयोग तो इन प्रश्नों को हल करने में करना चादहए कक अपनेप्राचीन आदश वको अस्थायी झाड-झखांाड से ककस प्रकार दूरू रखें, ककस प्रकार धम वतथा वर्ज्ञान में सामजांस्य स्थावपत करें, रुभार् एर् ांव्यत्क्कतत्र् के अधधकारों को ककस प्रकार समझायेंऔर प्राचीन आदश वके आधार पर वर्भभन्न प्रभार्ों को ककस प्रकार व्यत्स्थत करें। ककन्तु हमारे दुभुाग्वय से कुछ पररर्दें इन समस्याओ ांके सुलझाने में नहीांप्रत्युत् ्पुराण-र्स्तु-पत्ण्डतों के समाज के उपयुक्कत गर्ेर्णा में सलांग्न हैं। र्ह तो वर्शेज्ञों की युद्ध-भूभम बन गया है। देश की धाभमकव भशिा का आयोजन उदार दृत्ष्ट से नहीांहो रहा है। लोगों की समझ में नही ांआता कक हमारी आध्यात्त्मक बपौती पर भाग्य के कततपय लाडलों का एकाधधकार कैसे े हो सकता ? वर्चार तो शत्क्कतयाां हैं और यदद हमें र्तमवान रूदूधार्स्था-जतनत मृतूयु से उनकी रिा करना इष्ट है तो उनका प्रसार सभी ओर करना होगा। यह नहीांहो सकता कक उपतनर्द्, गीता एर् ांबुद्ध का प्रचलन, जो मानर्-मत्स्तष्क में इतनेउच्चादशों का सचांार कर देते ेथे, अब अपनी शत्क्कत को खो चुके हों। यदद समय तनकल जाने से पहले ेहम अपनेजातीय जीर्न को कफर सेसगांदठत कर सके तो भारतीय दशनव का भवर्ष्य उज्ज्र्ल है; कौन कह सकता है कक इन शत्क्कतशाली र्ृिों में अब भी कैसे–कैसे ेफूल खखल सकते ेहैं, कैसे–कैसे ेफल पक सकते हैं!

यद्यवप र्े लोग, जो पाश्चात्य सस्ांकृतत से त्रबलकुल ही अछूतेहैं, वर्चार एर् ांकिया के प्रत्येक ि‍ि मेें रूदढ़र्ादी बने हुए हैं; ककन्तु पाश्चात्य वर्चारधारा में दीक्षित कुछ ऐसेभी लोग हैं जो प्राकृततक बुद्धधर्ाद के नैराश्यपूण वदशनव को मानकर हमें अतीत के भार से मुक्कत होनेका सत्परामश वदेते ेहैं। ये लोग परम्परा, असदहष्णु ु एर् ांअतीत के तथाकधथत ज्ञान में शकांालु हैं। 'प्रगततर्ाददयों' की यह मनोर्ृवृत्त आसानी से समझ में आ जाती है। भारत की आध्यात्त्मक बपौती ने आिमणकाररयों तथा लूटरों से उसकी रिा नहीांकी। ऐसा मालूम होता है कक उसनेभारत को धोखा ददया और उसे ेर्तमवान पराधीनता के चगुांल में फांसा ददया। ये देशभक्कत राष्रों की भौततक सफलता का अनुकरण करना चाहते हैं त्जससे ेपाश्चात्य देशों से प्राप्त नर्ीनता को स्थान ददया जा सके। अभी कल तक भारतीय वर्श्र्वर्द्यालयों में भारतीय दशनव पाठ्य-वर्र्यों में इसका बहुत ही तनम्न स्थान है। हमारी भशिा का सम्पूण वर्ातार्रण ही भारतीय सस्ांकृतत की हीनता के सकोंतों से पूण वहै। मैकाले ने त्जस नीतत का उद्घाटन ककया था, उसका सास्ांकृततक महवर् कुछ भी क्कयों न हो, र्ह एकागांी अर्श्य है। जहा ांसदा सजग रहकर र्ह हमें पाश्चात्य सस्ांकृतत की शत्क्कत एर् ांमहत्ता को एक िण के भलए भी भूलने नहीांदेती, र्हाांदूसरी ओर उसने हममें अपनी सस्ांकृतत में अनुराग एर् ांआर्श्यकतानुसार उसमें सस्ांकार कर लेनेकी प्रर्ृवृत्त नहीांउत्पन्न की। ककसी-ककसी पि में तो मैकाले की अभभलार्ा त्रबल्कुल पूण वहो गई है और ऐसेभशक्षित भारतर्ासी हैं जो मैकालेके ही सुप्रभसद्ध शब्दों में 'अग्रेंजी सेभी बढ़कर अग्रेंजे' हैं। रुभार्तः इनमें से कुछ लोग भारतीय दाशतवनक इततहास के महवर्-तनधारवण में प्रततकूल वर्देशी आलोचकों का ही अनुकरण करते ेहैं। र्े भारत के, दाशतवनक वर्कास को मूखतवा एर् ांअन्धवर्श्र्ास से पूण ववर्चारों का नीरस वर्रोधाभ‍ास समझते ेहैं। उनमें से एक सज्जन ने अभी हाल ही में घोवर्त ककया था कक यदद भारत को उन्नतत करना है तो उसे ेचादहए कक र्ह इांग्लडैं को अपनी आध्यात्त्मक जननी तथा ग्रीस को आध्यात्त्मक मातामही बनार्े। चूकांक धम वके प्रतत आपकी श्रद्धा नहीांहै, अतः उन्होंनेदहन्दू– धम वको ईसाई धम वमें पररर्ततव कर देनेका प्रस्तार् अर्श्य नहीांककया है। आधुतनक युग के भ्रान्त-तनमोधचत एर् ां

 पराजय के भशकार इन लोगों का कहना है कक भारतीय दशनव में अनुराग रखना यदद भमथ्या

आत्म-गौरर् की

प्रर्चांना नहींहै तो कम-से-कम राष्ट्रीय भार्नाजतनत दोर् तो अर्श्य है।

आश्चय वका वर्र्य है कक जब पत्श्चम के लोगों ने भारत को हास्यजनक समझना बन्द कर ददया है तो उसी की सन्तान ने उसे ेवर्धचि समझना आरम्भ कर ददया है। पत्श्चम ने भरपूर कोभशश की कक ई भारत को इस बात का वर्श्र्ास ददला दे कक उसका दशनव मूखतवापूण,व उसकी कला बच्चों का खखलर्ाड, उसका काव्य प्रततभारदहत, उसका धम वहास्यास्पद तथा उसका आचरण-शास्ि बबरव है। अब जब पत्श्चम यह अनुभर् कर रहा है कक उसका वर्चार सर्थवा सत्य नहींहै तो हममें से कुछ लोग जोर देकर यह कह रहे हैं कक यह वर्चार पूणरूवप से ठीक है। यह सच है कक जागृत् ्वर्चारों के इस युग में लोगों को ससं्कृतत की ककसी पूर् वअर्स्था में बलपूर्कव ले जाकर सन्देह के खतरे तथा तकव की िभकाररणी शत्क्कत से बचाये नहींरखा जा सकता, पर हमें यह भी न भूल जाना चादहए कक आचरण, जीर्न तथा नीतत के ककसी सर्थवा नर्ीन रूप के तनमाणव करने की अपेिा पहले ेसे पडी हुई नीर्ं पर ही तनमाणव करने में अधधक सौकय वहै। अपने जीर्न-स्रोत से त्रबलकुल सम्बन्ध-वर्च्छेद कर लेना हमारे भलए सम्भर् नही।ां रेखागखणत के धचिों के वर्परीत, हमारी दाशतवनक योजनाओ ांका प्रादुभार्व तो जीर्न-सघांर् वमें होता है। हमारी ऐततहाभसक परम्परा ही ई भोजन है त्जसेत्यागकर हम शून्यता के, मृत्यु के मुख में जा पडगें।

अनुदार र्ग वके लोगों का तनत्श्चत मत है कक हमारी प्राचीन ससं्कृतत महान् ्है एर् ांआधुतनक ससं्कृतत ईश्र्र-वर्रोधी है; उग्र पररर्तनवर्ाददयों का उतना ही तनत्श्चत भसद्धान्त है कक प्राचीन परम्परा त्रबलकुल तनरथकव है तथा प्राकृततक बुद्धधर्ाद ही केर्ल एक माग वहै। इन मतों के समथनव में बहुत कुछ कहा जा सकता है; ककन्तु यदद हम भारतीय दशनव के इततहास को ठीक-ठीक समझने का उद्योग करें तो हमें मालूम होगा कक ये दोनों ही सामान्य से ि्दटपूण वहैं। जो भारतीय ससं्कृतत को तनरथकव बताकर उसकी तनन्दा करते ेहैं, र्े उसे ेजानते ेही नही ां और जो उसे ेपूण वबताकर उसकी प्रशसंा करते ेहैं, उन्हें ककसी अन्य ससं्कृतत का ज्ञान नही।ां िात्न्तर्ाददयों तथा रूदढ़र्ाददयों को, जो नूतन आशा एर् ांप्राचीन ज्ञान के प्रतीक हैं, पारस्पररक सम्पकव में आना होगा एर् ांएक-दूसूरे को समझना होगा। ऐसे ससांर में, जहा ांर्ायुयान तथा जलपोत, रेल तथा तार लोगों को एकता के सूि में बाधं रहे हैं, हम अन्य असम्बन्ध से त्रबलकुल रदहत होकर नहींरह सकते। हमारे दाशतवनक वर्चार ससांर की प्रगतत को प्रभावर्त अर्श्य ही करेंगे। पोखरों की ही भातंत गततहीन दाशतवनक धाराओंमें भी अर्ातंछत घास-फूस उग आती है पर बहनेर्ाली सररताय ेंसदा ही अभभनर् तनझरवों से उत्साहरूपी तनमलव जल प्राप्त ककया करती हैं। अन्य लोगों की ससं्कृतत को आत्मसात् ्कर लेनेमें कोई बुराई नहींहै; हां, त्जस र्स्तु को हम ग्रहण करें उसे ेशुद्ध एर् ांपररष्कृत करके अपनी श्रेष्ठ र्स्तु में त्रबलकुल भमला दें। बाहर से आकर राष्ट्रीय कडाही में धगरकर एकाएक होनेके ठीक ढांग का तनदेश महात्मा गाधंी, रर्ीन्द्र नाथ ठाकुर, अरवर्न्द घोर् तथा श्री भगर्ानदासजी के लेखों में पाया जाता है। इनमें अपने उज्ज्र्ल भवर्ष्य की िीण प्रकाश-रेखा ददखाई देती है, शुष्क पाडंडत्य पर वर्जय एर् ांमहान् ्ससं्कृतत के दशनव कर लेनेके धचन्ह ददखाई देते ेहैं। यद्यवप अतीत भारत के लोक-कल्याण की भार्ना से र्े प्रभावर्त हैं पर पाश्चात्य वर्चारों को भी उन्होंनेभली भातंत समझा एर्ंअपनाया है। र्े प्राचीन मूलस्रोत को कफर तनकालने के

 भलए उत्सुक हैं त्जससे ेवर्शुद्ध, तनमलव प्रणाभलयों के द्र्ारा प्यासी भूभम का भसचांन ककया जा सके; परन्तु त्जस भवर्ष्य को देखने ेको हम वर्कल हैं, अभी तो उसकी सत्ता का आभास भी कही ांनहीांभमलता। बहुत सम्भर् है कक उस राजनीततक उते्तेजना के मन्द पडनेपर, त्जसने भारत के अनेक श्रे्ष्ठ वर्द्र्ानों को अपने में ही तल्लीन कर रखा है, तथा नर्ीन वर्श्र्वर्द्यालयों में भारतीय वर्चारधाराओां के अध्ययन पर अधधकाधधक जोर देनेके फलस्र्रूप (पुराने वर्श्र्वर्द्यालय इस काय वको बडी अन्यमनस्कता से कर रहे हैं) नर् प्रभात का उदय हो। रूदढ़र्ादी शत्क्कतया, ां त्जन्हें भवर्ष्य सेबढ़कर अतीत की ममता है, आनेर्ालेयुग में वर्शेर् प्रभार्शाली नहीांरह सकेंगी।

आज भारतीय दशनव के सामने एक महवर्पूण वप्रश्न आ गया है। उसे ेयह तनश्चय करना है कक यह दशनव एक सीभमत वस्तर्ार का र्तमवान जीर्न-पररत्स्थततयों से एकान्त असम्बद्ध छोटा-सा सम्प्रदायमिा बना ददया जाय अथर्ा उसे ेर्ास्तवर्क जीर्न सेसम्पन्न कर ददया जाय त्जससे ेर्ह अपनेसच्चे स्र्रूप को प्राप्त कर सके, भारत के प्राचीन आदशों में सुर्धधतव आधुतनक वर्ज्ञान का समार्ेश करके उसे ेमानर्-प्रगतत का एक महवर्पूण व साधन बना दें? लिणों से तो यही प्रतीत होता है कक भवर्ष्य में दूसूरा माग वही स्र्ीकृत होगा। प्राचीन दाशतवनक सम्प्रदायों के प्रतत हमारी भत्क्कत एर् ांदाशतवनक लक्ष्य का अनुरोध है कक हमारा दृत्ष्टकोण बहुत उदार होना चादहए। र्तमवान काल में भारतीय दशकव की साथकवता इसीमें है कक र्ह जीर्न को उन्नत एर् ांमहान् ्बना सके। भारतीय दाशतवनक वर्कास की वर्गत धारा हमारे हृदय में आशा का सचाांर करती है। याज्ञर्ल्क्क्य तथा गागी, बुद्ध तथा महार्ीर, रामानुज तथा माधर्, शंकर एर् ांअनेक अन्य दाशतवनक भारत के अत्स्तवर् को बनाये रखनेके भलए अकाट्य प्रमाण हैं, उसके सम्मान्य जीवर्त राष्ट्र होने के स्पष्ट प्रमाण है, इस बात का प्रमाण है कक अब भी उठकर र्ह इस महती सम्भार्ना को यथाथ वबना सकता है।